PERFECT 7

FORTNIGHTLY CURRENT AFFAIRS

अप्रैल 2022 / Issue -1

जम्मू- कश्मीर में घटित हिंसा तथा नरसंहार के आयाम

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध तथा शांति

भारतीय समाज में वृद्धजनों के समक्ष बढ़ती समस्याएं

पर्यावरण संरक्षण तथा आर्थिक विकास को को संतुलित करने में प्रौद्योगिकी की भूमिका

भारत में साम्प्रदायिकता की समस्या

एग्रीटेक : भारत में फार्मिंग (एफएएएस) को सेवा के रूप में सक्षम करता

उत्तर-पूर्व के लिए अंतर्देशीय-जल परिवहन प्रणाली को पुनर्जीवित करना

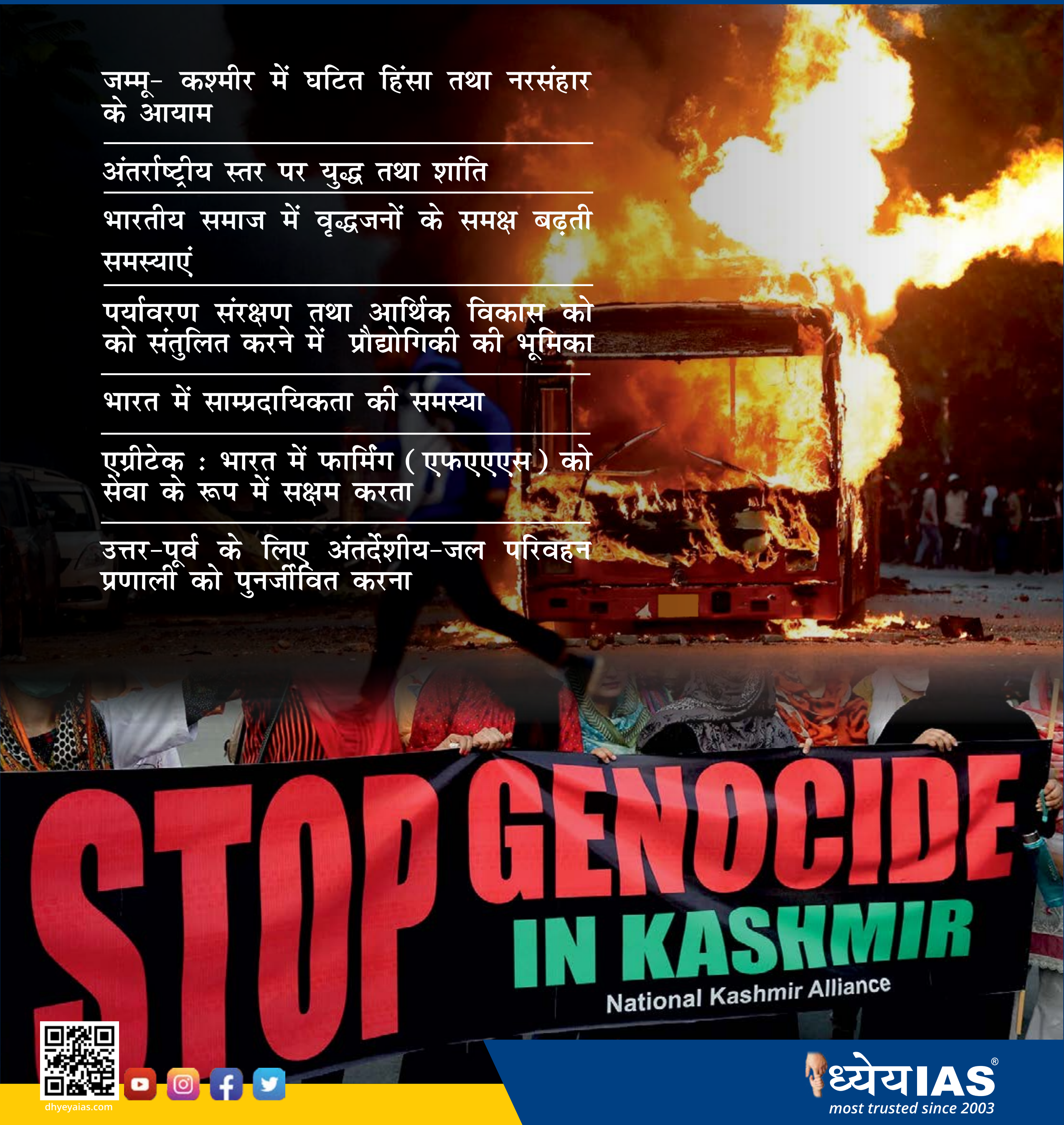

dhyeyaias.com

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

OFFLINE & ONLINE

IAS PRELIMS FINISHER TEST SERIES 2022

(BILINGUAL)

Starts From

10th April 2022

TOTAL TESTS : 11 (6 GS + 4 CSAT + 1 Full Current Affairs)

Fee Structure

(All fees are inclusive of GST)

Offline

For Dhyeya Students	For Non Dhyeya Students
Rs. 2,400/- *Who took admission on or after 1st April 2019* **Rs. 4,200/-** *Who took admission before 1st April 2019*	**Rs. 6,000/-**

Online

For Dhyeya Students	For Non Dhyeya Students
Rs. 2,000/-	**Rs. 4,200/-**

Test	Date	Timing	Content
TEST-1	10 APRIL, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jan. to Mar. 2021)
TEST-2	10 APRIL, 2022	2:30 PM - 4:30 PM	CSAT
TEST-3	17 APRIL, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Apr. to Jun. 2021)
TEST-4	24 APRIL, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jul. to Sep. 2021)
TEST-5	24 APRIL, 2022	2:30 PM - 4:30 PM	CSAT
TEST-6	1 May, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Oct. to Dec. 2021)
TEST-7	8 May, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jan. to Mar. 2022)
TEST-8	8 May, 2022	2:30 PM - 4:30 PM	CSAT
TEST-9	15 May, 2022	12 NOON -2 PM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Apr. to May. 2022)
TEST-10	15 May, 2022	2:30 PM - 4:30 PM	CSAT
TEST-11	22 May, 2022	12 NOON -2 PM	FULL CURRENT AFFAIRS TEST (Jan. 2022- May 2022)

Call : 9205274741 / 42
www.dhyeyaias.com

OUR FACE TO FACE CENTRES

Prayagraj: 0532-2260189, 8853467068 | **Delhi (Mukherjee Nagar):** 9289580074,75 | **Delhi (Laxmi Nagar):** 9205212500, 9205962002 | **Greater Noida:** 9205336037, 38 | **Lucknow (Aliganj):** 0522-4025825, 9506256789 | **Lucknow (Gomti Nagar):** 7234000501, 7234000502 | **Kanpur:** 7887003962, 7897003962 | **Gorakhpur:** 7080847474 | **Bhubaneswar:** 9818244644, 7656949029

ध्येय IAS
most trusted since 2003

Director's Message

Mr. Vinay Kumar Singh

हम इस मंत्र में विश्वास रखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है; प्रत्येक व्यक्ति निपुण है एवं प्रत्येक व्यक्ति में असीमित क्षमता है। ध्येय IAS हमेशा से आत्मप्रेरणादायक मार्गदर्शन को प्रोत्साहित करता रहा है जिससे कि छात्रों के भीतर ज्ञान का सृजन हो सके। शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य ज्ञान के सृजन, प्रसार एवं अनुप्रयोग को एकीकृत रूप में पिरोकर एक सह-क्रियाशील प्रभाव उत्पन्न करना है। ध्येय IAS हमेशा से ही छात्रों के भीतर मानवीय मूल्यों एवं सत्यनिष्ठा को विकसित करने का पक्षधर रहा है जिससे कि उनमें निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो और वे एक ऐसी परिस्थिति का सृजन करें जो न सिर्फ उनके लिए बल्कि समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए भी बेहतर हो। ध्येय IAS नये और प्रभावशाली तरीकों से अपने इस मिशन को पूरा करने के लिए प्रत्येक छात्र को हर प्रयास में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। इसके लिए हम निरंतर और निर्बाध रूप से अपने अध्ययन कार्यक्रम और शिक्षण पद्धति में परिवर्तन एवं परिमार्जन करते रहते हैं।

सिविल सेवा परीक्षा का पाठ्यक्रम प्रतियोगी छात्रों में केवल ज्ञान के प्रति जुनून ही नहीं उत्पन्न करता है बल्कि यथार्थ जीवन में उसका प्रयोग भी सिखाता है। ध्येय IAS प्रतियोगी छात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करता है। साथ ही उनमें ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों का भी सृजन करता है।

Yours very truly,

Vinay Kumar Singh
CEO and Founder

Mr Q H Khan

ध्येय IAS एक ऐसा संस्थान है जिसका लक्ष्य हमेशा से ही छात्रों के समग्र विकास का रहा है। हमारे संस्थान के शिक्षक अपने-अपने विषय के विशेषज्ञ होते हैं जिससे कि छात्रों को प्रत्येक विषय में अधिकतम मदद प्राप्त हो सके। यह एक ऐसा बहुमुखी संस्थान है जहां छात्रों को उच्चस्तरीय कक्षाओं और समृद्धशाली अध्ययन सामग्री के साथ-साथ हरसंभव सहायता उपलब्ध करायी जाती है।

आज ध्येय IAS सिविल सेवा परीक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी पहचान रखता है, क्योंकि हम उच्चस्तरीय एवं गुणवत्तापूर्ण प्रदर्शन में विश्वास रखते हैं। हम छात्रों को ज्ञान की परिधि बढ़ाने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करते रहते हैं ताकि वे पाठ्यक्रम के दायरे से सदैव दो कदम आगे रहें। हमारा मुख्य उद्देश्य छात्रों को उनकी आन्तरिक क्षमता का बोध कराना होता है जिससे कि वे अपनी एक अलग पहचान बनाकर कल के समाज का कीर्तिमान बन सकें।

Yours very truly,

Q H Khan
Managing Director

ध्येय IAS®
most trusted since 2003

UP-PCS PRELIMS KNOCK OUT TEST SERIES 2022

OFFLINE & ONLINE

(BILINGUAL)

Starts From

10th April 2022

TOTAL TESTS : 11 (9 GS + 1 CSAT + 1 Full Current Affairs)

Fee Structure

(All fees are inclusive of GST)

Offline

For Dhyeya Students
Rs. 1,400/- *Who took admission on or after 1st April 2019*
Rs. 2,500/- *Who took admission before 1st April 2019*

For Non Dhyeya Students
Rs. 3,500/-

Online

For Dhyeya Students
Rs. 1,200/-

For Non Dhyeya Students
Rs. 2,500/-

Test	Date	Timing	Syllabus
TEST-1	10 APRIL, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jan. to Apr. 2021)
TEST-2	17 APRIL, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (May. to Jul. 2021)
TEST-3	24 APRIL, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Aug. to Oct. 2021)
TEST-4	01 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Nov. 2021 to Jan. 2022)
TEST-5	08 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Feb. 2022 to Mar. 2022)
TEST-6	15 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Apr. 2022 to May 2022)
TEST-7	22 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jul. 2021 to Dec. 2021)
TEST-8 & 9	29 MAY, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Jan. to Mar. 2022)
		12:00 NOON - 2:00 PM	CSAT
TEST-10 & 11	05 JUNE, 2022	9:30 AM - 11:30 AM	ALL SECTIONS OF GS + CURRENT AFFAIRS (Apr. 2022 to May 2022)
		12:00 NOON - 2:00 PM	FULL CURRENT AFFAIRS TEST (July 2021- MAY 2022)

Call : 9205274741 / 42
www.dhyeyaias.com

OUR FACE TO FACE CENTRES

Prayagraj: 0532-2260189, 8853467068 | **Delhi (Mukherjee Nagar):** 9289580074,75 | **Delhi (Laxmi Nagar):** 9205212500, 9205962002 | **Greater Noida:** 9205336037, 38 | **Lucknow (Aliganj):** 0522-4025825, 9506256789 | **Lucknow (Gomti Nagar):** 7234000501, 7234000502 | **Kanpur:** 7887003962, 7897003962 | **Gorakhpur:** 7080847474 | **Bhubaneswar:** 9818244644, 7656949029

प्रस्तावना

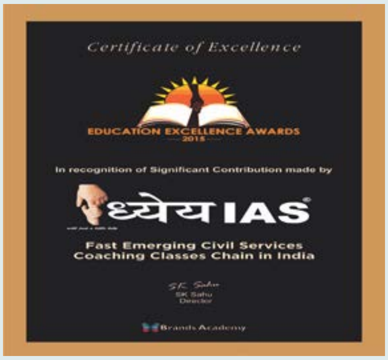

समसामयिक मुद्दे अथवा करेंट अफेयर्स संघ लोक सेवा आयोग और राज्य लोक सेवा आयोगों द्वारा आयोजित परीक्षाओं में अति महत्वपूर्ण स्थान रखता है. राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर प्रासंगिक सूचनाओं से जुड़ाव होना अभ्यर्थियों के लिए काफी जरूरी समझा गया है और इसी जरूरत को पूरा करने के लिए परफेक्ट 7 मैगजीन को विद्यार्थी जगत के समक्ष माह में दो बार रखा जा रहा है. आईएस और पीसीएस की तैयारी तभी पूर्ण मानी जाती है जब प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा और इंटरव्यू स्तर की गतिशील प्रकृति के तथ्यों और विश्लेषणों को आप सभी तक समावेशी रूप में रखा जाय. परफेक्ट 7 मैगजीन इसी विजन और दृष्टिकोण को ध्यान में रखती है और विद्यार्थियों की कंटेंट के स्तर पर बहुआयामी जरूरतों को समझती है. इसीलिए इस मैगजीन को करेंट अफेयर्स के साथ साथ सामान्य अध्ययन के महत्वपूर्ण खंडों से जुड़े अति प्रासंगिक कंटेंट के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है. एक तरफ जहां करेंट अफेयर्स के स्तर पर सबसे पहले मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखते हुए 7 ज्वलंत विषयों पर समसामयिक लेखों को, पेपर 4 के लिए एथिक्स की केस स्टडीज को, स्वतंत्रता आंदोलन और अन्य क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तित्वों के जीवन और भूमिक. ाओं, सामान्य अध्ययन के विविध खंडों के सर्वाधिक उपयोगी विषयों पर मुख्य परीक्षा के स्तर पर कवरेज दिया जा रहा है, वहीं प्रारंभिक परीक्षा के स्तर पर एक माह के 14 सबसे महत्वपूर्ण करेंट अफेयर्स के मुद्दों को कवर किया जा रहा है जिसमें सर्वाधिक जोर पर्यावरण पारिस्थितिकी, कला और संस्कृति, विज्ञान और प्रौद्योगिकी , अर्थव्यवस्था के मुद्दों पर है. शब्दावली और अन्य आयामों एक छोटा खंड भी परफेक्ट 7 मैगजीन का पार्ट होगा.

विद्यार्थियों की संकल्पना के स्तर पर समझ को बढ़ाने के लिए ब्रेन बूस्टर्स को 7 ग्राफिक्स के जरिये विषय को संक्षेप और सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है. इसके अलावा सिविल सर्विसेज की परीक्षा में प्रमुखता से पूछे जाने वाले ग्लोबल इनिशिएटिव्स, वैश्विक संस्थाओं, संगठनों की संरचना, कार्यप्रणाली, महत्वपूर्ण रिपोर्ट्स, सूचकांकों पर अपडेटेड जानकारी इस पत्रिका में शामिल रहेगी. इस मैगजीन को केवल तथ्यों या केवल एनालिसिस पर जोर देते हुए नही बनाया गया है बल्कि इस मैगजीन का विजन यह है कि सिविल सेवा के प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा के उभरते हुए ट्रेंड्स और प्रश्नों की नई प्रकृति को देखते हुए हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों को एक ऐसी समावेशी मैगजीन उपलब्ध कराई जाए जिससे वे सिविल सेवा एग्जाम की नई जरूरतों को समझते हुए अपनी तैयारी को एक नई दिशा दे सकें. हमें उम्मीद हैं कि परफेक्ट 7 अपने नए रूप में आप लोगों के लिए बेहद उपयोगी साबित होगा और इसके साथ ही आप सभी के सुझावों का स्वागत रहेगा.

विनय कुमार सिंह
सम्पादक
ध्येय IAS

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

PERFECT 7 TEAM

संपादक · विनय कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक · क्यू. एच. खान
सहसंपादक · गौतम तिवारी
उप–संपादक · आशुतोष मिश्र
· सौरभ चक्रवर्ती
प्रकाशन प्रबंधक · डॉ.एस.एम.खालिद
संपादकीय सहयोग · प्रिंस, अमन, गौरव चौधरी, देवेंद्र सिंह, लोकेश शुक्ल
मुख्य लेखक · विवेक ओझा
सहायक लेखक · मृत्युंजय त्रिपाठी,
मुख्य समीक्षक · ए.के श्रीवास्तव
· विनीत अनुराग
· बाघेन्द्र सिंह
आवरण सज्जा एवं विकास · प्रगति केसरवानी
· पुनीष जैन
टंकण · सचिन
· तरून
कार्यालय सहायक · राजू , चन्दन, अरुण

साभार : PIB, द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, जनसत्ता, दैनिक जागरण, डाउन टू अर्थ, इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीक्ली, योजना, कुरुक्षेत्र, द प्रिंट

DHYEYA EDUCATIONAL SERVICES PVT. LTD.
AN ISO 9001:2008 COMPANY

Face to Face Centres

MUKHERJEE NAGAR	: 9205274741, 9205274742
RAJENDRA NAGAR	: 9205274743
LAXMI NAGAR	: 9205212500, 9205962002
ALLAHABAD	: 0532-2260189, 8853467068
LUCKNOW (ALIGANJ)	: 0522-4025825, 9506256789
LUCKNOW (GOMTINAGAR)	: 7234000501, 7234000502
GREATER NOIDA	: 9205336037, 9205336038
KANPUR	: 7887003962, 7897003962
BHUBANESWAR	: 8599071555
SRINAGAR (J&K)	: 9205962002

PERFECT 7
FORTNIGHTLY CURRENT AFFAIRS

विषय सूची

समसामयिक लेख ———————————— 1-14

- जम्मू- कश्मीर में घटित हिंसा तथा नरसंहार के आयाम
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध तथा शांति
- भारतीय समाज में वृद्धजनों के समक्ष बढ़ती समस्याएं
- पर्यावरण संरक्षण तथा आर्थिक विकास को को संतुलित करने में प्रौद्योगिकी की भूमिका
- भारत में साम्प्रदायिकता की समस्या
- एग्रीटेक : भारत में फार्मिंग (एफएएएस) को सेवा के रूप में सक्षम करता
- उत्तर-पूर्व के लिए अंतर्देशीय-जल परिवहन प्रणाली को पुनर्जीवित करना

संक्षिप्त मुद्दे राष्ट्रीय ---------------------------------- 15-17
संक्षिप्त मुद्दे अंतर्राष्ट्रीय ---------------------------------- 17-19
संक्षिप्त मुद्दे पर्यावरण ---------------------------------- 19-20
संक्षिप्त मुद्दे विज्ञान एवं तकनीक ------------------------- 21-22
संक्षिप्त मुद्दे आर्थिक ----------------------------------- 22-23
राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय घटनाओं की महत्वपूर्ण खबरें --------- 24-26
समसामयिक घटनाएं एक नजर में ----------------------- 27
ब्रेन बूस्टर -- 28-34
पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण तथा समसामयिक बहुविकल्पीय प्रश्न ------------------------------------ 35-38
GS Paper IV के लिए हल केस स्टडी ---------------------- 39
व्यक्ति विशेष -- 40
इतिहास विषय की शब्दावलिया ----------------------------- 41

OUR OTHER INITIATIVES

UDAAN TIMES
Putting You Ahead of Time...
Hindi & English Current Affairs Monthly News Paper

DHYEYA TV
Current affairs Programmes hosted by Mr. Qurban Ali
Ex. Editor RSTV) & by Dhyeya Team
Broadcasted on YouTube & Dhyeya TV

सात महत्वपूर्ण मुद्दे

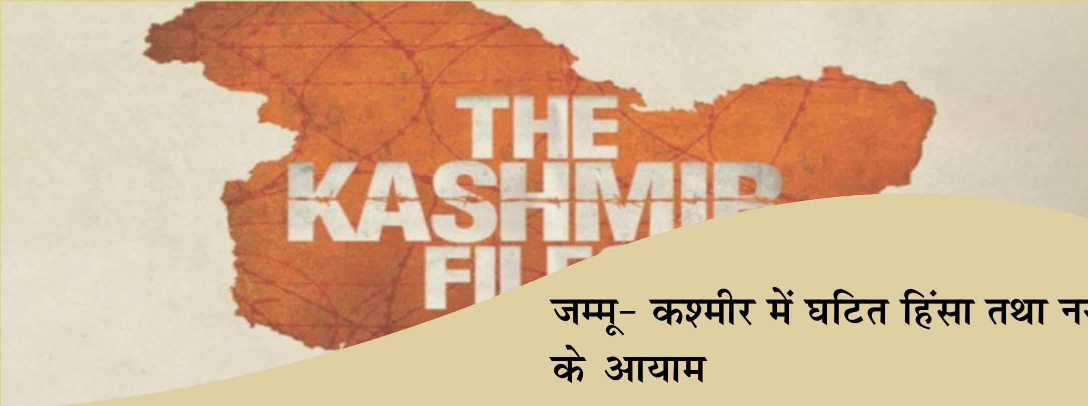

जम्मू- कश्मीर में घटित हिंसा तथा नरसंहार के आयाम

सन्दर्भ

वर्तमान में एक फिल्म "कश्मीर फाइल्स" चर्चा का विषय बनी हुई है। यह फिल्म मुख्य रूप से 1990 में कश्मीर में घटित हिंसा पर आधारित है।

परिचय

आज सम्पूर्ण देश में "द कश्मीर फाइल्स " नामक एक फिल्म को लेकर चर्चा हो रही है। यह फिल्म 1990 में कश्मीर में घटित हिंसा पर आधारित है। ध्यातव्य हो कि 14 सितंबर 1989 को कट्टरपंथी समूह (जेकेएलएफ) द्वारा पंडित टीका लाल टपलू की हत्या से आरम्भ होने वाला यह तनाव 19 जनवरी 1990 को कश्मीरी पंडितों का पलायन की परिणति बना। 7 जून 1994 को पुनुन काश्मीर आंदोलन तथा अखिल भारतीय काश्मीरी समाज नामक संगठनों ने भारत के राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के समक्ष यह आख्यान दिया कि जनवरी 1990 से अगस्त 1990 के मध्य हिन्दुओं पर सामूहिक हमला किया गया तथा व्यापक नरसंहार किया गया। हालाँकि भारत संघ तथा इन दोनों संगठनों के तर्कों को सुनने के उपरान्त भारत के मानवाधिकार आयोग ने इस घटना को नरसंहार की श्रेणी में नहीं रखा।

नरसंहार (Genocide) का अर्थ

सामान्यत: जातीय नरसंहार **(Genocide)** का अर्थ, शासन करने वाली सत्ता द्वारा नागरिकों के विरुद्ध, जिन्हें वह नियन्त्रित करता है, किया जाने वाला गम्भीरतम नैतिक अपराध है। इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम पोलैण्ड के अन्तर्राष्ट्रीय विधि - विशेषज्ञ एवं न्यायाधीश राफेल लैम्किन **(Raphael Lemkin)** द्वारा 1944 ई० में किया गया था। जेनोसाइड पद **(Genos)** और **(Cide)** से व्युत्पन्न है। इनमें **(Genos)** ग्रीक भाषा का पद है और **Cide** लैटिन भाषा का। **Genos** का अर्थ है जाति **(Race)** या समूह , जनजाति **(Tribe)** और **Cide** का अर्थ है, हत्या करने वाला या हत्या का कार्य **(Killer or act of Killing)** इस प्रकार जेनोसाइड का अर्थ है, जातीय नरसंहार का कार्य या जातीय नरसंहार करने वाला।

नरसंहार पर अंतर्राष्ट्रीय विधि का विकास

- एक अन्तर्राष्ट्रीय अपराध के रूप में जेनोसाइड आधुनिक अवधारणा है, यद्यपि 14 वीं -15 वीं शदी से ही इसके दृष्टान्त मिलते हैं।
- एक अनुमान के अनुसार 20 सदी में दुनियाँ की विभिन्न और समग्रवादी **(Total-itarianism)** सरकारों द्वारा बीसवीं शती में 174 मिलियन लोगों का नरसंहार हुआ है। इनमें करीब 110 मिलियन लोग साम्यवादी सरकारों द्वारा मारे गये । इनमें भी अधिकांश सोवियत संघ **(U-S-S-R-)** में लेनिन एवं स्टालिन के शासनकाल में साम्यवादी चीन में माओत्से तुंग के शासन में मारे गये।
- हिटलर के शासन काल में जर्मनी में 21 मिलियन लोग मारे गये। इसके अतिरिक्त कंबोडिया, जापान, उत्तरी कोरिया, मेक्सिको, पाकिस्तान, पोलैण्ड, टर्की, वियतनाम, इथियोपिया और यूगोस्लाविया में भी व्यापक नरसंहार के मामले देखे गए।
- हिटलर द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान किये गए सामूहिक नरसंहार जैसी स्थि. ति की पुनरावृत्ति न हो इसीलिए संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा नरसंहार को अंतर्राष्ट्रीय विधि के अधीन एक अपराध मानकर इसके सन्दर्भ में नरसंहार निवारण तथा दंड अभिसमय 1948 को स्वीकार किया गया। यह अभिसमय 1951 में लागू हुआ। 2017 तक 149 देश इस अभिसमय के पक्षकार बन चुके थे।

नर - संहार के अपराध के लिए दण्ड :-

- अभिसमय की उद्देशिका में यह प्रावधान है कि नरसंहार अन्तर्राष्ट्रीय विधि के अधीन अपराध है यह संयुक्त राष्ट्र की भावना तथा उद्देश्यों के प्रतिकूल है। अभिसमय में नरसंहार को दंडनीय अपराध माना गया है।
- अभिसमय का अनुच्छेद 4 के अनुसार नरसंहार या अनुच्छेद 3 में वर्णित किसी अन्य कार्य को करने वाले व्यक्तियों को दण्डित किया जाना चाहिए, चाहे वे संवैधानिक रूप से उत्तरदायी शासक या लोक अधिकारी हो या गैर - सरकारी व्यक्ति हो। यह प्रावधान नरसंहार के लिए व्यक्तिगत उत्तरदायित्व का प्रावधान करता है। अत: नरसंहार करने वाले अधिकारी इस आधार पर बच नहीं सकते कि उन्होंने ऐसे कृत्य अपने वरिष्ठ अधिकारी के आदेश पर किया था।
- यदि नर - संहार का अपराध करने वाला व्यक्ति दूसरे राज्य में भाग जाता है तो ऐसे मामलों में संविदाकारी पक्षकार अपनी प्रवृत्त विधि या सन्धि के अनुसार अपराधी का प्रत्यर्पण का प्रावधान है।
- अभिसमय का अनुच्छेद 7 विनिर्दिष्ट रूप से प्रावधान करता है कि नर - संहार को प्रत्यर्पण के प्रयोजन के लिए "राजनीतिक अपराध" न माना जायेगा।
- अत: यह स्पष्ट है कि नरसंहार के लिए स्पष्ट दंड का प्रावधान है।
- नर - संहार के दोषी व्यक्तियों के लिए दण्ड का प्रावधान अभिसमय के अधीन नहीं किया गया है। अभिसमय अनुच्छेद 4 के अधीन प्रावधान करता है कि संविदाकारी पक्षकारों द्वारा प्रभावी दण्ड दिया जायेगा परन्तु दंड की मात्रा पर यह अभिसमय मौन है।

दंड देने वाला प्राधिकरण

- यह दण्ड प्राथमिक रूप से सम्बद्ध राज्य के राष्ट्रीय न्यायालयों द्वारा दिया जायेगा।
- अभिसमय अनुच्छेद 8 के अधीन यह स्पष्ट कर देता है कि संविदाकारी पक्षकार संयुक्त राष्ट्र सक्षम अंगों से संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अधीन ऐसी कार्यवाही करने के लिए अनु. रोध कर सकते हैं। इस स्थिति में कार्यवाही सुरक्षा परिषद् द्वारा की जायेगी।
- अभिसमय के अनुच्छेद 9 के अनुसार विवाद के किसी पक्षकारों में से किसी के अनुरोध पर अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय को सौंपा जायेगा।

कश्मीर में घटित हिंसा नरसंहार है या नहीं?

पुनुन कश्मीर आंदोलन तथा अखिल भारतीय काश्मीरी समाज द्वारा 1994 में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के समक्ष यह ज्ञापन प्रस्तुत कर यह प्रख्यान दिया गया कि जन. वरी 1990 से अगस्त 1990 के मध्य कश्मीर में हिन्दुओ का नरसंहार किया गया।

इस दौरान निम्न स्थितिया बनी –

- लगभग 800 लोगों को मार दिया गया
- 102 मंदिरो को नष्ट किया गया।
- 16000 हिन्दू मकानों को जला दिया गया।
- 9000 लोगों को प्रताड़ित किया गया।
- मृत्यु, अंगभंग, बलात्कार, अपहरण, के अनगिनत मामले रहे।
- नरसंहार तथा आतंकवाद के फलस्वरूप कश्मीर में जीवित हिन्दू जो 1941 में 15% थे वे 1981 में 5 % तथा 1991 में 0.1 % बचे। चुकी भारत नरसंहार अभिसमय का पक्षकार है अत: भारत संघ तथा जम्मू-काश्मीर राज्य को इस सन्दर्भ में उचित कार्यवाही करनी चाहिए थी जिसमे ये असफल रहे।

उपरोक्त मामले को ध्यान में रखकर मानवाधिकार आयोग ने जम्मू-कश्मीर राज्य (तात्का. लिक) तथा भारत संघ को नोटिस भेज कर उत्तर देने के लिए कहा –

जम्मू-कश्मीर द्वारा प्रस्तुत उत्तर :-

- प्रस्तुत उत्तर में यह प्रख्यान किया गया कि कश्मीरी पंडितो को जान-बूझकर लक्षित किया गया। तथा इस कृत्य के फलस्वरूप

1991 तक 72076 हिन्दू परिवार तथा 6000 मुस्लिम परिवार घाटी से जम्मू तथा दिल्ली में विस्थापित हुए।

- जम्मू-कश्मीर राज्य ने बताया कि व्यापक पैमाने पर हुई इस हिंसा, आगजनी, बलात्कार में आतंकवादी समूह सम्मिलित थे तथा वे भारत समर्थक लोगों को निशाना बना रहे थे।

भारत संघ द्वारा प्रस्तुत उत्तर

- इस उत्तर में यह अभिस्वीकृति की गयी थी कि जम्मू एवं कश्मीर में होने वाली आतंकवादी हिंसा के प्रारम्भिक वर्षों से निर्दोष नागरिकों के विरुद्ध आतंकवादियों द्वारा लक्ष्य बनाकर हमले किये गए। जिसके परिणामस्वरूप कश्मीरी पंडितों के समूह ने घाटी छोड़ दिया था तथा बहुत से कश्मीरी पंडितों एवं अन्य अल्पसंख्यक समुदाय अपने घरों को छोड़कर जाने के लिए मजबूर हुए।
- भारत संघ ने अपने उत्तर में यह भी कहा आयोग द्वारा 1948 के जेनेवा अभिसमय के आधार पर कोई भी आवेदन ग्रहण नहीं किया जा सकता क्योंकि भारत की संसद ने मानव अधिकार संरक्षण अधिनियम, 1993 को अधिनियमित कर दिया है। इस अधिनियम की धारा 2 (1) (डी) में मानव अधिकारों की परिभाषा संविधान द्वारा प्रत्याभूत अथवा अंत. र्राष्ट्रीय प्रसंविदाओं में सन्निविष्ट एवं भारत के न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय ऐसे अधिकारों के रूप में की गयी है, जो व्यक्ति के प्राण, स्वतंत्रता, समानता एवं गरिमा से सम्बन्धित हो। इसके अतिरिक्त धारा 2 (1) (एफ) में वर्णित अंतर्राष्ट्रीय प्रसंविदाओं का तात्पर्य है मात्र अन्तर्राष्ट्रीय सिविल एवं राजनीतिक अधिकार प्रसंविदा तथा आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अधिकार प्रसंविदा से है।
- भारत संघ ने यह तर्क दिया कि मानव अधिकार संरक्षण अधिनियम 1993 की धारा 2 (1) (डी) अथवा (एफ) में नरसंहार अभिसमय **(Genocide Convention)** का उल्लेख नहीं है, अत: कोई कार्यवाही नहीं की जा सकती।

मानवाधिकार आयोग का इस सन्दर्भ में निर्णय

- आयोग ने बताया कि यदयपि भारत ने अभिसमय को 27 अगस्त 1959 को स्वीकार किया था फिर भी, भारत ने संविधान के अनुसार इस अभिसमय की पुष्टि (विशेष रूप से नरसंहार अथवा अनुच्छेद **III** में गिनाये गये अन्य कृत्यों में से) के सन्दर्भ में आवश्यक विधान नहीं बनाये हैं।
- परन्तु चूँकि अभिसमय ने रूढ़िगत अंत. र्राष्ट्रीय विधि के एक प्रतिमान का विकास करना है, अब इसे अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा सार्वभौम रूप से मान्यता प्रदान कर दी गयी है। अत: नरसंहार का प्रतिषेध करने सम्बन्धी नियम अवश्य पालनीय **(jus cogens)** प्रास्थि. ति प्राप्त कर ली है। अत: जिनेवा अभिसमय में अभिव्यक्त रूप जनसंहार का प्रतिषेध अंत. र्राष्ट्रीय समुदाय के सभी सदस्यों पर लागू होता है।
- कश्मीरी पंडितों को जान से मार डालना एवं जातीय सद्भाव को जम्मू कश्मीर राज्य के विलगाव को सुनिश्चित करने के गम्भीर आशय के संदर्भ में देखा जाना आवश्यक है।
- आयोग ने कश्मीरी पंडितों के विरुद्ध किसी भी दृष्टिकोण से अपराध को गम्भीर माना है किन्तु वे इस घटना को जनसंहार अभिसमय की परिभाषा की परिधि में नहीं रखते हैं। अत: आयोग ने कश्मीरी पंडितों के सम्बन्ध में किये गये कृत्य नरसंहार के समान हैं किन्तु वे नरसंहार नहीं हैं।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध तथा शांति

सन्दर्भ

वर्तमान में विश्व के विभिन्न क्षेत्रो में संघर्ष की परिस्थितियों के कारण अंतर्राष्ट्रीय शांति का ह्रास हो रहा है।

परिचय

वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व रूस तथा यूक्रेन के मध्य हो रहे युद्ध का साक्षी बन रहा है जिसके फलस्वरूप व्यापक स्तर पर शांति तथा मानवाधिकारों का ह्रास हुआ है परन्तु पिछले तीन वर्षो से विश्व ऐसे कई संघर्षो का साक्षी बन चुका है। अमेरिका तथा ईरान, अर्मेनिया तथा अजरबेजान, इथियोपिया में गृहयुद्ध, भारत तथा चीन के मध्य झड़प इत्यादि ऐसे कई संघर्ष रहे हैं जो वैश्विक शांति को प्रभावित कर रहे हैं।

वर्तमान विश्व में हो रहे संघर्ष

- रूस-यूक्रेन संकट
- इथियोपिया में गृहयुद्ध
- अर्मेनिया तथा अजरबेजान में युद्ध
- चीन -ताईवान तनाव
- चीन तथा भारत संघर्ष
- दक्षिणीं चीन सागर में उथल-पुथल
- ईरान, इराक तथा तुर्की में कुर्दिस्तान हेतु संघर्ष
- अफगानिस्तान में तालिबानी संघर्ष
- सूडान में गृहयुद्ध
- इजराइल -फिलिस्तीन का संघर्ष
- सूडान, युगांडा में नृजातीय संघर्ष
- पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान में संघर्ष
- विश्व के विभिन्न हिस्सों में आतंकवादी संगठनों से राज्यों का युद्ध (यथा आईएसआईएस)

वर्तमान में हो रहे संघर्षो की प्रवृत्ति

- राज्य बनाम राज्य:-इस प्रकार के तनाव में विभिन्न कारणों के फलस्वरूप दो राष्ट्र-. राज्यों के मध्य एक दुसरे से संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। उदाहरणस्वरूप, अर्मेनिया-अजरबेजान युद्ध, रूस-यूक्रेन, भा. रत-चीन इत्यादि
- गृह युद्ध : इस स्थिति में एक देश के भीतर विभिन्न हितधारक समूहों के मध्य अलगाव की विचारधारा को लेकर युद्ध आ. रम्भ हो जाता है। जैसे इथियोपिया की संघीय सरकार तथा वहां के टिगरे क्षेत्र में आपसी संघर्ष की स्थिति , पाकिस्तान में बलूच संघर्ष
- आतंक के विरुद्ध युद्ध: यह मुख्य रूप से किसी देश द्वारा आतंकवादी संगठनों के विरुद्ध की गई कार्यवाही है। इसका प्रतिप. ादन 2001 में अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश द्वारा किया गया था। जैसे आईएसआईएस के विरुद्ध संघर्ष, भारत की सर्जिकल स्ट्राइक।
- विश्व युद्ध : जब दो या अधिक राज्यों के मध्य युद्ध में विश्व की सभी बड़ी शक्तियां किसी न किसी के पक्ष में युद्ध करे तो वह तनाव विश्व युद्ध में परिणत हो जाता है। वर्तमान में रूस -यूक्रेन युद्ध की विभीषिका के मध्य कई विशेषज्ञ इसके विश्वयुद्ध में परिणत होने की आशंका कर रहे थे।

शांति की आवश्यकता :

- प्रथम विश्व युद्ध तथा द्वितीय विश्वयुद्ध में मानव जाति ने यह स्पष्ट रूप से देखा कि राजनैतिक महत्वाकांछा के परिणामस्वरूप हुए युद्धों का परिणाम मात्र विनाश होता है। हिरोशिमा तथा नागासाकी में परमाणु बम का प्रयोग इसका स्पष्ट उदहारण था।
- शांति एक आवश्यक आवश्यकता है जो मानव जाति को विकास के पथ पर अग्रसर करती है। द्वितीय विश्व युद्ध से यूरोप सहित कई क्षेत्रो की अर्थव्यवस्था पूर्ण रूप से तबाह हो गई थी।
- वर्तमान में अमेरिका, रूस, भारत, चीन, पाकिस्तान, ब्रिटेन सहित कई देश परमाणु संपन्न हैं। मात्र 2 शहरो में हुए परमाणु हमले ने मानवता को व्यापक रूप से प्रभावित किया था ऐसे में इतने बड़े स्तर पर परमाणु हथियारों का प्रयोग सम्पूर्ण मानवता को प्रभावित कर सकता है। ऐसे में मानव सभ्यता की रक्षा हेतु शांति आवश्यक है।
- शांति एक आवश्यक तथा प्राकृतिक सामाजिक स्थिति है जबकि युद्ध अप्राकृतिक तथा अस्थाई है। स्थाई आवश्यकता के लिए अस्थाई स्थिति को छोड़ देना ही उचित है।

शांति स्थापित करने के उपाय:

वैचारिक स्थिति : शांति स्थापित करने के उपागम

- शांति स्थापित करने के यथार्थवादी उपागम:- इस नीति में शांति स्थापना हेतु देश कूटनीतिक सम्बन्धो का प्रयोग करते हैं। इस उपागम में "राजनय की क्षमता" अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। यथा हाल ही के भारत चीन संघर्ष में दोनों देशो के प्रतिनिधियों के मध्य कूटनीतिक वार्ता हुई।
- शांति स्थापित करने के उदारवादी उपागम :- इस विचारधारा में शांति स्थापित करने में अंतर्राष्ट्रीय विधि तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओ की भूमिका पर विशेष बल दिया जाता है। यह नीति अंतर्राष्ट्रीय न्यायालयो , अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की भूमिका को प्रबलता प्रदान करती है। यथा माली में अलकायदा को रोकने के लिए फ्रांस की सेनाओ को भेजने के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा उठाया गया कदम।
- शांति स्थापित करने के मार्क्सवादी उपागम:- इस विचारधारा में आर्थिक असमानता को संघर्ष का कारण माना जाता है। ऐसे में शांति स्थापित करने के लिए आर्थिक समानता पर बल दिया जाता है।

इसलिए विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठन गरीब देशो को आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय शांति हेतु विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय प्रयास

- संयुक्त राष्ट्र संघः द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका के उपरान्त अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की गई। संयुक्त राष्ट्र संघ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति को स्थापित करने तथा मानवाधिकार के संरक्षण के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय विकास हेतु प्रतिबद्ध है। संयुक्त राष्ट्र चार्टर के तहत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का प्राथमिक उत्तरदायित्व अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा की स्थापना है।
- अंतर्राष्ट्रीय शांति हेतु विभिन्न अभिसमय :- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति को स्था. पित करने के लिए विभिन्न अभिसमय किये गए हैं। इनमे हेग अभिसमय, जेनेवा अ. भसमय, आतंकवादी बमबारी के उन्मूलन हेतु अंतरराष्ट्रीय अभिसमय (1997) इत्यादि महत्वपूर्ण हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय शांति हेतु विभिन्न समझौते: शांति की स्थापना हेतु कई समझौते किये गए हैं जिनमे पेरिस समझौते 1928, सीटीबीटी, एनपीटी इत्यादि महत्वपूर्ण हैं।

शांति स्थापित करने के सम्मुख चुनौतियां

- अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की विश्वसनीयता पर प्रश्नः-संयुक्त राष्ट्र संघ सहित कई अंत. र्राष्ट्रीय संगठनों पर पक्षपाती होने का आरोप लगा है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में वीटो शक्ति प्राप्त देश प्रायः अपने राजनैतिक महत्व स्थिति में आज के सन्दर्भ में सभी अन्त. र्राष्ट्रीय संगठनों का पुनर्गठन होना चाहिए। परन्तु विशेषाधिकार प्राप्त देशो द्वारा लगातार इन सुधारो की अवहेलना की जा रही है जो संघर्ष को जन्म दे रही है।
- शक्तिशाली देशो द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय विधियों की अवहेलनाः- चीन, रूस, अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश लगातार अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय, संयुक्त राष्ट्र के नियमो अथवा अंतराष्ट्रीय कन्वेंशन की अवहेलना करते हैं। जो अन्य देशो में असमानता का भाव उत्पन्न करता है। जैसे अमेरिका द्वारा पेरिस संधि से हटना। कई बार आतंकवाद तथा मनी लांड्रिंग जैसे मुद्दों पर भी अंतर्राष्ट्रीय सहयोग नहीं बन पाता।
- अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में सुधारो की अवहेलनाः-यह विदित ही कि आईएमफ, विश्वबैंक तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में कुछ देशो का प्रभाव स्थापित है। इन संस्थ. ाओ के निर्माण से लेकर आज के समय तक विश्व की परिस्थितियां बदल चुकी हैं। कई अन्य देश आज इन संगठनों में प्रभावी देशो से अधिक शक्तिशाली व प्रभावशाली हो गए हैं। यथा आज भारत जनसंख्या, क्षेत्रफल, सेना, अर्थव्यवस्था सभी विषयो पर ब्रिट. ेन से आगे है परन्तु संयुक्त राष्ट्र में वीटो शक्ति ब्रिटेन के पास है भारत के पास नहीं। ईरान पर एकतरफा प्रतिबन्ध लगाना, चीन द्वारा यूएन क्लोस तथा अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के नियमो का उलंघन इत्यादि।
- संरक्षणवाद :- संरक्षणवाद की अवधारणा के फलस्वरूप राष्ट्रीय लाभ को आधार बना. कर अंतर्राष्ट्रीय नियमो के उलंघन करने की स्थिति से एक नवीन प्रकार की संघर्ष की स्थितियां बन रही हैं। यथा अमेरिका पेरिस संधि से स्वयं को अलग कर चुका है तथा फ्रांस द्वारा घोषणा की गई है कि जो पेरिस संधि को नहीं मानेंगे उनसे फ्रांस का आर्थिक सम्बन्ध नहीं होगा। इस प्रकार के हितो का टकराव भी संघर्ष का कारण बनता है।
- राजनैतिक महत्वाकांक्षा : रूस द्वारा यूक्रेन पर किया गया हमला एक तरह से नाटो के विस्तार को रोकने में रूस की महत्वाकांछा को प्रदर्शित करता है।
- धार्मिक तथा नृजातीय श्रेष्ठता की भावना:- कई आतंकवादी तथा अलगाववादी संगठन धार्मिक तथा नृजातीय श्रेष्ठता की भावना से ग्रस्त होकर संघर्ष को बढ़ावा देते हैं। सूडान तालिबान इत्यादि जैसे संघर्ष इसी अवधारणा के फलस्वरूप हो रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय शांति स्थापना में भारत की भूमिका

- भारत ने सम्पूर्ण विश्व को "वसुधैव कुटुंबकम", "अहिंसा परमो धर्मः", "सर्व धर्म समभाव" तथा लोकतंत्र की विचारधारा दी है। जो शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को बढ़ावा देकर अंतर्राष्ट्रीय शांति की स्थापना में सहयोग करती है।

- भारत की विदेशी नीतिया यथा अंत. र्राष्ट्रीय विधियों का पालन, गुटनिरपेक्षता की नीति, पंचशील के सिद्धांत, पर्यावरण पर प्रतिबद्धता आदि भारत द्वारा शांति स्था. पित करने के मुख्य नीतियों के रूप में हैं।
- इस समय विश्व के सभी बड़े देशो से भारत के बेहतर सम्बन्ध हैं। अमेरिका, रूस,यूक्रेन जैसे परस्पर विरोधी देशो से भी भारत के बेहतर सम्बन्ध हैं। इस स्थिति में भारत की कूटनीति इस प्रकार के संघर्षो में मध्यस्थ की भूमिका निभा सकती है।
- भारत की शक्ति भी शांति स्थापित करने में सहायक है। यथा भारत को हिन्द तथा प्रशांत महासागर में दक्षिण पूर्व एशिया के देश सुरक्षा प्रदाता के रूप में देखते हैं। रूस -यूक्रेन युद्ध में कुछ लोग यह भी कहते हैं कि यदि यूक्रेन के पास परमाणु शस्त्र होते तो रूस आक्रमण नहीं करता। भारत के पास **नो फर्स्ट यूज** नियम के साथ परमाणु शस्त्र हैं जो कहीं न कहीं इन क्षेत्रो में अन्य देशो की आक्रामकता को प्रतिसंतुलित करता है।

निष्कर्ष

100 वर्षो के इतिहास में विश्व ने दो महायुद्धों की विभीषिका को देखा है। उससे उत्पन्न कठिनाइयों, संकटो तथा विनाश को महसूस किया है। ऐसे में यह आवश्यक है कि सभी शांतिपूर्ण सहअस्तिव पर ध्यान दें। शरणार्थी संकट, आतंकवाद, परमाणु प्रसार, शस्त्रीकरण इत्यादि युद्ध के उप-उत्पाद होते हैं अतः विश्व के सभी जिम्मेदार देशो को युद्ध से बचकर शांति की तरफ ध्यान देना चाहिए।

भारतीय समाज में वृद्धजनों के समक्ष बढ़ती समस्याएं

सन्दर्भ

भारत शहरीकरण के बढ़ते प्रभाव के सह–उत्पाद स्वरुप वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ती जा रही है उसके साथ ही साथ भारत में वृद्धजनों की सामाजिक स्थिति में भी गिरावट आ रही है।

परिचय

जैसे-जैसे भारत तेजी से शहरीकरण की ओर बढ़ रहा है और परिवार छोटी इकाइयों में बँट रहे हैं, आमतौर पर शहरी एवं अर्द्ध–शहरी क्षेत्रों में वृद्धाश्रमों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। 2011 की जनगणना के अनुसार देश में वरिष्ठ नागरिको की संख्या लगभग 10 करोड़ थी, जो कुल जनसंख्या का लग. भग 8.5% थी। यूएन वर्ल्ड पापुलेशन एजिंग रिपोर्ट **(UN World Population Ageing)** के अनुसार भारत की वृद्ध आबादी (60 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोग) का वर्ष 2050 तक वर्तमान में लगभग 8% के स्तर से बढ़कर लगभग 20% हो जाने का अनुमान है। यह एक बड़ी संख्या है जिनकी सामाजिक सुरक्षा पर ध्यान देना अनिवार्य है। वर्तमान में बदलते सामाजिक मानदंडों और संयुक्त से एकल परिवारों में बदलाव के साथ, वरिष्ठ नागरिक कई मुद्दों से जूझ रहे हैं। हालाँकि, इनमें से कुछ मुद्दों को हल करने के लिए, सरकार द्वारा कई कदम उठाए गए हैं और अभी भी बहुत कुछ करने की जरूरत है।

वृद्ध जनो की मुख्य समस्याएं :

स्वास्थ्य की समस्या

- 10% से अधिक वरिष्ठ नागरिक मान. सिक अवसाद का शिकार हैं।
- 40 से 50% वृद्धों को मनोवैज्ञानिक का. उंसलिंग की आवश्यकता पड़ती है जो उन्हें नहीं प्राप्त होती।
- 65% वृद्ध अपने स्वास्थ्य सेवाओं के लिए दूसरों पर निर्भर है।
- वृद्धों का स्वास्थ्य बीमा नहीं हुआ है।

> **वृद्ध जन न सिर्फ समाज बल्कि अपने समय में अर्थव्यवस्था के निर्माण में भी व्यापक योगदान करते हैं। ऐसे में उन्हें समाज तथा अर्थव्यवस्था से अपने योगदान के बदले सम्मान तथा आर्थिक सहयोग प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार है।**

आर्थिक समस्या

- द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग की रिपोर्ट के अनुसार भारत में, 32% बुजुर्ग पुरुष और 72% बुजुर्ग महिलाऐं जीवन यापन के लिए दूसरो पर निर्भर हैं।
- भारत में बड़ी संख्या में असंगठित क्षेत्र में रोजगार रहता है जिसके कारण रिटायरमेंट के बाद किसी पेंसन के आभाव में वृद्धजनों की निर्भरता बढ़ जाती है।

उपेक्षा :

- एकल परिवारों की संख्या में वृद्धि के कारण बुजुर्गो की उपेक्षा अधिक हुई। एकल परिवार के निर्णय निर्माण में बुजुर्गो को बाहर कर दिया जाता है। इससे वृद्धजनो में शारी. रिक और मानसिक जैसे विभिन्न रूपों का होता है।

घरेलू दुर्व्यवहार

- एनजीओ हेल्प एज इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार बच्चों द्वारा भी दुर्व्यवहार किया जाता है। 25% वरिष्ठ नागरिकों के साथ घरेलू दुर्व्यवहार किया जाता है तथा लगभग 10% बुजुर्ग अवसाद से पीड़ित हैं।

उपरोक्त समस्याओं के साथ साथ वृद्धो के सन्दर्भ में डाटा का आभाव , एकाकी जीवन जैसी कई समस्याएं रहती हैं जो समाज में वृद्धो की स्थिति को असहज करती हैं।

वृद्धो की स्थिति में सुधार हेतु किये जाने वाले प्रयास

संवैधानिक प्रावधान

- भारतीय संविधान में प्रस्तावना तथा अनुच्छेद 21 मानवीय गरिमा हेतु प्रतिबद्ध हैं
- अनुच्छेद 41 में सरकार को वृद्ध जनो के कल्याण हेतु निर्देश दिए गए हैं।

विधिक प्रयास

माता–पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण–पोषण और कल्याण अधिनियम, 2007

- यह बच्चों द्वारा माता–पिता के अनिवार्य भरण–पोषण का प्रावधान करता है।
- माता–पिता भरण पोषण में किसी भी प्रकार की लापरवाही होने पर यह बच्चों को संपत्ति के अधिकार के हस्तांतरण का निरसन करता है।
- इसके साथ ही अधिनियम दंडात्मक सजा भी प्रदान की जाती है।
- इस अधिनियम के मुख्य उद्देश्यों में वृद्धा. श्रमों का निर्माण भी है।
- यह केवल एक मॉडल अधिनियम है और कई राज्यों ने इसे वांछित प्रारूप में लागू नहीं किया है। जिसके फलस्वरूप यह अधि नियम अधिक प्रभावी ढंग से लागू नहीं हो सका है।

वृद्धजनो के लिए राष्ट्रीय नीति 2011:-

यह नीति निम्नलिखित उद्देश्यों से प्रेरित है -

- वृद्धजनो को विकास की मुख्य धारा में लाना।
- अधिक वृद्धाश्रमो की स्थापना।
- घरेलू देखभाल सेवाओं को नियमित करना।
- समय-समय पर पेंशन की दर में वृद्धि।

• परिवारों को बुजुर्गों की देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित करना।

अन्य योजनाएं

उपरोक्त प्रयासों के साथ साथ अटल पेंशन योजना, वृद्धावस्था पेंशन योजना, वृद्ध जनो हेतु समेकित योजना, स्वाधार गृह, नेशनल संेटर फॉर एजिंग, वयोश्री योजना जैसी योजनाएं चलाई जा रहीं हैं जो वृद्धजनों के जीवन स्तर को सुधारने में सहयोगी होंगी।

क्या किया जा सकता है ?

वृद्धजनों के लिए निरंतर प्रयास करने के उपरान्त भी उनकी स्थिति में सुधार नहीं आ रहा है बल्कि उनकी स्थिति में निरंतर गि. रावट आ रही है। ऐसे में कुछ अन्य कदमो को उठाने की आवश्यकता है जो वृद्धजनों की स्थिति में सुधार ला सके। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित प्रयास किये जा सकते हैं –

बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएँ:

• वृद्धाश्रम जैसे आश्रयों में बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं को पहुँचाना होगा। इन स्थानों पर ब्लड शुगर एवं ब्लड प्रेशर , आवधिक दृष्टि एवं श्रवण जाँच तथा इनका प्रारंभिक निदान उपलब्ध करना होगा।

• वृद्ध व्यक्तियों की स्वास्थ्य स्थिति को ध्यान में रखते हुए एक समग्र स्वास्थ्य पैकेज दिया जाए।

• वृद्धाश्रम जैसे आश्रयों में मॉर्निंग–वॉकर्स भी उपलब्ध कराये जा सकते हैं। इनमे अधिक व्यय की भी आवश्यकता नहीं होती तथा ये स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की पहचान करने और सहायता प्रदान कर वृद्धो को सुदीर्घ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

स्वास्थ्य संस्थानों की भूमिका:

• बुनियादी सेवाओं को उपलब्ध करने के साथ ही साथ स्वास्थ्य संस्थानों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

• बुनियादी स्वास्थ्य की जाँचों से चि. ह्नित स्वास्थ्य समस्याओं को संबोधित करना अनिवार्य है । इस संदर्भ में सार्वजनिक, निजी और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा संचालित अस्पतालों की प्रमुख भूमिका होगी।

नीतिगत हस्तक्षेप:

• वृद्धाश्रमों के सहयोग एवं समर्थन करने के लिये एक सुदृढ़ सार्वजनिक नीति का होना महत्त्वपूर्ण है।

• इसके साथ ही साथ अर्थव्यवस्था को संगठित किया जाए जिससे पेंशन की सुविधा हो सके।

• नौकरी के साथ साथ बीमा पर भी ध्यान देना होगा

समावेशन

• वृद्धाश्रमों की स्थिति अत्यंत दयनीय है वहां निम्नस्तरीय भोजन तथा पर्याप्त आवास जैसी शिकायते मिलती रहती हैं। वृद्धाश्रमों में सभी वृद्ध व्यक्तियों के लिये उचित स्वास्थ्य सुविधाएँ सुनिश्चित करने के प्रभावी तरीकों में से एक यह होगा कि इन आश्रयों में उनकी सीमित एवं कम संख्या सुनिश्चित की जाए।

• वृद्ध व्यक्ति समाज के लिये संपत्ति की तरह हैं, बोझ की तरह नहीं और इस संपत्ति का लाभ उठाने का सबसे अच्छा तरीका यह होगा कि उन्हें वृद्धाश्रमों में अलग–थलग करने के बजाय मुख्यधारा की आबादी में आत्मसात किया जाए। वृद्ध व्यक्तियों के अनु. भव तथा ज्ञान आर्थिक प्रगति में सहायक हो सकते हैं।

नागरिक समाज की भूमिका

• हेल्प ऐज जैसे एनजीओ इस दिशा में अत्यंत प्रगतिशील कार्य कर रहे हैं इनके साथ ही साथ अन्य निकायों को भी आगे आकर कार्य करना होगा।

निष्कर्ष

पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित हो रहे भारतीय जनो को यह अपने नीति वचनो की तरफ लौटना होगा। भारत के संस्कारो में कहा गया है कि –

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसे. विनः।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम॥

अर्थात : जो व्यक्ति सुशील और विनम्र होते हैं, बड़ों का अभिवादन व सम्मान करने वाले होते हैं तथा अपने बुजुर्गों की सेवा करने वाले होते हैं। उनकी आयु, विद्या, कीर्ति और बल इन चारों में वृद्धि होती है।

वृद्ध जन न सिर्फ समाज बल्कि अपने समय में अर्थव्यवस्था के निर्माण में भी व्यापक योगदान करते हैं। ऐसे में उन्हें समाज तथा अर्थव्यवस्था से अपने योगदान के बदले सम्मान तथा आर्थिक सहयोग प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार है।

NOTES

पर्यावरण संरक्षण तथा आर्थिक विकास को संतुलित करने में प्रौद्योगिकी की भूमिका

सन्दर्भ

हाल ही में सिनसिनाटी विश्वविद्यालय (**University of Cincinnati**) के इंजीनियरों ने जलवायु परिवर्तन को संबोधित करते हुए रासायनिक और बिजली संयंत्रों से होने वाले उत्सर्जन को उपयोगी उत्पादों में बदलने के लिए एक विद्युत रासायनिक प्रणाली (**Electro-Chemical System**) विकसित की है।

आर्थिक विकास एक देश के उन्नति के लिए बहुत आवश्यक है। एक देश तभी विकसित माना जाता है जब वह अपने नागरिकों को पर्याप्त मात्रा में रोजगार मुहैया करवा पाये जिससे वहाँ के निवासी गरीबी से छुटकारा पाकर एक अच्छा जीवन व्यतीत कर सकें। वर्तमान के औद्योगिक क्रांति के युग में आर्थिक संवृद्धि के लिए आवश्यक ऊर्जा तथा इंधनो के प्रयोग में पर्यावरण की निरंतर हानि होती रहती है। जिसके फल. स्वरूप जलवायु परिवर्तन तथा वैश्विक तापन की समस्याएं सामने आ रही हैं। परन्तु विश्व की अधिकांश जनसँख्या के जीवन स्तर में सुधार करने के लिए आर्थिक विकास भी आवश्यक है। इस स्थिति में आर्थिक विकास तथा पर्यावरणीय संरक्षण में संतुलन बनाना अनिवार्य है जिसमे प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

रिसर्च के विषय में :-

- यह अध्ययन कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय तथा बर्कले एंड लॉरेंस बर्कले नेशनल लेबो. रेटरी के सहयोग से "नेचर कैटलिसिस" प. त्रका में प्रकाशित हुआ था।
- यूसी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड एप्लाइड साइंस इंजीनियरों ने कार्बन डाइ. ऑक्साइड को कार्बन मोनोऑक्साइड और फिर एथिलीन में परिवर्तित करने के लिए दो-चरणीय कैस्केड प्रतिक्रिया का उपयोग किया। इस तकनीक का अनुप्रयोग खाद्य पैकेजिंग से लेकर टायर तक में किया जा सकता है।
- इस अनुप्रयोग में कार्बन डाइऑक्साइड को रूपांतरित किया गया है। अनुसन्धान टीम ने यह बताया कि इस प्रक्रिया से एक ही समय में एथिलीन चयनात्मकता और उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है (चयनात्मकता का अर्थ है वांछित यौगिकों को अलग करना तथा उत्पादकता का तात्पर्य रिएक्टर में उत्पन्न एथिलीन की मात्रा से है)।

अनुसंधान के संभावित लाभ:

- इस तकनीक को को विभिन्न प्रतिक्रियाओं पर लागू किया जा सकता है क्योंकि इलेक. ट्रोड संरचना सामान्य और सरल है।"
- इस प्रक्रिया के द्वारा कार्बन उत्सर्जन को कम किया जा सकता है इसके साथ ही साथ इस प्रौद्योगिकी को स्टील और सीमेंट संयंत्रों से लेकर तेल और गैस उद्योग तक कई तरह के उद्योगो में प्रयोग किया जा सकता है
- अनुसन्धान की टीम ने यह बताया कि कार्बन उत्सर्जन को कम करने और इससे लाभ कमाने के लिए इस तकनीक का उपयोग किया जा सकता है इससे कार्बन उत्सर्जन के शमन की लागत कम होगी।
- इस प्रक्रिया के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाला एथिलीन "दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण रसायनो में एक" है। इसका उपयोग पानी की बोतलों से लेकर पीवीसी पाइप, टायर और इंसुलेशन में पाए जाने वाले टेक्सटाइल और रबर तक प्लास्टिक की एक श्रृंखला में किया जाता है।
- अनुसंधान टीम ने इस पर जोर दिया कि इस आदर्श रूप प्रक्रिया के द्वारा पर्यावरण से ग्रीनहाउस गैस हटाया जा सकता है।

आर्थिक विकास एक देश के उन्नति के लिए बहुत आवश्यक है। एक देश तभी विकसित माना जाता है जब वह अपने नागरि. कों को पर्याप्त मात्रा में रोजगार मुहैया करवा पाये जिससे वहाँ के निवासी गरीबी से छुटकारा पाकर एक अच्छा जीवन व्यतीत कर सकें।
वर्तमान के औद्योगिक क्रांति के युग में आर्थिक संवृद्धि के लिए आवश्यक ऊर्जा तथा इंध नो के प्रयोग में पर्यावरण की निरंतर हानि होती रहती है।

- ध्यातव्य है कि पावर प्लांट और एथि. लीन प्लांट बहुत अधिक कार्बन डाइ. ऑक्साइड उत्सर्जित करते हैं। अतः एथिलीन बनाने के लिए कार्बन डाइऑक्साइड भारी मात्रा में उपलब्ध है।
- एथिलीन की उत्पादकता और चयनात्मकता को बढ़ावा देने से व्यावसायिक लाभ मिलेगा
- हालाँकि रिसर्चर टीम ने बताया कि इस तकनीक के किफायती होने में कुछ समय लगेगा।

पर्यावरणीय संरक्षण बनाम आर्थिक वृद्धि

- आर्थिक वृद्धि के लिए उद्योग महत्वपूर्ण हैं। इन उद्योगों में ऊर्जा की व्यापक आवश्यकता पड़ती है। वर्तमान समय में उद्योगों के लिए प्रयुक्त होने वाली ऊर्जा में पारंपरिक यह दोनों का प्रयोग किया जाता है जो कार्बन डाइऑक्साइड सहित कई ग्रीन हाउस गैसें उत्सर्जित करती हैं। वर्तमान समय में संपूर्ण ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में

25.6% विद्युत ताप गृह तथा 15.9% औद्यो. गिक उपयोग में उत्सर्जित होते हैं।

- आर्थिक विकास में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान समय में कृषि में सिंचाई के लिए भूमिगत जल का दोहन किया जाता है जो पर्यावरण को हानि पहुंचाता है। कृषि उत्पाद तथा पशुपालन ग्रीनहाउस गैसों के 11.6% उत्सर्जन के लिए उत्तरदायी है।
- आर्थिक विकास के बढ़ने के साथ-साथ आवास, व्यवसाय तथा यातायात के साधनों का उपयोग बढ़ता है। वर्तमान समय में यातायात के साधनों के द्वारा 13.2% ग्रीन हाउस गैस तथा आवास तथा व्यवसायिक स्थानों से 7.5% ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन होता है।
- वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व उद्योग से सेवा की तरफ बढ़ रहा है जिसमें इन. फॉरमेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी की महती भूमिका है इंफॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशन तकनीक के डिवाइसों यथा मोबाइल, कम्प्यूटर के उपयोग में हो रही वृद्धि से ई-वेस्ट बढ़ रहा है।
- लॉजिस्टिक, पैकेजिंग इत्यादि में प्लास्टिक का व्यापक प्रयोग एक बड़ी समस्या को जन्म दे रहा है। भारी मात्रा में प्लास्टिक प्रदूषण जैव विविधता को क्षति पंहुचा रहा है।
- इसके अलावा गरीबी से जनित पलायन की समस्या के कारण स्लम इत्यादि में वृद्धि होती है जो शहरी क्षेत्रों को पर्यावरणीय रूप से अस्थिर बनाता है। इसके फलस्वरूप संसाधनों पर दबाव बढ़ता है तथा पर्यावरण की गुणवत्ता में गिरावट आती है, उत्पादकता कम हो जाती है और गरीबी बढ़ जाती है।

यह अनुसंधान किस प्रकार पर्यावरण सं. रक्षण तथा आर्थिक विकास में संतुलन बनाने में सहायक होगा ?

- सेंटर फॉर क्लाइमेट एनर्जी सलूशन के अनुसार कार्बन डाइऑक्साइड ग्रीन हाउस गैसों के 76% उत्सर्जन के लिए उत्तरदाई है। यह अनुसंधान कार्बन डाइऑक्साइड को कार्बन मोनो ऑक्साइड तथा एथिलीन में परिवर्तित करता है जिससे ग्रीन हाउस गैसों के सांद्रण में कमी आएगी।
- कार्बन उत्सर्जन को कम करने के साथ

ही साथ यह स्टील सीमेंट तेल तथा गैस उद्योगों की आर्थिक लागत को भी कम कर सकता है जिससे यह तकनीकी पर्यावरण ीय असंतुलन तथा आर्थिक वृद्धि में संतुलन स्थापित करने में सहायक होगी।
- इस प्रक्रिया में निर्मित होने वाला एथिलीन पानी की बोतलों से लेकर पीवीसी पाइप, टायर और इंसुलेशन में पाए जाने वाले टेक्सटाइल और रबर तक प्लास्टिक की एक श्रृंखला में किया जाता है।
- ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 25.6% विद्युत ताप गृह का योगदान होता है। इस प्रकिया में विद्युत् तापगृहों से उत्सर्जित होने वाले कार्बनडाई आक्साइड का आर्थिक प्रयोग किया जाएगा।

इस तकनीक के प्रयोग के समक्ष चुनौतियाँ :

- इस प्रकार की तकनीक कार्बन डाई आक्साइड के उत्सर्जन कम करने का प्रयास नहीं करती। यह मात्र कार्बन का शमन करती है।
- इस तकनीक के पेटेंट राइट्स के उप. रान्त यह अन्य देशो को महंगे मूल्य में प्राप्त होगी जो एक बड़ी समस्या है।
- अनुसन्धान कर्ताओं ने यह बताया है कि इस तकनीक के वहनीय होने तथा इसके उपयोग में लाने में 10 वर्ष से अधिक समय लगेगा अत: हम यह कह सकते हैं कि यह जलवायु परिवर्तन के त्वरित प्रभावों को रोकने में सक्षम नहीं होगी।
- इस तकनीक के एक चरण में का. र्बन मोनो ऑक्साइड की उत्पत्ति हो रही है जो ओजोन लेयर के क्षरण तथा ग्लो. बल वार्मिंग को बढ़ने में योगदान देती है।
- इस प्रक्रिया से निर्मित एथलीन की उत्प. ादकता भी शंका के घेरे में है। यह तकनीक जनसामान्य द्वारा प्रयोग नहीं हो पायेगी।
- सोलर ऊर्जा, पवन ऊर्जा जैसे नवीकर. णीय ऊर्जा स्रोतों से ऊर्जा आपूर्ति पर्यावरण के लिए अपेक्षाकृत अधिक उचित है।

निष्कर्ष

यद्यपि यह तकनीक कार्बन उत्सर्जन को हतोत्साहित नहीं करती परन्तु यह वर्तमान में हो रहे कार्बन उत्सर्जन को कम कर सकती है। यह तकनीकी ग्रीनहाउस गैसों के शमन तथा सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, जो वर्तमान की पर्यावरणीय समस्याओं के लिए अनिवार्य है। इसके साथ ही पेंटेंट राइट्स जैसे मुद्दों को हल करके इस तकनीक के अन्य देशो में हस्तांतरण को महत्व देकर वैश्विक स्तर पर कार्बन उत्सर्जन को कम किया जा सकता है।

NOTES

भारत में साम्प्रदायिकता की समस्या

सन्दर्भ

वर्तमान समय में भारत के कई हिस्सों में सांप्रदायिकता के तत्व देखे जा रहे हैं। यह भारत के राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को कहीं ना कहीं प्रभावित कर रहे हैं।

परिचय

भारत धार्मिक विविधता से परिपूर्ण एक देश है जहां पिछले कुछ समय संप्रदायिकता के तत्व देखे जा रहे हैं। 2019 में नागरिकता संशोधन अधिनियम पर विवाद, वर्तमान का हिजाब विवाद ,कश्मीर फाइल्स इत्यादि कई मुद्दे हैं जिनके द्वारा सांप्रदायिक भावना के प्रसारित होने की संभावनाएं हैं। वर्तमान समय में भारत के समाज में सांप्रदायिकता की समस्या एक जटिल समस्या है जो समाज, राजनीति तथा आम जनजीवन को व्यापक स्तर पर प्रभावित करती है। भारतीय राजनी. ति में धर्म तथा जाति के महत्व के कारण संप्रदायिकता राजनीति के दुष्प्रभाव के रूप में भी देखी जा सकती है। इस प्रकार यह सांप्रदायिकता भारत के अनेकता में एकता तथा बंधुत्व को प्रभावित कर राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में बाधक बनती है।

क्या है साम्प्रदायिकता

सांप्रदायिकता एक विचारधारा है जिसके अनुसार कोई समाज भिन्न-भिन्न हितों से युक्त विभिन्न धार्मिक समुदायों में विभाजित होता है।जब धर्म का प्रयोग राजनैतिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है तब सांप्रदायिकता की भावना व्यापक रूप से विकसित होती है। सांप्रदायिकता के मूल में देखें तो हम यहां पाते हैं कि यह एक राजनीतिक समस्या है ना थी एक धार्मिक तथा सामाजिक समस्या।. सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि संप्रदा. यिकता एक आधुनिक समस्या है प्राचीन तथा मध्य काल में इसके तत्वों का विकास ना के बराबर था।

भारत में साम्प्रदायिकता का विकास

- भारत की सांप्रदायिकता मुख्य रूप से ब्रिटिश शासन की देन है। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के उपरांत अंग्रेजों ने इस विद्रोह के लिए मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को दोषी मानते हुए भारत के मुसल. मानों के प्रति अत्यंत कठोर तथा भेदभाव पूर्ण नीति का अनुपालन किया। तथा इस विद्रोह के लिए पूर्णता भारतीय मुसलमानों को उत्त. रदाई ठहराया। इस दौरान अंग्रेजी हिंदू समाज को आगे बढ़ा रहे थे।
- 1885 में कांग्रेस की स्थापना के बाद राष्ट्रवाद के विकास को प्रभावित करने के उद्देश्य से अंग्रेजों ने नीति में परिवर्तन किया तथा अंग्रेजो के द्वारा भारतीय मुसल. मानों को संरक्षण देते हुए हिंदुओं के साथ भेदभाव किया जाने लगा।
- इसी समय भारत में सांप्रदायिक राष्ट्रवाद की एक लहर बनी जिसमें बाल गंगाधर तिलक, सर सैयद अहमद खान इत्यादि के द्व ारा धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग कर राष्ट्रवाद तथा विकास को बढ़ाने का प्रयास किया गया जिससे राष्ट्रवाद के साथ-साथ सांप्रदा. यिकता भी बढ़ी।
- 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना के उपरांत अंग्रेजो के द्वारा मुस्लिम लीग को समर्थन तथा संरक्षण दिया गया। भारत में 1905 में किया गया बंगाल विभाजन मुस्लिम तुष्टीकरण का एक बड़ा प्रयास था।
- 1909 में मार्ले मिंटो सुधार में मुस्लिम समुदाय के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था की गई जिसने संप्रदायिकता को और अधिक बढ़ा दिया।
- सांप्रदायिकता के विकास में 1916 के लखनऊ समझौते को भी माना जा सकता है क्योंकि इसमें कांग्रेस के द्वारा मुस्लिम प्रतिनिधित्व के रूप में मुस्लिम लीग को मान्यता दी गई। कांग्रेस- मुस्लिम लीग एकता के फलस्वरूप खिलाफत आंदोलन ,असहयोग आंदोलन इत्यादि में हिंदू मुस्लिम एकता दिखी परंतु यहां अस्थाई थी।
- 1937 के उपरांत सांप्रदायिकता का उग्रवादी चरण आरंभ हुआ। चुनाव में मिली असफलता के फलस्वरूप मुस्लिम लीग ने आक्रामक नीति अपनाते हुए यह नारा दिया कि "हिंदू तथा मुस्लिमों के हित न सिर्फ एक दूसरे से अलग है बल्कि एक दूसरे के विरो. धाभासी भी हैं"।
- इसी समय चौधरी रहमत अली नामक एक व्यक्ति के द्वारा पाकिस्तान की अवधारणा दी गई तथा मुस्लिम लीग ने ष्द्विराष्ट्र सिद्धांतष की मांग आरंभ की।
- इन घटनाओं की परिणति 1947 में धर्म के आधार पर भारत के विभाजन के रूप में हुई। विभाजन में भी व्यापक स्तर पर सांप्रदा. यिक दंगे देखे गए।
- 1947 के बाद आज 75 वर्ष बीतने के बाद भी सांप्रदायिकता समाप्त न हो सकी है तथा निरंतर भारतीय लोकतंत्र तथा राष्ट्र निर्माण को चुनौती देती रहती।

देश में सांप्रदायिकता से संबंधित कुछ प्रमुख घटनाएँ:

- वर्ष 1947 में भारत का विभाजन तथा नोआखली में विवाद
- वर्ष 1984 में सिख विरोधी दंगे
- वर्ष 1989 में घाटी से कश्मीरी पंडितों का निष्कासन
- वर्ष 1992 में बाबरी मस्जिद विवाद
- वर्ष 2002 में गुजरात में दंगे
- वर्ष 2013 में मुजफ्फरपुर में दंगे इत्यादि।

- वर्ष 2019 में नागरिकता संशोधन अधिनियम में सांप्रदायिक विरोध

सांप्रदायिकता के मुख्य कारण

- भारत की राजनीति में धर्म तथा जाति विशेष भूमिका निभाती है । धार्मिक तुष्टीकरण के द्वारा विशेष धार्मिक संप्रदायों को वोट बैंक के रूप में प्रयोग किया जाता है जिसके फल स्वरूप यह तुष्टीकरण आगे बढ़कर सांप्रदायिकता में परिणत हो जाता है।
- बढ़ती असमानता के फलस्वरूप बढ़ने वाली गरीबी तथा बेरोजगारी के कारण लोगों के मन में असंतोष का भाव बढ़ने लगता है ।लोगों का विश्वास सरकार से कम होकर सांप्रदायिक संगठनों में हो जाता है जिससे सांप्रदायिकता बढ़ती है।
- पुलिस तथा प्रशासन पर राजनीतिक दबाव के कारण इन सांप्रदायिक तथा को रोकने में असमर्थता रहती है। प्राय: विभिन्न राजनीतिक दलों पर किसी वर्ग विशेष को विशेष प्रशासनिक सुविधा प्रदान करने के आरोप लगते रहते हैं।
- किसी धर्म विशेष के प्रति शंका तथा उत्पीड़न की भावना लोगों में सांप्रदायिकता की भावना को बढ़ाती है ।इसका उदाहरण कोरोना काल के दौरान भी देखा गया था।
- वर्तमान समय में सोशल मीडिया तथा टीवी मीडिया के द्वारा संप्रदायिकता के संदर्भ में फेक न्यूज तथा पेड न्यूज के बढ़ते प्रसारण कारण भी संप्रदायिकता की भावना का तेजी से विकास हो रहा है।

सांप्रदायिकता के प्रभाव

- सांप्रदायिकता की धारणा लोकतंत्र, मानवीय गरिमा, राष्ट्र की सत्ता तथा धर्मनिरपेक्षता का विरोध करती है।
- सांप्रदायिकता के फलस्वरूप आपसी सौहार्द कम होता है जिससे समाज में अराजकता फैलती है।
- सांप्रदायिक हिंसा मुख्य रूप से जन सामान्य को प्रभावित करती है तथा उन्हें विस्थापन तक का शिकार होना पड़ता है जैसा कि 1990 में कश्मीर घाटी में देखा गया था।एक आरटीआई के अनुसार 2006 से 2017 के मध्य 1600 से अधिक लोगों की मृत्यु सांप्रदायिक झड़पों में हुई है।
- सांप्रदायिकता के कारण समाज में एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के लोगों को संदेह की दृष्टि से देखने लगते हैं जिससे आपसी भाईचारा कम होता है।
- सांप्रदायिकता राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को बाधित करता है तथा संवैधानिक मूल्यों पर भी प्रश्नचिन्ह करता है।
- यह देश की आंतरिक सुरक्षा को एक बड़ी चुनौती प्रस्तुत करता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश की छवि को धूमिल करता है।

साम्प्रदायिकता की समस्या का निस्तारण

संप्रदायिकता को रोकने के लिए मुख्य रूप से निम्न कार्यो को करने की आवश्यकता है :

- सर्वप्रथम आवश्यक है कि संवैधानिक मूल्य यथा धर्मनिरपेक्षता बंधुत्व राष्ट्रीय एकता इत्यादि को समाज में नैतिक मूल्यों के रूप में प्रसारित किया जाए। इसके लिए स्कूलों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।
- सांप्रदायिक समस्या के निस्तारण के लिए पुलिस बल को विशेष प्रशिक्षण दिया जाए जिससे उन्हें सांप्रदायिक समस्याओं की गंभीरता को समझ कर संवेदनशील व्यवहार प्रस्तुत करें।
- संप्रदायिक मामलों को सुधारने के लिए विशेष रुप से आपराधिक न्याय प्रणाली को बेहतर किया जाए संप्रदायिक मामलों का त्वरित निस्तारण हो सके तथा पीड़ितों को मुआवजा व दोषियों को सजा मिल सके।
- सांप्रदायिक हिंसा (रोकथाम नियंत्रण तथा पीड़ितों का पुनर्वास) विधेयक 2005 को व्यापक ढंग से लागू करने की आवश्यकता है।
- आर्थिक विकास को महत्व दिया जाए क्योंकि रोजगार तथा आर्थिक उन्नति में लगा हुआ व्यक्ति के संप्रदायिक चीजों की तरफ आकर्षित होने की संभावना कम रहती है।

निष्कर्ष

साम्प्रदायिकता एक विशद समस्या है जो समाज को दूषित करने के साथ साथ राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को बाधित करती है। अत: यह आवश्यक है कि सांप्रदायिकता को रोकने में धर्मगुरु तथा राज्य दोनों को एक साथ आकर काम करें इसी से समाज पूर्ण रूप से सांप्रदायिकता की समस्या से मुक्त हो सकेगा तथा राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया पूर्ण हो सकेगी ।

NOTES

एग्रीटेक : भारत में फार्मिंग (एफएएएस) को सेवा के रूप में सक्षम करता

चर्चा में क्यों:

एग्रीटेक पारिस्थितिकी तंत्र ने भारत में स्टार्ट-अप की वृद्धि में योगदान दिया है जो टेक मार्केटप्लेस, भंडारण और परिवहन सेवाओं और कृषि विज्ञान सलाहकार सेवाओं जैसे प्रौद्योगिकी-आधारित समाधान प्रदान करते हैं, जबकि बड़े पारंपरिक खिलाड़ी परिचालन लागत को कम करना चाहते हैं और अधिक कुशलता से पैमाने का प्रबंधन करने की इच्छा रखते हैं।

Agritech क्या है?

यह मुख्य रूप से कंपनियों और स्टार्टअप उद्यमों के एक पारिस्थितिकी तंत्र को संदर्भित करता है जो उपज, दक्षता बढ़ाने के उद्देश्य से उत्पादों या सेवाओं को वितरित करने के लिए तकनीकी पर पूंजी लगा रहे हैं जिससे समय और लागत दोनों के संदर्भ में किसानों को लाभ प्राप्त हो रहा है।

FaaS पारिस्थितिकी तंत्र

- किसानों, उपकरणों और सेवा प्रदाताओं, प्रौद्योगिकी और वित्तपोषण फर्मों और उपभोक्ताओं का पारिस्थितिकी तंत्र एफएएएस से विकसित हो सकता है। चूंकि किसान केवल अपनी आवश्यकताओं को मौसमी रूप से अलग-अलग बेहतर तरीके से जानते हैं इसलिए वे भागीदारों के रूप में कार्य करते हैं और एग्रीटेक प्लेटफार्मों और मोबाइल ऐप के साथ सेवा को सह-प्रोड्यूस करते हैं।
- थैं स्टार्ट-अप, पारस्परिक लाभ के लिए बाजार के अवसर को संबोधित करने के लिए किसानों और उपकरण मालिकों को जोड़ते हैं। एफएएएस कई व्यावसायिक मॉडलों का उपयोग करता है, जिसमें खेत-से-गोदाम, खेत-से-मिल और खेत-से-कांटा तक शामिल हैं, जो किसानों को बाजार से जोड़ते हैं। एक विशाल क्षमता को देखते हुए आइबीएम जैसे तकनीकी दिग्गज भी इस पर बड़ा दांव लगा रहे हैं।
- **FaaS** मॉडल सभी पार्टियों यानी किसानों, कृषि उपकरण निर्माताओं, सहकारी और सरकार को एक ही मंच पर लाते हैं। जबकि कुछ एग्रीटेक खिलाड़ी सस्ती कीमतों पर उपकरण-उन्मुख सेवाएं प्रदान करते हैं, उदाहरण के लिए, भूमि की तैयारी, फसल कटाई, और प्रबंधन, एग्रीबोलो के अभिनव स्वीकृत मॉडल जैसे कि खेत-से-कांटा किसानों को बाजारों से जोड़ते हैं, जिसमें बैंक और वित्तीय संस्थान शामिल हैं जो कम ब्याज दरों की पेशकश करते हैं। चूंकि सरकार फसल बीमा सर्वेक्षणों के लिए ड्रोन को बढ़ावा दे रही है, भूमि रिकॉर्ड बनाए रखने और कीटनाशकों का छिड़काव कर रही है, इसलिए व्यापक रूप से अपनाने के लिए सस्ती कीमतों की आवश्यकता होती है।

भारत में कृषि-तकनीक का अवलोकन

- समग्र एग्रीटेक पारिस्थितिकी तंत्र ने वित्त वर्ष 2019-20 के दौरान लगभग 85 प्रतिशत की राजस्व वृद्धि की है। अन्र्स्ट एंड यंग 2020 के एक अध्ययन में 2025 तक भारतीय कृषि बाजार की क्षमता 24 बिलियन अमेरिकी डॉलर है, जिसमें से अब तक केवल एक प्रतिशत पर पहुचं बनाया गया है।
- इस बीच, मार्च 2022 में भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) और बैन एंड कंपनी के संयुक्त तत्वाधान में आई रिपोर्ट इंगित करती है कि निजी इक्विटी निवेशकों ने एग्रीटेक उद्योग में प्रणालीगत मुद्दों और इसके सतत विकास पर ध्यान केंद्रित किया है। 2017 और 2020 के बीच एग्रीटेक स्टार्ट-अप में निजी इक्विटी निवेश 66 बिलियन रुपये था, जो 50 प्रतिशत से अधिक की दर से बढ़ रहा था।

ग्रामीण माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र में दिसंबर 2019 में **INR** 1.22 ट्रिलियन से मार्च 2021 में **INR** 1.46 ट्रिलियन तक की वृद्धि रही है। कृषि ऋण वित्त वर्ष 2014-15 में **INR** 8 ट्रिलियन से बढ़कर वित्त वर्ष 2019-20 में **INR** 14 ट्रिलियन हो गया।

- रिपोर्ट में कहा गया है कि एग्रीटेक स्टार्ट-अप की वृद्धि ने प्रौद्योगिकी-आधारित समाधानों जैसे ऑफ टेक मार्केटप्लेस, भंडारण और परिवहन सेवाओं और कृषि विज्ञान सलाहकार सेवाओं की पेशकश करने के लिए पारिस्थितिकी तंत्र में प्रवेश किया है, जबकि बड़े पारंपरिक खिलाड़ी परिचालन लागत को कम करना चाहते हैं और इन-हाउस समाधानों और उभरते खिलाड़ियों के साथ नई साझेदारी के माध्यम से पैमाने का प्रबंधन करना चाहते हैं। आईबीएम और माइक्रोसॉफ्ट जैसे वैश्विक प्रौद्योगिकी दिग्गज फसल स्वास्थ्य निगरानी और उपज के अनुमानों के लिए अभिनव समाधानों को देख रहे हैं।
- देश में इंटरनेट की बढ़ती पहुंच और ग्रामीण क्षेत्रों में इसके विकास को प्राथमिकता के साथ, भारत कृषि में बदलते तरीकों और पारंपरिक व्यापार मॉडल से एग्रीटेक के विभिन्न नए व्यापार मॉडलों को अपनाने के लिए अच्छी तरह तैयार है।

छोटे भू-धारक प्रौद्योगिकी को कैसे वहन और एक्सेस कर सकते हैं?

- नवाचार को स्वीकार्य करने में ही उत्तर निहित है। टिकाऊ खाद्य उत्पादन के लिए संसाधन-गहन, उच्च-इनपुट खेती के तरीकों से दीर्घकालिक, परिणाम-आधारित सेवाओं में संक्रमण की आवश्यकता होती है। यहां तक कि छोटे किसान उभरती अर्थव्यवस्थाओं में रामबाण के रूप में एक सेवा (एफएएएस)

के रूप में खेती को अपना सकते हैं।

- यह हितधारकों में एक नई रुचि का निर्माण करता है। जैसे इस सन्दर्भ में सरकारों, गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ), निजी क्षेत्र, और उद्यम पूंजीपतियों ने स्टार्ट-अप को वित्त पोषित किया है। एक टोल-फ्री नंबर और एक मोबाइल ऐप किसानों को उनके उपकरण और सेवाओं से जोड़ता है। उपकरण के खराब और परिणामस्वरूप अप्रत्याशित नुकसान परिहार्य हैं क्योंकि किसान केवल उपकरण उपयोग सेवा के लिए भुगतान करते हैं।
- डिजिटल कृषि किसानों की लाभप्रदता में सहायता करती है। यह डिजिटल उपकरणों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करता है जो किसानों को उत्पादकता बढ़ाने और क्षमता को चलाने के लिए सूचित निर्णय लेने की अनुमति देता है। यह फसल स्वास्थ्य और कटाई का प्रबंधन करने के लिए मशीन के प्रदर्शन और उपग्रह छवियों को निर्धारित करने के लिए उच्च तकनीक उपकरणों का उपयोग करता है। इसमें फार्म मशीनरी स्वचालन, रोबोटिक्स, कनेक्टेड मौसम स्टेशन, फसलों की निगरानी के लिए उपग्रह डेटा और सेंसर, और आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुव्यवस्थित करने के लिए आवागमन की सेवाएं भी शामिल हैं। पानी और रसायनों के सटीक अनुप्रयोग के साथ, डिजिटल कृषि एक गेम-चेंजर के रूप में कार्य करती है।

एग्रीटेक भारत के कृषि क्षेत्र में उत्पादकता और दक्षता में कैसे सहायता करता है?

एग्रीटेक क्षेत्र के भीतर विभिन्न खंड, जो समग्र मूल्य श्रृंखला का समर्थन करते हैं। वे हैं:

- **बाजार लिंकेज:-** डिजिटल मार्केटप्लेस और भौतिक बुनियादी ढांचे किसानों को इनपुट से जोड़ने के लिए।
- **बायोटेक:** पौधे और पशुविज्ञान और जीनोमिक्स पर अनुसंधान।
- **एक सेवा के रूप में खेती:** एक भुगतान-प्रति-उपयोग के आधार पर किराए के लिए कृषि उपकरण।
- परिशुद्धता कृषि और कृषि प्रबंधन: उत्पादकता में सुधार करने के लिए भू-स्थानिक या मौसम डेटा, आईओटी, सेंसर, रोबोटिक्स आदि का उपयोग; संसाधन और क्षेत्र प्रबंधन, आदि के लिए कृषि प्रबंधन समाधान
- फार्म मशीनीकरण और स्वचालन: औद्योगिक स्वचालन सीडिंग, सामग्री हैंडलिंग, कटाई, आदि में मशीनरी, उपकरण और रोबोट का उपयोग करके।
- फार्म बुनियादी ढांचा: कृषि प्रौद्योगिकियां, जैसे ग्रीनहाउस सिस्टम, इनडोर-आउटडोर खेती, ड्रिप सिंचाई और पर्यावरण नियंत्रण, जैसे हीटिंग और वेंटिलेशन, आदि।
- गुणवत्ता प्रबंधन और उपलब्धता: कटाई के बाद उत्पादन हैंडलिंग, गुणवत्ता की जांच और विश्लेषण, उत्पादन की निगरानी, और भंडारण और परिवहन की उपलब्धता का पता।
- आपूर्ति श्रृंखला तकनीक और आउटपुट मार्केट लिंकेज: फसल के बाद की आपूर्ति श्रृंखला को संभालने और ग्राहकों के साथ खेत के उत्पादन को जोड़ने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म और भौतिक बुनियादी ढांचा।
- वित्तीय सेवाएं: इनपुट खरीद, उपकरण, आदि के साथ-साथ बीमा या फसल के पुनर्बीमा के लिए क्रेडिट सुविधाएं।
- सलाहकार / सामग्री: कृषि, मूल्य निधारण, बाजार की जानकारी के लिए सूचना प्लेटफॉर्म ऑनलाइन प्लेटफॉर्म।

आगे की राह :

- **FaaS** प्रयास अभी भी सीमित हैं क्योंकि विशाल क्षमता और गुंजाइश के बावजूद पहुंच केवल कुछ राज्यों तक सीमित है। अधिकांश स्टार्टअप स्केलेबिलिटी समस्याओं का सामना करते हैं। **Oñen Farm Solution** और **Gold Farm** जैसे कुछ स्टार्ट-अप भारी फंडिंग के कारण पहले से ही बंद हो गई है। गोल्ड फार्म का प्लेटफॉर्म केवल 250 बुकिंग एजेंटों और 500 ट्रैक्टर मालिकों को किसानों के साथ जोड़ सकता है। केवल बड़े व्यापारिक वर्ग, उदाहरण के लिए, एम एंड एम आदि देश भर में काम कर सकते हैं।
- सड़क या रेल द्वारा खराब होने वाले कृषि उत्पाद परिवहन के लिए कोल्ड चेन की उपलब्धता भारत में एक बाधा है। एयरलिफ्टिंग में काफी अधिक माल ढुलाई लागत होती है। कोल्ड चेन समाधान की पेशकश करने वाली तकनीकी-सक्षम फर्मों के लिए एक बड़े पैमाने पर क्षमता है जो इन्फ्रा-शेयरिंग में एक विशाल अवसर के रूप में है। **FaaS** स्टार्ट-अप के स्केलेबिलिटी के लिए अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम सेवाओं में विभिन्न मॉडलों की आवश्यकता होती है।
- **FaaS** वैश्विक खाद्य की कमी की समस्याओं को हल करने के लिए टिकाऊ खाद्य उत्पादन में वृद्धि करने का वादा करता है। किसानों को सशक्त बनाना और न केवल उन्हें बाजार के अनुरूप बनाना समय की मांग है बल्कि डिजिटल प्रौद्योगिकियों के साथ खेती को एक सम्मानजनक पेशे के रूप में स्थापित कर सकता है।

NOTES

उत्तर-पूर्व के लिए अंतर्देशीय-जल परिवहन प्रणाली को पुनर्जीवित करना

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में, भारतीय खाद्य निगम (एफ.सीआई) के लिए 200 मीट्रिक टन अनाज ले जाने वाला एक जहाज, 6 मार्च को ब्रह्मपुत्र के दक्षिणी तट पर गुवाहाटी के पांडु बंदरगाह पर डॉक किया गया।
- अनाजों का यह परिवहन भारत की दो सबसे बड़ी नदी प्रणालियों (गंगा और ब्रह्मपुत्र) पर अंतर्देशीय जल परिवहन द्वारा संपन्न हुआ है।

पृष्ठभूमि :-

- बांग्लादेश के रास्ते भारत में गंगा बेल्ट से पूर्वोत्तर तक कार्गो की शिपिंग एफसीआई की पायलट परियोजना थी।
- 2018 में एक पायलट प्रयोग किया गया था। जब 1,233 टन बैग्ड फ्लाई ऐश ले जाने वाले दो 1,000 टन के बार्जों ने एक महीने से अधिक समय तक बिहार के कहलगांव से पांडू तक 2,085 किमी की यात्रा की थी। एक निजी कंपनी ने असम और मेघालय में अपने सीमेंट कारखानों में उपयोग के लिए बिहार में राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम के संयंत्र से फ्लाई ऐश की खरीद की थी।

- एफसीआई कार्गो से शुरू हुई पूर्वोत्तर के लिए एनडब्ल्यू 1 और एनडब्ल्यू 2 के बीच सेवा अंतर्देशीय जल परिवहन में एक नए युग की शुरुआत है। जो आगे चलकर ऐसी नियमित सेवाओं की उम्मीद जगती है।

- आईडब्ल्यूएआई के अनुसार, विकास प्रक्रिया पहले ही पूर्वी असम की नुमालीगढ़ बायो-रिफाइनरी के लिए निर्धारित 252 मी.ट्रिक टन कार्गो के साथ शुरू हो चुकी है, जिसे पश्चिम बंगाल में हल्दिया से मध्य असम के सिलघाट तक पूरा करना है।

> प्रधानमंत्री गति शक्ति पहल की परिक.ल्पना पूर्वोत्तर को धीरे-धीरे एक कनेक्टिविटी हब में बदलने और ब्रह्मपुत्र पर कार्गो की आवाजाही को तेजी से बढ़ाने के लिए की गई है, जो बांग्लादेश में गंगा से मिलती है।

जलमार्ग के लाभ :-

- **तुलनात्मक लाभ :-** अंतर्देशीय जलमार्ग परिवहन के अन्य साधनों की तुलना में अत्यधिक लागत प्रभावी और पर्यावरण के अनुकूल हैं, विशेष रूप से लंबी दूरी में। भारतीय रेलवे की एक शाखा रेल इंडिया तकनीकी और आर्थिक सेवा के अनुसार, अंतर्देशीय जल परिवहन रेल और सड़क परिवहन की तुलना में काफी लागत-कुशल है।
- **डी-कनजेसन को बढ़ावा मिलता है :-** अंतर्देशीय जलमार्ग परिवहन भा.रत में रेल और सड़क नेटवर्क की भीड़-भाड़ को कम करने में मदद करेगा।
- **क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देना :-** भारत और नेपाल के बीच व्यापार संधि में अंतर्देशीय जलमार्ग मोड पर सहमति व्यक्त की गई है। हाल ही में, भूटान के पत्थर निर्यातकों ने अंतर्देशीय जलमार्गों को परिवहन के वैकल्पिक साधन के रूप में पहचाना है।
- **कुशल और प्रभावी ऊर्जा की खपत :-** एक अश्वशक्ति, पानी में 4000 किलोग्राम भार ले जा सकती है जबकि यह सड़क और रेल द्वारा क्रमशः 150 किलोग्राम और 500 किलोग्राम भार ले जा सकती है।
- **कम रखरखाव लागत :-** नहरों के निर्माण और रखरखाव की लागत बहुत कम है। इसके अलावा, अंतर्देशीय जल परिवहन के संचालन की लागत भी बहुत कम है।

भारत में अंतर्देशीय जलमार्गों की सीमाएं :-

- **बाढ़ और सूखे की घटना :-** मानसून के समय नदियों में बाढ़ आ जाती है, जबकि शेष वर्ष में, पानी की कमी रहती है।
- **भारतीय दुविधा :-** सिंचाई या परिवहन में से किसके के लिए पानी का उपयोग किया जाये?
- उत्तर पूर्व भारत की नदियां चट्टानी क्षेत्रों से होकर बहती हैं। इसलिए वे कई क्षेत्रों में झरने का निर्माण करती हैं ऐसे में ये स्थान नाव चलाने के लिए उपयुक्त नहीं हैं।
- **खराब इंड-टू-इंड कनेक्टिविटी :-** नौकाओं की तुलना में, रेलवे के पास अंतिम छोर तक की बेहतर कनेक्टिविटी है।

पूर्वोत्तर के लिए गंगा-ब्रह्मपुत्र अंतर्देशीय जलमार्गों का महत्व :-

- **महत्वपूर्ण टर्मिनलों के माध्यम से मार्ग :-** यह जहाज भारत में भागलपुर, मनिहारी, साहिबगंज, फरक्का, त्रिबनी, कोल.काता, हल्दिया, हेमनगर, बांग्लादेश में खुलना, नारायणगंज, सिराजगंज और चिलमारी और फिर से राष्ट्रीय जलमार्ग-2 (एनडब्ल्यू 2, ब्रह्मपुत्र नदी) पर भारत में धुबरी और जोगीघोपा के माध्यम से 2,350 किमी की दूरी तय करते हुए भारत के दुसरे छोर तक पहुंचा है।
- भारतीय खाद्य निगम के लिए 200 मीट्रिक टन खाद्यान्न ले जाने वाले पोत की सफल डॉकिंग ने अंतर्देशीय जल परिवहन

प्रणाली के लिए आशा को फिर से जगाया है, जिस पर 1947 में भारत की स्वतंत्रता से पहले पूर्वोत्तर में भारी निर्भरता थी।

- **समग्र विकास के लिए कनेक्टिविटी महत्वपूर्ण है :-**

- स्वतंत्रता के आसपास, असम की प्रति व्यक्ति आय देश में सबसे अधिक थी क्योंकि ब्रह्मपुत्र और बराक नदी (दक्षिणी असम) प्रणालियों के माध्यम से बंगाल की खाड़ी के बंदरगाहों तक चाय, लकड़ी, कोयला और तेल उद्योगों की पहुंच संभव हो पाती थी।
- 1947 के बाद नौका सेवाएं छिटपुट रूप से जारी रहीं, लेकिन पाकिस्तान के साथ 1965 के युद्ध के बाद (बांग्लादेश तब पूर्वी पाकिस्तान था) बंद हो गईं थी।
- नदी के मार्गों को काट दिए जाने और पश्चिम बंगाल में एक संकीर्ण पट्टी "चिकन नेक" के माध्यम से रेल और सड़क के विकल्प बनने के बाद परिदृश्य बदल गया।
- भारत-बांग्लादेश प्रोटोकॉल (आईबीपी) मार्ग के माध्यम से कार्गो आवागमन की शुरुआत व्यापार समुदाय को एक व्यवहार्य, आर्थिक और पारिस्थितिक विकल्प प्रदान करने जा रही है।
- निर्बाध कार्गो परिवहन पूर्वोत्तर के विकास के लिए एक आवश्यकता रही है।

- **पूर्वोत्तर के लिए हब-स्पोक मॉडल आधारित विकास के लिए सरकार की सहायता :-**

- प्रधानमंत्री गति शक्ति पहल की परिकल्पना पूर्वोत्तर को धीरे-धीरे एक कनेक्टिविटी हब में बदलने और ब्रह्मपुत्र पर कार्गो की आवाजाही को तेजी से बढ़ाने के लिए की गई है, जो बांग्लादेश में गंगा से मिलती है। इन नदियों को उस देश में जमुना और पद्मा कहा जाता है।
- इनके माध्यम से बहुटर्मिनल विकास अन्य क्षेत्रों के लिए सकारात्मक स्पिलओवर प्रभाव प्रदान करेगा।

क्या आप भारत और बांग्लादेश के बीच हस्ताक्षरित 'अंतर्देशीय जल पारगमन और व्यापार प्रोटोकॉल' को जानते हैं?

- बांग्लादेश में जलमार्गों के माध्यम से कार्गो परिवहन सेवा की बहाली दोनों देशों के बीच अंतर्देशीय जल पारगमन और व्यापार प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद से प्रारंभ हुई है।
- भारत ने बांग्लादेश में आईबीपी (भारत-बांग्लादेश प्रोटोकॉल) मार्गों के दो खंडों यथा सिराजगंज-दाइखोवा और आशुगंज-जकीगंज की नौगम्यता में सुधार करने के लिए 305.84 करोड़ रुपये का (कुल निवेश का 80%) निवेश किया है।
- 2026 तक इन दो खंडों पर सात साल की ड्रेजिंग परियोजना से पूर्वोत्तर क्षेत्र में निर्बाध नेविगेशन प्राप्त होने की उम्मीद है।
- **IWAI** अधिकारियों ने कहा कि नेविगेशन के लिए **IBP** मार्गों को मंजूरी दिए जाने के बाद एनडब्ल्यू 1 और एनडब्ल्यू 2 के बीच की दूरी लगभग 1,000 किमी तक कम हो जाएगी।
- सरकार ने 2,000 टन तक वजन वाले जहाजों की सतत आवाजाही के लिए एनडब्ल्यू 1 की क्षमता बढ़ाने के लिए 4,600 करोड़ रुपये के निवेश के साथ जल मार्ग विकास परियोजना भी शुरू की है।

निष्कर्ष :-

- भारतीय खाद्य निगम के लिए 200 मीट्रिक टन खाद्यान्न ले जाने वाले मालवाहक पोत की डॉकिंग ने पूर्वोत्तर में अंतर्देशीय जल परिवहन प्रणाली के लिए आशा को फिर से जगा दिया है।
- यह जहाज भारत में भागलपुर, मनिहारी, साहिबगंज, फरक्का, त्रिबेनी, कोलकाता, हल्दिया, हेमनगर और बांग्लादेश में खुलना, नारायणगंज, सिराजगंज और चिलमारी और फिर से एनडब्ल्यू 2 पर भारत के लिए, धुबरी और जोगीघोपा के माध्यम से 2,350 किमी की दूरी तय करते हुए भारत के पूर्वी छोर तक पंहुचा है।
- बांग्लादेश में जलमार्गों के माध्यम से कार्गो सेवा का परिवहन दोनों देशों के बीच अंतर्देशीय जल पारगमन और व्यापार प्रोटोकॉल के कारण संभव हुआ है।

NOTES

संक्षिप्त मुद्दे

राष्ट्रीय

1 पाकिस्तान में मिसाइल मिसफायर का मामला

• हाल ही में, पाकिस्तान द्वारा सूचना दी गई कि एक भारतीय मिसाइल उसके क्षेत्र के 124 किमी की सीमा के अंदर विस्फोट हुई है। भारत ने स्वीकार किया कि "तकनीकी खराबी के कारण मिसाइल का आकस्मिक फायर हुआ"।

• इस मुद्दे को गंभीरता से लेते हुए प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने सुरक्षा पर कैबिनेट समिति (सीसीएस) को बुलाया।

मिसाइल प्रक्षेपण के संबंध में क्या नियम हैं?

• 2005 में हस्ताक्षरित बैलिस्टिक मिसाइल समझौते के उड़ान परीक्षण के तहत, प्रत्येक देश को जमीन या समुद्र में लॉन्च की गई, सतह से सतह पर मार करने वाली बैलिस्टिक मिसाइल के उड़ान परीक्षण पर एक अग्रिम सूचना देनी होती है।

• परीक्षण से पहले, देश को क्रमशः विमानन पायलटों और नाविकों को सचेत करने के लिए वायु मिशनों **(NOTAM)** या नौवहन चे. तावनी **(NAVAREA)** को नोटिस जारी करना चाहिए।

• परीक्षण करने वाले देश को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रक्षेपण स्थल सीमा से 40 किमी के अंदर नहीं होना चाहिए और प्रभाव क्षेत्र अंतर्राष्ट्रीय सीमा या नियंत्रण रेखा (एलओसी) के 75 किमी के अंदर न हो।

• नियोजित प्रक्षेप पथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा या नियंत्रण रेखा को पार नहीं करना चाहिए और सीमा से कम से कम 40 किमी की क्षैतिज दूरी बनाए रखना चाहिए।

• परीक्षण करने वाले देश को दूसरे देश को "पांच दिन की लॉन्च विंडो के शुरू होने से कम से कम तीन दिन पहले सूचित करना चाहिए, जिसके अंतर्गत वह किसी भी भूमि या समुद्र से लॉन्च की गई या सतह से सतह पर मार करने वाली बैलिस्टिक मिसाइल के उड़ान शामिल है"।

• भारत 2016 से मिसाइल नियंत्रण प्रौद्योगि. की व्यवस्था (एमसीटीआर) का भी सदस्य है।

चूक-

• पाकिस्तानी सशस्त्र बलों के इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस के महानिदेशक, मेजर जनरल बाबर इफ्तिकर ने कहा कि भारतीय और पाकिस्तानी सेनाओं के सैन्य अभियान के महानिदेशक के बीच कोई संपर्क नहीं था।

• मिसाइल परीक्षण का इतना गलत होना अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि वह सीमा पार कर जाए और अनजाने में ट्रैक बदल दे।

कैसी मिसाइल थी?

किसी भी देश ने मिसाइल के प्रकार के बारे में नहीं बताया है। पाकिस्तान ने इसे केवल "सुपरसोनिक" मिसाइल कहा है।

कुछ विशेषज्ञों ने अनुमान लगाया है कि यह रूस के साथ संयुक्त रूप से विकसित भारत की शीर्ष मिसाइल ब्रह्मोस में से एक का परीक्षण था।

ब्रह्मोस को कहीं से भी दागा जा सकता है। यह परमाणु ले जाने सक्षम है और 200-300 किलोग्राम के आयुध ले जा सकता है।

संबंधित भारतीय सामरिक मुद्दे-

• एक जिम्मेदार परमाणु और सैन्य शक्ति के रूप में इस घटना के बाद भारत की प्रतिष्ठा में ह्रास हुआ है।

• रूस-यूक्रेन युद्ध संकट के मद्देनजर इस घटना ने पाकिस्तान के लिए एक निवारक खतरे के रूप में काम किया है।

• **सैन्य खराबी और समन्वय की कमी:** इस मिसफायरिंग ने सेना के सामरिक सैन्य अभियानों की नियामक प्रणाली में समन्वय और खामियों को उजागर किया है।

• **साइबर सुरक्षा खतरा:** उड़ान के दौरान मिसाइल का भटकना एक दुर्लभ घटना है और यह सिस्टम में साइबर सुरक्षा हैक के कारण हो सकता है।

• यह घटना सैन्य अभियानों में अकुशलता और तकनीकी अक्षमता को उजागर करता है।

आगे की राह-

• इस घटना को हल्के में नहीं लिया जा सकता क्योंकि कई प्रश्न अनुत्तरित हैं।

• जिम्मेदार लोगों को त्वरित और कड़ी सजा देकर कोर्ट ऑफ इन्क्वायरी में तेजी लाना ही आगे का रास्ता है।

2 कश्मीर की कालीन को जीआई टैग

खबरों में क्यों?

हाल ही में, जम्मू और कश्मीर सरकार ने अपने प्रसिद्ध कश्मीर की कालीन, जो हाथ से बुने हुए होते है, को क्विक रेस्पांस (क्यूआर) कोड के साथ भौगोलिक संकेत (जीआई) के रूप में रजिस्ट्री शुरू की है। जीआई टैग वाले कालीनों की पहली खेप हाल ही में नई दिल्ली से जर्मनी को निर्यात की गई थी।

कश्मीर की कालीन के बारे में-

- हाथ से बुने हुए कालीनों की उत्पत्ति स्थानीय रूप से "कल बफी" के रूप में भी जानी जाती है, जो 15वीं शताब्दी से मौजूद है।
- इतिहासकारों का कहना है कि सुल्तान जैन-उल-अबिदीन (कश्मीर का प्रसिद्ध राजा) स्थानीय निवासियों को प्रशिक्षित करने के लिए फारस और मध्य एशिया से कालीन बुनकरों को कश्मीर में बसाया।
- 1990 के दशक में, कालीन बुनकरों ने अपना ध्यान ऊन से रेशम के कालीनों पर स्थानांतरित कर दिया।
- रेशम के कालीन लक्जरी ब्रैकेट में आते हैं।
- हालांकि, कश्मीर में रेशम प्रसंस्करण इकाइयों की कमी ने बुनकरों को बाहर से रेशम खरीदने के लिए मजबूर किया, जिससे कालीन की लागत बढ़ गई।
- कश्मीर की कालीन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चीन, तुर्की और बेल्जियम जैसे कालीन निर्यातक देशों से और देश में जयपुर, आगरा, भदोही और अमृतसर में निर्मित कालीनों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है।
- कश्मीरी कालीनों को जीआई टैग जून 2016 में दिया गया था लेकिन पंजीकृत कालीनों को इस साल ही प्रमाणित किया गया।

जीआई टैगिंग क्या है?

भौगोलिक संकेत (जीआई) एक ऐसा नाम या चिन्ह है जिसका उपयोग उन उत्पादों पर किया जाता है जो किसी विशिष्ट भौगोलिक स्थान या उत्पत्ति (जैसे, एक शहर, क्षेत्र या देश) के अनुरूप होते हैं। भौगोलिक संकेत का उपयोग उत्पाद के प्रमाणन के रूप में कार्य करता है जिसमें कुछ विशिष्ट गुण होते हैं। ये उत्पाद पारंपरिक होते हैं तथा अपनी भौगोलिक उत्पत्ति के कारण प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं।

हाल ही में, भारत में जीआई टैग कश्मीरी केसर और मणिपुरी काले चावल को मिला हैं।

कश्मीर की कालीन की जीआई टैगिंग के लाभ-

- जीआई टैग के साथ संलग्न क्यूआर कोड हाथ से बुने हुए कालीनों की वास्तविकता को प्रमाणित करके कश्मीर की कालीन उद्योग को बढ़ाने और उनके गौरव को पुनर्जीवित करने में मदद करेगा।
- क्यूआर कोड को स्कैन करने से कालीन के निर्माता, बुनकर, जिला तथा कच्चे माल की जानकारी तुरंत मिल जाएगी।
- इससे पारंपरिक कालीन की गुणवत्ता को संरक्षित करने में मदद मिलेंगी।
- अन्य देशों को इस कालीन के निर्यात को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।
- यह इस कश्मीर की कालीन को ईरानी और तुर्की के हाथ से बुने हुए कालीनों की गुणवत्ता और कीमत के बराबर ला देगा।
- यह कालीन के उद्योग के भविष्य को बदल देगा।
- उन्हें कानूनी सुरक्षा प्रदान करने में मदद मिलेगी जिससे बुनकरों के हितों की रक्षा होगी।
- शीघ्र अनुमोदन मिलने में सुविधा होगी।

3 कुपोषण से निपटने की मध्य प्रदेश सरकार की नई पहल

चर्चा में क्यों?

हाल ही में, मध्य प्रदेश सरकार ने कृषि विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय कोष (आई.एफ.ए.डी) के साथ साझेदारी में महिलाओं को संतुलित भोजन पकाने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रस्ताव रखा है। मध्य प्रदेश में पांच साल से कम उम्र के 42 प्रतिशत बच्चे कुपो.षित हैं। उचित पोषण नहीं मिलने के कारण वे अविकसित हैं। विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों में यह संख्या और भी भयावह होती जा रही है।

आई.एफ.ए.डी और मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रस्तावित योजना:-

- '7 दिन 7 प्लॉट' कार्यक्रम :- जहां गांव की महिलाओं को सिखाया जाता है कि अपने बगीचे में अलग-अलग सब्जियां कैसे उगाएं, सप्ताह के प्रत्येक दिन के लिए एक सब्जी। कार्यक्रम की खास बात यह है कि सप्ताह के अंत तक पहला प्लाट फिर से कटाई के लिए तैयार हो जाता है। इस तरह परिवारों को ताजी और सस्ती सब्जियां खाने को मिलती हैं, जिनका वे बाजार से खरीदी सब्जी की तुलना में अधिक समय तक और अधिक मात्रा में उपभोग कर सकते हैं। इस प्रकार इस कार्यक्रम के जरिए परिवारों को उपयुक्त पोषण प्राप्त होता है, जिससे वो बीमार कम पड़ते हैं।
- इस योजना को संयुक्त राष्ट्र से संबद्ध आई.एफ.ए.डी द्वारा बालाघाट, डिंडोरी और मंडला जिले में लागू की जाने वाली तेज. स्विनी ग्रामीण महिला अधिकारिता कार्यक्रम से सम्बद्ध किया गया है। आदिवासी बहुल दक्षिण-पूर्व के यह तीन जिले (बालाघाट, डिंडोरी और मंडला) जो मध्य प्रदेश के सबसे गरीब पिछड़े क्षेत्र के अंतर्गत शामिल

हैं, साथ ही उत्तरी भागों में पन्ना, छतरपुर और टीकमगढ़ जहां लिंग-असमानता अधिक है, वहां यह योजना लागू की गयी है।

- **तिरंगा थाली :-** अधिक संतुलित भोजन को प्रोत्साहित करने के लिए, "तिरंगा थाली" परियोजना की अवधारणा पेश की गयी है, जहां प्रत्येक प्लेट में भारतीय ध्वज से तीन रंगों की सामग्री होती है।
- **केसरिया रंग :-** सभी दालें जैसे पीली फूटी मटर, अरहर की दाल, और विभाजित लाल मसूर प्रोटीन का प्रतिनिधित्व करती हैं।
- **सफेद रंग :-** चावल, दूध और रोटी कार्बोहाइड्रेट का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **हरा रंग :-** हरी पत्तेदार सब्जियां विटा. मिन और खनिजों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

इस परियोजना ने मध्य प्रदेश के दूरदराज के इलाकों में 110,000 से अधिक परिवारों को अपने बच्चों और खुद के लिए स्वस्थ भोजन पकाने और खाने में मदद की है।

कुपोषण से निपटने के लिए कुछ पहलें :

- **पोषण अभियान :-** इस अभियान के तहत 130 मिलियन से अधिक बच्चों के लिए, स्वच्छता, एनीमिया, प्रसवपूर्व देखभाल और अन्य मुद्दों के साथ ही इष्टतम स्तनपान में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- **राष्ट्रीय पोषण रणनीति :-** रणनीति का उद्देश्य सबसे कमजोर और महत्वपूर्ण आयु वर्गों पर ध्यान देने के साथ ही 2030 तक सभी प्रकार के कुपोषण को कम करना है। इसका उद्देश्य पोषण और स्वास्थ्य से संबंधित एसडीजी के हिस्से के रूप में पहचाने गए लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करना भी है।
- **एकीकृत बाल विकास सेवाएं (आई. सी.डी.एस) :-** यह 6 वर्ष की आयु तक के बच्चों, गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं और 16-44 वर्ष की आयु की महिलाओं को लक्षित करता है। इस योजना का उद्देश्य लक्षित समुदाय के स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा में सुधार करना है।
- **मध्याह्न भोजन कार्यक्रम :-** मध्याह्न भोजन योजना भारत का एक स्कूल भोजन कार्यक्रम है जिसे देश भर में स्कूली बच्चों की पोषण स्थिति को बेहतर बनाने के लिए डिजाइन किया गया है।
- **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम :-** यह खाद्य सुरक्षा के दृष्टिकोण से एक आदर्श बदलाव का प्रतीक है। यह कानूनी रूप से ग्रामीण आबादी के 75% और शहरी आबादी के 50% भाग को लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (टी.पी.डी.एस) के तहत रियायती दरों पर खाद्यान्न प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करता है।

अंतरराष्ट्रीय

1 इस्लामोफोबिया की समस्या पर संयुक्त राष्ट्र

सन्दर्भ

हाल ही में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इस्ल. ामोफोबिया का मुकाबला करने के लिए 15 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी दी है।

इस्लामोफोबिया के प्रस्ताव के विषय में

- 193 सदस्यों वाली संयुक्त राष्ट्र महासभा में पाकिस्तान ने ऑर्गनाइजेशन ऑफ इस्ला. मिक कॉन्फ्रेंस (ओआईसी) की तरफ से यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया है कि 15 मार्च को 'इंट. रनेशनल डे टू कॉम्बैट इस्लामोफोबिया' यानी 'इस्लाम के प्रति डर से लड़ने का अंतरराष्ट्रीय दिवस' के रूप मनाया जाए।
- इस प्रस्ताव को ओआईसी के 57 सदस्य देशों के अतिरिक्त चीन, रूस सहित अन्य 8 देशों का समर्थन प्राप्त हुआ तथा यह प्रस्ताव पारित कर दिया गया।
- यह प्रस्ताव सभी देशों, निजी क्षेत्र एवं धर्म आधारित संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय संगठनों, संयुक्त राष्ट्र निकायों, नागरिक समाज, से इस्लामोफोबिया को रोकने के बारे में सभी स्तरों पर प्रभावी ढंग से जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न प्रोग्रामो के आयोजन का आह्वान करता है।
- प्रस्तावको ने इस्लामोफोबिया को मु. स्लिम समुदाय के विरुद्ध नफरत फैलाने वाले भाषणों, भेदभाव तथा नस्लीय हिंसा के रूप में संदर्भित किया है।

इस्लामोफोबिया के समर्थन में तर्क

इस्लामोफोबिया से तात्पर्य इस्लाम धर्म के अनुयायियों के विरुद्ध हेट स्पीच, नस्लीय हिंसा से है। ध्यातव्य हो कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद के मामले में इस्लाम धर्म के विरुद्ध एक अलग माहौल बन गया है। यह स्थिति यहाँ तक बढ़ गए है कि फ्रांस ने आतंकवाद के विरुद्ध अपने दस्तावेज में "इस्लामिक आतंकवाद" शब्द का भी प्रयोग कर लिया। यह स्थिति इसलिए बनी क्योंकि वर्तमान में अधिकांश आतंकवादी संगठन (यथा आईएसआईएस, अलकायदा) इस्लामिक विचारधारा के नाम पर अपनी गतिविधियों को अंजाम देते है। इन आतंकी घटनाओं के कारण सामान्य मुस्लिम नाग. रिकों को आशंका तथा घृणा का सामना करना पड़ता है जो एक वृहद समस्या है। इस समस्या के निस्तारण तथा विश्व से

इस्लामोफोबिया के समापन के लिए यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया जिसे संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा मान लिया गया है।

भारत का पक्ष

- भारत द्वारा इस प्रस्ताव का विरोध किया गया है। भारत ने कहा है कि वर्तमान में सांप्रदायिक घृणा केवल अब्राहमिक धर्मों (इस्लाम, यहूदी और ईसाई धर्म) के विरुद्ध ही नहीं, बल्कि हिंदू, बौद्ध और सिख धर्म के खिलाफ भी फैल रही है।
- भारत ने तर्क दिया कि अफगानिस्तान के बामियान में गौतम बुद्ध की प्राचीन प्रतिमा को तोड़ना, गुरुद्वारों को अपवित्र करना, गुरुद्वारों में सिखों का नरसंहार, मंदिरों पर हमला और मूर्तियों को तोड़ना गैर-अब्राहमी धर्मों के विरुद्ध सांप्रदायिक घृणा के साक्ष्य हैं।
- भारत ने तर्क दिया कि 1.2 अरब लोग हिन्दूधर्मावलम्बी हैं तथा बौद्ध धर्म को मानने वाले 53.5 करोड़ लोग हैं। वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में तीन करोड़ से ज्यादा सिख हैं जिन पर भी साम्प्रदायिक तथा नस्लीय हिंसा होती है तथा यह समय है कि हम एक धर्म के स्थान पर सभी धर्मों के प्रति फैल रहे डर के माहौल को समझें।
- इसके साथ ही भारत ने यह भी कहा है कि संयुक्त राष्ट्र का ऐसे धार्मिक मामलों से ऊपर रहना जरूरी है। संयुक्त राष्ट्र का उद्देश्य सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार की तरह रखना है। किसी एक धर्म के प्रति हो रही घृणा को रोकने तथा अन्य धर्मो के प्रति ध्यान न देने से शांति और सौहार्द के स्थान पर साम्प्रदायिकता बढ़ सकती है।
- भारत ने यह भी उद्धृत किया कि इस प्रस्ताव में 'बहुलवाद' शब्द का कोई उल्लेख नहीं है। इस्लामोफोबिया' शब्द की अंतर्राष्ट्रीय कानून में कोई सहमत परिभाषा नहीं है, जो धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता के विपरीत है।
- ध्यातव्य हो कि इसके पूर्व धर्म या विश्वास के आधार पर हिंसा के कृत्यों के पीड़ितों की स्मृति में अंतर्राष्ट्रीय दिवस (22 अगस्त) मनाया जा रहा है, इस स्थिति में किसी एक धर्म को महत्व देना असहज स्थिति को जन्म दे सकता है।

2 रूस पर लगे प्रतिबंधों से मध्य एशियाई देशों पर प्रभाव

सन्दर्भ

यूक्रेन में संकट के बाद पश्चिमी देश रूस पर आर्थिक प्रतिबंधों में और बढ़ोतरी कर रहे हैं। यह प्रतिबन्ध मध्य एशिया में आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता को प्रभावित कर रहा है।

परिचय

यूक्रेन संकट के उपरांत पश्चिमी देश निरंतर रूस पर प्रतिबन्ध आरोपित कर रहे हैं। इन प्रतिबन्धो का प्रभाव रूस पर पड़ रहा है परन्तु रूस के साथ ही साथ मध्य एशियाई देश भी इससे व्यापक रूप से प्रभावित हो रहे हैं। ध्यातव्य हो कि मध्य-एशियाई देश पूर्ववर्ती सोबियत संघ का भाग हैं तथा ये आर्थिक रूप से काफी हद तक रूस पर निर्भर हैं। मध्य-एशियाई देश पहले से ही आर्थिक तथा सामाजिक समस्याओं से ग्रस्त है ऐसे में रूस पर लगे प्रतिबन्ध मध्य-एशिया के देशो में स्थिरता प्राप्ति के समय को बढ़ा रहे हैं।

मध्य-एशिया की चिंताओं के कारण

- मध्य -एशियाई गणराज्य 1991 में स्वतंत्र हुए हैं (भूतपूर्व सोवियत संघ से) तथा इनकी नीतियां अभी भी रूस पर निर्भर करती हैं।
- लैंड-लॉक क्षेत्र होने के कारण इन देशो की व्यापार गतिविधियों की लागत बहुत अधिक आती है।
- मध्य एशिया ईरान, अफगानिस्तान और रूस जैसे देशों से घिरा है जिन पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए जा चुके हैं। जो मध्य-एशिया को भी प्रभावित करती हैं।
- रूस पर आर्थिक प्रतिबंधो ने मध्य-एशिया को सर्वाधिक प्रभावित किया है क्योंकि ताजिकिस्तान, किर्गिस्तान और उज्बेकिस्तान जैसे देशो के विदेशी प्राप्तियों के लिए अधिकतम रूस पर निर्भर हैं। विश्व बैंक के आकड़ो के अनुसार विदेशों से भेजा गया पैसा ताजिकिस्तान, किर्गिस्तान और उज्बेकिस्तान की जीडीपी में क्रमशः 30 प्रतिशत, 28 प्रतिशत और 12 प्रतिशत योगदान देता है। अतः यह वृहद् समस्या है।
- कजाकिस्तान रूस से भेजे गए पैसे पर निर्भर नहीं है परन्तु यह रूस का बड़ा व्यापारिक साझेदार है। पिछले करीब तीन दशकों में रूस ने कजाकिस्तान में लगभग 40 अरब अमेरिकी डॉलर का निवेश किया है। रूस के केंद्रीय बैंक के द्वारा ब्याज दर 9.5 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने के निर्णय के फलस्वरूप वजह से रूस के निवेश पर रोक लग गई है। रूस के प्रतिबन्ध इन निवेशों को प्रभावित कर सकते हैं।
- स्विफ्ट सिस्टम से रूस के बैंकों का संपर्क हटाने के कारण कजाकिस्तान के निर्यात के लिए रूस की तरफ से भुगतान की क्षमता भी कम हो जाएगी।
- अफगानिस्तान में तालिबान सरकार तथा तालिबान पर लगे वैश्विक प्रतिबंधों ने मध्य-एशिया की आर्थिक तथा सुरक्षात्मक समस्याओं को बढ़ा दिया है।
- ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान, अफगानिस्तान के साथ 2,387 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करते हैं। अफगानिस्तान की तालिबानी समस्या मध्य एशियाई गणराज्यों में सुरक्षा चिंताओं को बढाती है इसके साथ ही साथ आतंकवादी संगठनों जैसे कि इस्लामिक मूवमेंट ऑफ उज्बेकिस्तान (आईएमयू), इस्लामिक जिहाद यूनियन (आईजेयू) और जमात अंसारुल्लाह की की सक्रियता के कारण मध्य-एशिया की स्थिरता और प्रभावित होगी।

निष्कर्ष

वर्तमान में मध्य-एशिया ऐसे देशो से घिरा हुआ है जिन पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगे हुए हैं। इस स्थिति में मध्य-एशियाई राष्ट्रों को

अपनी स्थिरता के लिए कुछ निर्णय लेने होंगे। मध्य-एशियाई देश अपनी कूटनीति का प्रयोग कर रूस-यूक्रेन मुद्दे को शांत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं इसके साथ ही इन देशो को भारत तथा चीन के साथ अपने व्यापारिक सम्बन्धो को बढ़ा कर मध्य-एशिया की स्थिरता के लिए प्रयत्नशील होना होगा।

पर्यावरण

1 केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में बोमा तकनीक का इस्तेमाल

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में राजस्थान के भरतपुर जिले के केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में अफ्रीका की बोमा तकनीक का प्रयोग किया गया।

बोमा तकनीक-

इस तकनीक में फनल जैसी बाड़ की सहायता से जानवरों का पीछा करके उन्हें एक बाड़े में फुसलाकर कैद करने से है। फनल में कम ढलान में घास की चटाई और हरे रंग के जाल के माध्यम से इसे जानवरों के लिए अपारदर्शी बना दिया जाता है। मूल रूप से, यह किसी जानवर को फुसलाकर उसके आवास के समान स्थिति बनाकर उसे कैद करके रखने की एक तकनीक है।

बोमा तकनीक की विशेषताएं-

- यह अफ्रीका में लोकप्रिय है।
- हाल के वर्षों में इसे मध्य प्रदेश में अपनाया गया है।
- यह राजस्थान में पहली बार प्रयोग किया गया है।
- पहले इस तकनीक का इस्तेमाल प्रशिक्षण और सेवा उद्देश्यों के लिए जंगली हाथियों को पकड़ने के लिए किया जाता था।
- इसका उपयोग शिकार की कमी वाले मुकुंदरा टाइगर रिजर्व में शिकार को बाघों और तेंदुओं के शिकार के रूप में स्थानांतरित करने के लिए किया जा रहा है।
- एक हिरण को जन्म देने में छह से आठ महीने लगते हैं जिससे वन्यजीव अधिकारियों के सामने शिकार आधार को आगे बढ़ाना प्रमुख चुनौती के रूप में उभरा है।
- जयपुर के पास करौली और नाहरगढ़ वन्यजीव अभयारण्य में कैलादेवी वन्यजीव अभयारण्य के लिए स्थानान्तरण की भी योजना बनाई जा रही है।

बोमा तकनीक के लाभ-

वातावरण अनुकूलन- किसी जानवर को उसके नए घर में बसाने और रहने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता है।

बीमार/घायल/अनाथ जानवर का पुनर्वास - ऐसे मामलों में जहां मानव द्वारा आघात पहुंचा हो या हस्तक्षेप हुआ हो तो जानवर को उसकी प्राकृतिक स्थिति में वापस लाया जा सके।

एक होल्डिंग सुविधा- यदि कोई जानवर जिसे पकड़ा गया है और उसे दूसरे रिजर्व में स्थानांतरित करने की आवश्यकता है तो बोमा को होल्डिंग सुविधा के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है जबतक कि जानवर के लिए भोजन और आवास की व्यवस्था उपलब्ध न हो।

जानवरों में प्रजनन के उद्देश्य से - मुख्य रूप से कम आबादी वाले जानवरों की संख्या बढ़ाने के उद्देश्य से बोमा विधि का उपयोग कर सकते हैं। इसका इस्तेमाल अफ्रीकी जंगली कुत्तों की संख्या को प्रबंधित करने के लिए हुआ था।

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के बारे में-

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान को पहले भरतपुर, राजस्थान में भरतपुर पक्षी अभयारण्य के रूप में जाना जाता था। यह भारत का एक प्रसिद्ध एविफौना अभयारण्य है जो हजारों पक्षियों को होस्ट करता है, खासकर सर्दियों के मौसम में। पक्षियों की 350 से अधिक प्रजातियां यहां निवास करती हैं। यह एक प्रमुख पर्यटन केंद्र भी है जहां कई पक्षी विज्ञानी यहां हाइबरनेशन सीजन में आते हैं। इसे 1971 में संरक्षित अभयारण्य घोषित किया गया था। यह एक विश्व धरोहर स्थल और एक रामसर स्थल भी है।

केवलादेव घाना राष्ट्रीय उद्यान एक मानव निर्मित, मानव प्रबंधित आर्द्रभूमि और भारत के राष्ट्रीय उद्यानों में से एक है। रिजर्व भरतपुर को बार-बार आने वाली बाढ़ से बचाता है। गाँव के मवेशियों के लिए चारागाह प्रदान करता है। पहले, यह मुख्य रूप से एक जलपक्षी शिकार मैदान के रूप में उपयोग किया जाता था। 29 किमी के रिजर्व को स्थानीय रूप से घाना के रूप में जाना जाता है और यह शुष्क घास के मैदानों, वुडलैंड्स, वुडलैंड दलदलों और आर्द्रभूमि का मिश्रण है। ये विविध 366 पक्षी प्रजातियों, 379 फूलों की प्रजातियों, मछलियों की 50 प्रजातियों, सांपों की 13 प्रजातियों, छिपकलियों की 5 प्रजातियों, 7 उभयचर प्रजातियों, 7 कछुओं की प्रजातियों और कई अन्य अकशेरूकीय प्रजातियों के घर हैं।

2 भारत में अफ्रीकी चीतों का आगमन

खबरों में क्यों?

हाल ही में, केंद्र सरकार अफ्रीका के सवाना से 50 चीतों को भारत के मध्य प्रदेश में स्थित कुनो राष्ट्रीय उद्यान में स्थानांतरित करने की योजना बना रही है।

भारत में चीतों का इतिहास-

- भारत में चीता का रिकॉर्ड 1550 से उपलब्ध है।
- 16वीं शताब्दी के बाद से मुगल खातों में चीतों से सम्बंधित अभिलेखों का विस्तार से उल्लेख किया गया है।
- 1871 में अंग्रेजों ने चीता को मारने के लिए इनाम घोषित करने से उनकी संख्या और कम हो गई।
- जंगलों में अतिक्रमण ने चीतों के लगातार ने नर/मादा विषमता के स्तर को कम कर दिया जिसके परिणामस्वरूप प्रजनन क्षमता और उच्च शिशु मृत्यु दर में कमी आई।
- कैद में रहने के कारण प्रजनन करने में असमर्थता, खेल के रूप में शिकार और इनाम के रूप में शिकार भारत में उनके विलुप्त होने के मुख्य कारण थे।
- यह बताया जाता है कि अकबर के पास 1000 चीते थे और टीपू सुल्तान के पास 16 चीते थे।
- रिकॉर्ड के मुताबिक भारत में आखिरी चीते का 1947 में शिकार हुआ था लेकिन 1967 तक इनका शिकार देखा गया।

परियोजना का विवादित और अप्रचलित होना-

- ऐसा कहा जाता है कि राजनीतिक रूप से प्रभावित संरक्षण लक्ष्य को आगे बढ़ाने के लिए विज्ञान को एक वैध उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है।
- प्रख्यात जीवविज्ञानी टी.एन. खोशू- "एक विलुप्त प्रजाति को फिर से स्थापित करने की कोशिश करने के बजाय, शेर और बाघ जैसी प्रजातियों को संरक्षित करना अधिक महत्वपूर्ण है"। (यह दृष्टिकोण 2013 के एससी आदेश के अनुरूप है।)
- संरक्षण उद्देश्यों के लिए चीता को शीर्ष शिकारी के रूप में स्थापित करने का उद्देश्य आवश्यक नहीं है क्योंकि भारत में पहले से ही एशियाई शेर और बाघ जैसे शीर्ष शिकारी मौजूद हैं।
- यह घास के मैदानों के संरक्षण के लिए अधिक किफायती, कुशल, तेज और अधिक समावेशी नहीं हैं।
- व्यापक क्षेत्रों की कमी के कारण पर्याप्त जनसंख्या घनत्व को बनाए रखने में सक्षम नहीं हो सकता है।

परियोजना की वर्तमान स्थिति-

- लगभग एक महीने पहले भारत सरकार के अधिकारियों की एक टीम ने भारत में स्थानांतरित किए जा रहे चीतों का निरीक्षण करने के लिए नामीबिया का दौरा किया था।
- नामीबिया हाथीदांत जैसे वन्यजीव उत्पादों के वाणिज्यिक व्यापार पर सीआईटीईएस प्रतिबंध हटाने के लिए भारत का समर्थन चाहता है।

चीता के बारे में-

चीता दुनिया का सबसे तेज जमीन में दौड़ने वाला जानवर है और अफ्रीका की सबसे लुप्तप्राय बड़ी बिल्ली प्रजाति का है। गति के लिए विशिष्ट रूप से अनुकूलित, चीता केवल तीन सेकंड में 110 किलोमीटर प्रति घंटे से अधिक की गति तक पहुंचने में सक्षम है। शीर्ष गति पर, उनका स्ट्राइड सात मीटर लंबा होता है। चीता की अनूठी शारीरिक संरचना लचीली रीढ़, लंबे पैर और पूंछ इसे 110 किमी / घंटा (70 मील प्रति घंटे) की अविश्वसनीय शीर्ष गति प्राप्त करने की अनुमति देते हैं। लंबे पतले अंगों के साथ चीते का शरीर पतला और हल्का होता है। विशिष्ट मांसपेशियां अंगों को अधिक से अधिक स्विंग करने में सहायक होती हैं जिससे गति बढ़ जाती है।

विज्ञान एवं तकनीक

1 हाइपरसोनिक मिसाइल

सन्दर्भ

हाल ही में रूस के रक्षा मंत्रालय ने घोषणा की है कि रूस के द्वारा यूक्रेन के साथ युद्ध में हाइपरसोनिक मिसाइल का प्रयोग किया गया है ।

हाइपरसोनिक मिसाइल क्या है?

हाइपरसोनिक मिसाइल एक अत्याधुनिक मिसाइल प्रणाली है जिसमे 5 मैक (ध्वनि की गति से 5 गुना अधिक) की गति होती है।

हाइपरसोनिक शस्त्र प्रणालियाँ दो प्रकार की होती हैं।

- हाइपरसोनिक ग्लाइड व्हीकल (HGV)
- हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइल

एचजीवी को इच्छित लक्ष्य पर ग्लाइडिंग से पहले एक रॉकेट से लॉन्च किया जाता है, जबकि हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइल अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के उच्च गति इंजन या 'स्क्रैमजेट' द्वारा संचालित होती है।

हाइपरसोनिक मिसाइलों के लाभ

- ये लम्बी दूरी तथा तीव्र आक्रमण में उपयोगी हैं।
- हाइपरसोनिक मिसाइलों के द्वारा इच्छित लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।
- ये मोबाइल मिसाइल प्रणालियों के विरुद्ध एक बेहतर शस्त्र हैं।
- पारंपरिक हाइपरसोनिक हथियार केवल गतिज ऊर्जा यानी गति से प्राप्त ऊर्जा का उपयोग करते हैं।

गति के आधार पर मिसाइलों का वर्गीकरण

- सबसोनिक मिसाइल : 0.8 मैक से कम
- सोनिक मिसाइल : 0.8 से 1.2 मैक
- सुपरसोनिक मिसाइल : 1.2 मैक से 5 मैक तक
- हाइपरसोनिक मिसाइल : 5 मैक से 25 मैक तक
- हाई हाइपरसोनिक मिसाइल : 25 मैक से अधिक

(नोट - 1 मैक- 332 मीटर प्रति सेकेण्ड ध्वनि की गति)

यह बैलिस्टिक मिसाइल प्रणाली से अलग कैसे

हाइपरसोनिक मिसाइल की गतिशीलता इसे एक बैलिस्टिक मिसाइल से अलग करती है क्योंकि बैलिस्टिक मिसाइल एक निधारित बैलिस्टिक प्रक्षेपवक्र का अनुसरण करता है जबकि हाइपरसोनिक मिसाइलें बैलिस्टिक प्रक्षेपवक्र का पालन नहीं करती हैं और उन्हें इच्छित लक्ष्य तक ले जाया जा सकता है।

किन देशो के पास है हाइपरसोनिक मिसाइल

अमेरिका, रूस और चीन हाइपरसोनिक मिसाइल कार्यक्रम के उन्नत चरण में हैं, जबकि भारत, फ्रांस, जर्मनी, जापान और ऑस्ट्रेलिया भी हाइपरसोनिक हथियार विकसित कर रहे हैं।

भारतीय हाइपरसोनिक मिसाइल प्रोग्राम

सीआरएस (अमेरिकी एजेंसी) की रिपोर्ट में कहा गया है कि

- भारत, रूस के साथ ब्रह्मोस II के डेवलपमेंट पर आगे बढ़ रहा है। यह मिसाइल मैक 7 की स्पीड वाली हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइल है।
- भारत अपने हाइपरसोनिक टेक्नोलॉजी डिमॉन्स्ट्रेटर व्हीकल प्रोग्राम के हिस्से के रूप में एक स्वदेशी, दोहरी सक्षम (पारंपरिक और साथ ही परमाणु) हाइपरसोनिक क्रूज मिसाइल भी विकसित कर रहा है।
- जून 2019तथा सितंबर 2020 के मध्य में 6 स्क्रैमजेट का सफलतापूर्वक परीक्षण किया है। वर्तमान में भारत के पास लगभग 13 मैक की गति वाले हाइपरसोनिक मिसाइल हैं।

2 दिशांक ऐप

खबरों में क्यों?

हाल ही में कर्नाटक सरकार ने अपनी "भूमि परियोजना" के तहत 1990 के बाद के सभी भूमि अभिलेखों को डिजिटाइज करने का निर्णय लिया है। इन भूमि अभिलेखों को अब दिशांक नामक नए ऐप से एक्सेस किया जा सकता है।

दिशांक ऐप की विशेषताएं-

- दिशांक ऐप को 1965 में भूमि सर्वेक्षण के 70 से 80 लाख पुराने पार्सल के नक्शे के डिजीटल संस्करणों पर बनाया गया है।
- एप्लिकेशन को कर्नाटक राज्य रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर (केएसआरएसएसी) के कर्नाटक भौगोलिक सूचना प्रणाली कार्यक्रम के तहत विकसित किया गया है।
- केएसआरएसएसी उपग्रह से डेटा प्राप्त करता है और इसे विभिन्न एजेंसियों को नवीन उपयोग के लिए प्रदान करता है।
- कार्टोसैट उपग्रह का उपयोग करके कर्नाटक में 30,854 ग्राम भूमि मानचित्रों को डिजीटल, स्कैन और भू-संदर्भित किया गया।

• ऐप द्वारा प्रदान किए गए भू-स्वामित्व डेटा में भूमि मालिक का नाम, रिकॉर्ड के अनुसार भूमि की सीमा, स्वामित्व का प्रकार, भूमि का प्रकार, भूमि पर प्रतिबंध/मुकदमा, भूमि की श्रेणी और भूमि पर किए जा रहे किसी भी अन्य सक्रिय लेनदेन की जानकारी शामिल हैं।

• यह केवल भूमि की वास्तविक स्थिति पर स्पष्टता बताने के लिए है और भूमि विवादों में कानूनी उद्देश्यों के लिए इसका उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

भारत में भूमि अधिग्रहण की समस्याएं

• महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को मंजूरी देने में देरी से उनकी लागत बढ़ जाती है जिससे वे टिकाऊ नहीं हो पाते हैं।

• बुनियादी ढांचा क्षेत्र में बढ़ते एनपीए के लिए भूमि अधिग्रहण में कुछ हद तक देरी को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।

• भूमि अधिग्रहण अधिनियम 2013 के पारित होने के बाद भी भूमि अधिग्रहण में कम से कम चार से पांच साल लगने का अनुमान है।

• ज्यादातर गरीब किसानों को अपर्याप्त मुआवजा मिलता है जो उन्हें कृषि से बाहर कर देता है और साथ ही उनके जीवन स्तर को भी गिराता है।

• गैर-कृषि उद्देश्यों के लिए कृषि भूमि का उपयोग करना, एक तरफ बुनियादी ढांचे का निर्माण करता है लेकिन दूसरी तरफ किसान की खाद्य सुरक्षा और नुकसान रूप में कार्य करता है।

• किसी क्षेत्र की खराब भूमि अधिग्रहण नीतियां, अनुकूल नीतियों से दूसरे क्षेत्रों को विकास के रूप में बदल सकती हैं।

ऐप से लाभ

• यह नागरिकों को भूमि डेटाबेस में दर्ज भूमि और उसके स्वामित्व के बारे में जानकारी प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा।

• यह ऐप पारदर्शिता लाने में मदद करेगा क्योंकि इससे नागरिक सार्वजनिक डोमेन में स्वतंत्र रूप से उपलब्ध भूमि के वास्तविक मालिक और स्थान की पहचान करने में सक्षम होंगे।

• भविष्य में नागरिक, ऐप के माध्यम से अपने उपखंड तक पहुंच सकेंगे।

• यदि इसे अन्य राज्यों में भी लागू किया जाए तो यह भूमि विवादों की गंभीर समस्या को कम करने में मदद करेगा ।

• नई परियोजनाओं के लिए अनुमोदन और पर्यावरण मंजूरी प्रदान करने में आसानी होंगी।

आर्थिक

1 माइक्रोफाइनेंस ऋणों के लिए आरबीआई मास्टर निदेश/ विनियामक ढांचा 2022

खबरों में क्यों?

माइक्रोफाइनेंस की पहुंच को बढ़ाने के उद्देश्य से आरबीआई द्वारा नए माइक्रोफाइनेंस दिशानिर्देश जारी किए गए हैं।

नए नियम-

हाल ही में आरबीआई ने माइक्रोफाइनेंस के अपने मानदंडों को सभी उधारदाताओं के लिए समान बनाया है।

• एमएफआई ऋणों के लिए ब्याज दरों की सीमा को हटाना और पारिवारिक आय की सीमा को बढ़ाना।

• भारतीय रिजर्व बैंक के परिपत्र के अनुसार 3 लाख रुपये तक की वार्षिक आय वाले परिवार को दिया गया कोई भी ऋण एक एमएफआई (सूक्ष्म वित्त संस्थान) ऋण है।

• परिपत्र, ऋणदाता को ऋणों के मूल्य निर्धारण के लिए बोर्ड द्वारा अनुमोदित नीति लागू करने की अनुमति देता है।

• पूर्व में केंद्रीय बैंक उधार को लागत से जोड़ता था।

• बोर्ड पुनर्भुगतान आवृत्ति और आय निर्धारण में लचीलापन प्रदान कर सकता है।

• ऋणदाता ऐसे ऋण प्रदान नहीं कर सकता जहां ऋण चुकौती मासिक घरेलू आय का 50% या अधिक हो।

• यदि कोई मौजूदा ऋण है, जहां खर्च 50% से अधिक है, तो पहले ऋण को परिपक्व होने दिया जाएगा।

• आरबीआई ने प्रोसेसिंग फीस और ब्याज की सीमा भी हटाई है।

भारत में माइक्रोफाइनेंसिंग की समस्याएं

• **सुरक्षा की कमी और उच्च परिचालन लागत:** गरीब लोगों को ऋण प्रदान करते समय बैंकों की कुछ प्रमुख सीमाएं हैं।

• **अपर्याप्त डेटा:** ऋण खाते बढ़ रहे हैं। ग्राहकों के गरीबी स्तर पर यह ऋण वास्तविकता से दूर है क्योंकि एमएफआई ग्राहकों के सापेक्ष गरीबी स्तर में सुधार के आंकड़े अपर्याप्त हैं।

• **कोविड-19 का प्रभाव:** इसने एमएफआई क्षेत्र को प्रभावित किया है।

• **सामाजिक उद्देश्य की अनदेखी:** सामाजिक समावेशन का उद्देश्य प्राप्त नहीं हो पा रहा है।

• **उपभोग उद्देश्यों के लिए ऋण:** इन माइक्रोफाइनेंस ऋणों का उपयोग उत्पादक उद्देश्यों के लिए नहीं बल्कि उपभोग पर अधिक किया जा रहा है।

नए नियम कैसे हल कर सकते हैं समस्याएं-

सामंजस्यपूर्ण नियम: माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र

के लिए एक नई शुरुआत होगी जहां एक सामान्य नियामक ढांचा आरबीआई के सभी विनियमित संस्थाओं (आरई) पर लागू होगा।

एक समान स्तर : नए नियम सभी संबंधितों के लिए एक समान खेल मैदान तैयार करेंगे।

ऋणग्रस्तता और कई उधार: नए नियम इन मुद्दों को संबोधित कर सकते हैं जो इस क्षेत्र के लिए चिंता का विषय हैं।

प्रतिस्पर्धा : आय सीमा को 3 लाख रुपये करने से नए कम्पनियों के लिए अवसरों का विस्तार होगा।

जोखिम आधारित सहमति: ब्याज दर की सीमा हटाने से जोखिम आधारित सहमति को बढ़ावा मिलेगा।

गहरी पहुँच: नए नियम जन सामान्य के निचले स्तर तक लाभ पहुंचाएंगे।

2 मनरेगा पर स्टैंडिंग कमिटी की रिपोर्ट

सन्दर्भ

हाल ही में प्रतापराव जाधव की अध्यक्षता वाली स्टैंडिंग कमिटी (ग्रामीण विकास और पंचायती राज संबंधी) द्वारा 'महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी एक्ट (मनरेगा) के समीक्षात्मक मूल्यांकन' पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की है।

समिति की मुख्य प्राप्तियां

- समिति ने यह पाया कि विभिन्न राज्यों/ केंद्रित शासित प्रदेशों में अधिसूचित मजदूरी दर 193 रुपए से लेकर 318 रुपए के बीच है। जो मनरेगा के असमान दर को प्रस्तुत करती है।
- कोरोना महामारी के दौरान मनरेगा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।
- समिति ने बताया कि मनरेगा के लाभार्थी ज्यादातर समाज के गरीब और वंचित वर्ग के लोग होते हैं। तथा मनरेगा के अंतर्गत निम्न पारिश्रमिक के फलस्वरूप लाभार्थी हतोत्साहित होते हैं और वे अधिक लाभप्रद काम करने के लिए शहरी इलाकों में पलायन करते हैं । समिति ने यह भी पाया कि 2020-21 में 755 लाख परिवारों को रोजगार प्रदान किया गया लेकिन सिर्फ 72 लाख परिवारों ने 100 दिनों का रोजगार पूरा किया।
- समिति ने कहा कि लाभार्थियों को मजदूरी का भुगतान में विलम्ब होता है। यह विलम्ब मुख्य रूप से इनएक्टिव आधार, ब्लॉक या फ्रोजन बैंक अकाउंट के कारण होता है। समिति ने यह भी बताया कि मनरेगा के अंतर्गत भुगतान में हुए विलम्ब के प्रावधान का अनुपालन नहीं किया जाता।
- समिति ने यह बताया कि मनरेगा में सोशल ऑडिट के प्रावधान का पालन नहीं किया जाता। 2020-21 में मात्र 29,611 ग्राम पंचायतों का कम से कम सिर्फ एक बार ऑडिट किया गया था तथा जिनका सोशल ऑडिट हुआ वे रिपोर्टस सार्वजानिक रूप से उपलब्ध नहीं हैं।
- समिति ने यह बताया कि अधिनियम में वर्णित ऑम्बड्जपर्सन (जिले स्तर पर शिकायतों की जांच के लिए) की नियुक्ति में भी कई समस्याएं हैं। 715 संभावित नियुक्तियों में अब तक केवल 263 ऑम्बड्जपर्सन की नियुक्ति की गई है।

समिति की अनुशंसाएं

- योजना के अंतर्गत अनुमत कार्यों के दायरे में नियमित संशोधन किए जाने की जरूरत है। उदाहरण के लिए बाढ़ के समय भूक्षरण को रोकने के लिए बांध बनाने और कृषि भूमि को आवारा पशुओं से बचाने के लिए बाऊंड्री बनाने जैसे काम इसमें शामिल किए जा सकते हैं।
- समिति ने सम्पूर्ण देश में समान मजदूरी दर की अनुशंसा की है। इसके साथ ही समिति ने यह कहा है कि मनरेगा की मजदूरी दर को मुद्रास्फीति के साथ समायोजित किया जाए।
- समिति ने यह सुझाव दिया है कि भुगतान में देरी होने पर लाभार्थी हर दिन 0.05% मजदूरी की दर से क्षतिपूर्ति पाने वाले प्रावधान को लागू करना चाहिए।
- कमिटी ने मंत्रालय को यह सुनिश्चित करने का सुझाव दिया कि किसी वित्तीय वर्ष में ग्राम पंचायतों का ऑडिट छूट न जाए। समिति सुझाव दिया कि ऑडिट पूरा होने के तुरंत बाद इन रिपोर्ट्स को पब्लिक डोमेन में डाला जाए।
- कमिटी ने कहा कि कोविड-19 के कारण चुनौतियों को पूरा करने के लिए इस योजना में बदलाव किए जाने चाहिए। उसने योजना के अंतर्गत 100 दिनों की बजाय 150 दिनों के काम की गारंटी दिए जाने का सुझाव दिया।
- कमिटी ने कहा कि जिन राज्यों में ऑम्बड्जपर्सन्स की नियुक्ति नहीं हुई हो, वहां दंडात्मक उपाय किए जाएँ तथा उन राज्यों का वित्तीयन रोका जाए।

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय घटनाओं की महत्वपूर्ण खबरें

1. यूक्रेन से भारतीय नागरिकों को वापस लाने के लिए "ऑपरेशन गंगा" लॉन्च

रूस-यूक्रेन संघर्ष के बाद यूक्रेन में हवाई क्षेत्र बंद कर दिया गया था। जिसके चलते भारत ने यूक्रेन में फंसे अपने नागरिकों और छात्रों को वंहा से निकलने के लिए ऑपरेसन गंगा की शुरुवात की थी। इसके लिए यूक्रेन के चार पड़ोसी देशों, हंगरी, पोलैंड, रोमानिया और स्लोवाकिया के माध्यम से भूमि निकासी विकल्पों की पहचान की गई। इसी क्रम में रोमानिया से एयर इंडिया की पहली निकासी उड़ान 26 फरवरी को मुंबई में उतरी। हाल में लॉन्च किये गए कुछ अन्य ऑपरेसन निम्नलिखित है :-

भारत द्वारा चलाये गए अन्य ऑपरेशन

ऑपरेशन सुकुन - 2006 के लेबनान युद्ध के दौरान भारतीय और अन्य नागरिकों को निकालने के लिए भारतीय नौसेना द्वारा शुरू किया गया

ऑपरेशन सेफ होमकमिंग - लीबिया से भारतीय नागरिकों को लाने के लिए 2011 में शुरू किया गया

ऑपरेशन राहत - यमन से भारतीय नागरिकों और विदेशी नागरिकों को निकालने के लिए 2015 में शुरू किया गया

ऑपरेशन संकट मोचन - दक्षिण सूडान से भारतीय नागरिकों की निकासी के लिए 2016 में लॉन्च किया गया

वंदे भारत मिशन - कोविड -19 महामारी के मद्देनजर मई 2020 में बड़े पैमाने पर शुरू किया गया निकासी कार्यक्रम

ऑपरेशन देवी शक्ति - भारतीय नागरिकों, दूतावास के कर्मचारियों और योग्य अफगानों की निकासी के लिए 2021 में लॉन्च किया गया

2. अंतर्राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा सूचकांक में भारत का 43वां स्थान

यूएस चौंबर ऑफ कॉमर्स ग्लोबल इनोवेशन पॉलिसी सेंटर **(GIPC)** द्वारा जारी अंतरराष्ट्रीय बौद्धिक संपदा सूचकांक में भारत को 43वां स्थान मिला है। इस सूचकांक में कुल 55 देशों को शामिल किया गया है। यह सूचकांक पेटेंट और कॉपीराइट नीतियों, आईपी परिसंपत्तियों के व्यवसायीकरण और किसी देश की अंतरराष्ट्रीय संधियों के संपुष्टि का मूल्यांकन करता है।

रिपोर्ट के अनुसार, भारत का समग्र आईपी स्कोर में मामूली (38.4 प्रतिशत से बढ़कर 38.6 प्रतिशत) वृद्धि देखी गयी है। सूचकांक में 55 देशों में से केवल 45 देशों ने अपने स्कोर में सुधार दिखाया है। इस क्रम में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), नाइजीरिया और पेरू ने अपने स्कोर में सबसे अधिक सुधार किया है। इस वर्ष बौद्धिक संपदा सूचकांक में वेनेजुएला को अंतिम (55वां) स्थान दिया गया है। सूचकांक में शीर्ष 5 देश निम्नलिखित हैं :-

स्थान	देश
पहला	संयुक्त राज्य
दूसरा	युनाइटेड किंगडम
तीसरा	जर्मनी
चौथा	स्वीडन
पांचवा	फरांस

3. बोल्ट्ज़मैन मेडल पुरस्कार जीतने वाले पहले भारतीय बने प्रोफेसर दीपक धर

भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, पुणे के प्रोफेसर और भौतिक वैज्ञानिक दीपक धर को बोल्ट्ज़मैन मेडल पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान पाने वाले वह पहले भारतीय हैं। यह सम्मान उन्हें प्रिंसटन यूनिवर्सिटी के अमेरिकी वैज्ञानिक जॉन जे होफील्ड के साथ साझा रूप में दिया जाएगा। बोल्ट्ज़मैन मेडल इंटरनेशनल यूनियन ऑफ प्योर एंड एप्लाइड फिजिक्स (**IUPAP**) के सांख्यिकीय भौतिकी पर आयोग द्वारा तीन साल में एक बार प्रस्तुत किया जाता है। यह पुरस्कार सांख्यिकीय भौतिकी के क्षेत्र में योगदान के लिए दिया जाता है। **IUPAP** एकमात्र वैश्विक भौतिक संगठन है जो भौतिक समुदाय द्वारा संगठित और संचालित है। यह पुरस्कार ऑस्ट्रेलिया के भौतिक वैज्ञानिक लुडविक एडुवार्ड बोल्ट्ज़मैन की याद में दिया जाता है।

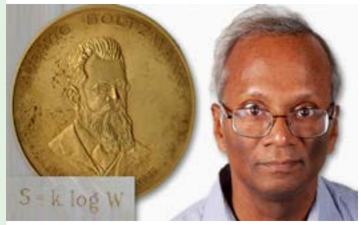

4. सौरभ चौधरी ने अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी विश्व कप में भारत को पहला स्वर्ण पदक दिलाया

मिस्र के काहिरा में इंटरनेशनल शूटिंग स्पोर्ट्फेडरेसन द्वारा आयोजित आई.एस.एस.एफ विश्वकप में सौरभ चौधरी ने पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा के स्वर्ण पदक मैच में जर्मनी के माइकल श्वाल्ड को हराया। वहीं रूस के आर्टेम चेर्नौसोव ने कांस्य पदक जीता। हालांकि स्कोर बोर्ड पर रूस के झंडे को नहीं दिखाया गया था। आई.एस.एस.एफ विश्वकप का आयोजन 26 फरवरी से 8 मार्च तक किया गया था। इसी आयोजन में भारत की श्रेया अग्रवाल सेमीफाइनल में 0.1 अंक से चूक गईं। उन्होंने महिलाओं की एयर राइफल में 629.3 स्कोर किया। इंटरनेशनल शूटिंग स्पोर्ट फेडरेशन (आईएसएसएफ) राइफल, पिस्टल और शॉटगन में ओलंपिक शूटिंग स्पर्धाओं का शासी निकाय है। इसका मुख्यालय म्यूनिख, जर्मनी में है।

5. नाइट फ्रैंक की रिपोर्ट में भारत में अरबपतियों की तीसरी सबसे बड़ी आबादी है

नाइट फ्रैंक के वेल्थ रिपोर्ट में बताया गया है कि, भारत में अल्ट्रा-हाई नेट वर्थ व्यक्तियों की संख्या में 11 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। मुंबई में सबसे अधिक 1596 यूएचएनडब्ल्यूआई हैं, इसके बाद हैदराबाद में 467 यूएचएनडब्ल्यूआई हैं। भारत में यूएचएनडब्ल्यूआई के वृद्धि में इक्विटी मार्केट और डिजिटल एडॉप्शन प्रमुख कारक हैं। रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि अगले पांच वर्षों में, वैश्विक यूएचएनडब्ल्यूआ की जनसंख्या में 28% की वृद्धि होगी। भारत में यूएचएनडब्ल्यूआ जनसंख्या के 39% बढ़ने की उम्मीद है। रिपोर्ट में बताया गया है कि बेंगलुरु में यूएचएनडब्ल्यूआई की संख्या में सबसे अधिक वृद्धि देखी गई, इसके बाद दिल्ली का स्थान है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि वर्तमान में, भारत में 145 अरबपति हैं जो अमेरिका (748) और चीन (554) के बाद सबसे ज्यादा हैं।

Top 5 countries with most number of billionaires in 2021

Billionaires	2021	2020-21	2016-21
US	748	15%	38%
Chinese mainland	554	32%	121%
India	145	24%	69%
Germany	136	14%	13%
Russia	121	20%	53%

Source: Knight Frank Wealth Sizing Model

6. कन्याकुमारी वन्यजीव अभयारण्य में नई जिन बेरी प्रजातियों की खोज की।

भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के वैज्ञानिकों ने दक्षिणी पश्चिमी घाट के कन्याकुमारी वन्यजीव अभ्यारण में 'ग्लाइकोस्मिस एल्बीकार्पा' नाम की एक बेरी प्रजाति की खोज की है। यह प्रजाति तिरुनेलवेली अर्ध-सदाबहार जंगलों में पाई गई है। यह प्रजाति दक्षिणी पश्चिमी घाट के लिए स्थानिक है। यह प्रजाति नारंगी परिवार से संबंधित है। 'ग्लाइकोस्मिस पेंटाफिला' रुटासीई परिवार में फूलों के पौधे की एक प्रजाति है, जिसे आमतौर पर ऑरेंजबेरी और जिन बेरी के रूप में जाना जाता है। ग्लाइकोस्मिस प्रजाति के बेरी में 'जिन सुगंध' की अनूठी विशेषता होती है और यह एक लोकप्रिय खाद्य फल है। इसका प्रयोग औषधीय मूल्यों और भोजन के लिए भी किया जाता है।

7. भारत 17 सतत विकास लक्ष्यों पर तीन पायदान नीचे खसक कर 120वें स्थान पर पहुंचा

भारत को 17 सतत विकास लक्ष्यों में 120वें स्थान पर रखा गया है। भारत का एसडीजी स्कोर 100 में से 66 है। पिछले साल भारत की रैंक 117वीं थी। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट की स्टेट ऑफ इंडिया की पर्यावरण रिपोर्ट, 2022 के अनुसार, 11 एसडीजी में चुनौतियों के कारण भारत की रैंकिंग गिरी है। भारत भुखमरी से मुक्ति, अच्छे स्वास्थ्य और आरोग्यता, लैंगिक समानता और संवहनीय शहरी और सामुदायिक विकास, आदि एसडीजी में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और भूमि पर जीवन के मामले में भी अच्छा प्रदर्शन नहीं किया। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि झारखंड और बिहार 2030 तक एसडीजी हासिल करने में सक्षम नहीं होंगे। ताजा रैंकिंग में केरल पहले स्थान पर जबकि तमिलनाडु और हिमाचल प्रदेश दूसरे स्थान पर हैं। वहीं तीसरा स्थान गोवा, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और उत्तराखंड द्वारा साझा किया गया है। केंद्र शासित प्रदेशों में चंडीगढ़ पहले स्थान पर उसके बाद दिल्ली, लक्षद्वीप और पुडुचेरी दूसरे स्थान पर है। सतत विकास रिपोर्ट 2021 में फिनलैंड 85.90 के स्कोर के साथ शीर्ष पर है जबकि स्वीडन 85.61 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर है। डेनमार्क और जर्मनी क्रमश: चौथे और पांचवें स्थान पर हैं।

8. नासा ने GOES-T नाम का अगली पीढ़ी का मौसम उपग्रह लॉन्च किया

जियोस्टेशनरी ऑपरेशनल एनवायरनमेंटल सैटेलाइट (GOES&T) नाम के सैटेलाइट को नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (NOAA) के लिए लॉन्च किया गया है। यह उपग्रह अगली पीढ़ी के मौसम उपग्रहों की श्रृंखला में तीसरा है। इसे केप कैनावेरल स्पेस फोर्स स्टेशन से यूनाइटेड लॉन्च एलायंस एटलस वी रॉकेट से लॉन्च किया गया। यह उपग्रह पश्चिमी गोलार्ध में तूफान, गरज, बाढ़ और आग जैसी ष्खतरनाक मौसम की स्थितिष की भविष्यवाणी करने में नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (NOAA) की मदद करेगा। जियोस्टेशनरी ऑपरेशनल एनवायरनमेंटल सैटेलाइट (GOES&T) को पृथ्वी से 22,300 मील ऊपर भूस्थिरीय कक्ष मे रखा गया है।

9. ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर शेन वार्न का निधन

ऑस्ट्रेलिया के महान क्रिकेटर और दायें हांथ के लेग स्पिनर शेन वार्न का निधन कोसामुई थाईलैंड में 4 मार्च 2022 को हार्ट अटैक से हो गया। शेन कीथ वॉर्न ने अपना पहला टेस्ट मैच 1992 में भारत के खिलाफ खेला था। उन्होंने 145 टेस्ट मैचों में 708 विकेट लिए। उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में दूसरे सबसे ज्यादा विकेट लिए हैं। उन्होंने टेस्ट और एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय में 1,000 से अधिक विकेट लिए। 2000 में, उन्हें सदी के पांच विजडन क्रिकेटरों में से एक के रूप में चुना गया था।

10. फसलों को बीमारी से बचाने के लिए बायोडिग्रेडेबल नैनोपार्टिकल का विकास किया गया

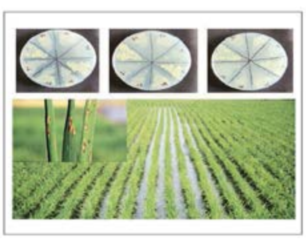

संतोष के मिश्रा और पीयूष कुमार के नेतृत्व में आई.आई.टी कानपुर के शोधकर्ताओं ने आईसीएआर के शोधकर्ताओं के साथ मिलकर फसलों को बिमारी से बचाने के लिए बायोडिग्रेडेबल नैनोपार्टिकल (बायो-डिग्रेडेबल-कार्बोनोइड-मेटाबोलाइट BioDCM) का विकास किया है। नैनोपार्टिकल एक छोटा कण होता है जिसका आकार 1 से 100 नैनोमीटर के बीच होता है। इसका उपयोग रासायनिक की. टनाशकों के स्थान पर किया जा सकता है। इन बायोडिग्रेडेबल नैनोपार्टिकल का प्रयोग किसान फसलों को बैक्टीरिया और फंगल संक्रमण से बचाने में मदद करेगा। यह तेजी से कार्य करता है क्योंकि यह बायोएक्टिव रूप में लागू होता है और उच्च तापमान का सामना कर सकता है। ये बायोडिग्रेडेबल नैनोपार्टिकल जैविक खेती को भी बढ़ावा देंगे।

समसामयिकी घटनाएं एक नजर में

- जम्मू कश्मीर की सादिया तारिक ने मास्को में आयोजित वुशु स्टार्स चौंपियनशिप 2022 में स्वर्ण पदक जीता। वुशु या कुंगफू एक मार्शल आर्ट के साथ-साथ एक खेल भी है।

- एम्मा टेरहो को अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति **(IOC)** एथलीट आयोग के अध्यक्ष के रूप में फिर से चुने गए।

- बीएसईएस द्वारा दिल्ली में भारत का पहला स्मार्ट-प्रबंधित ईवी चार्जिंग स्टेशन शुरू किया गया है।

- मीराबाई चानू ने सिंगापुर अंतर्राष्ट्रीय भारोत्तोलन टूर्नामेंट में स्वर्ण पदक जीता।

- माधबी पुरी बुच को सेबी का नया चेयरपर्सन नियुक्त किया गया। वह भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड की पहली महिला अध्यक्ष हैं।
  भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी):
  - इसकी स्थापना 1988 में हुई थी और 1992 में इसे वैधानिक दर्जा दिया गया था।
  - यह भारत में प्रतिभूति बाजार का नियामक है और इसका उद्देश्य प्रतिभूतियों में निवेशकों के हितों की रक्षा करना है।
  - इसका मुख्यालय मुंबई में स्थित है।

- 31वें दक्षिण पूर्व एशियाई खेल वियतनाम में आयोजित किए जाएंगे।

- सड़क पर रहने वाले जानवरों के लिए भारत की पहली मोबाइल एम्बुलेंस चेन्नई में शुरू हुई।

- श्री निवेथा, ईशा, रुचिता ने संयुक्त रूप से आईएसएसएफ विश्व कप में महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता।

- अभ्यास स्लीनेक्स **(SLINEX)** का नौवां संस्करण विशाखापत्तनम में हुआ।

- झारखंड उच्च न्यायलय के मुख्य न्यायाधीश डीएन पटेल को दूरसंचार विवाद निपटान और अपीलीय न्यायाधिकरण **(TDSAT)** का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

- ढाका में दो दिवसीय 'स्टडी इन इंडिया 2022' बैठक का आयोजन किया गया। ऐसा ही एक आयोजन आगे चटगाँव में किया जायेगा।

- छह विश्व कप खेलने वाली मिताली राज पहली महिला क्रिकेटर बनीं।

- भारत सरकार ने महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए "समर्थ" **(SAMARTH)** पहल शुरू की।

- 'डिजीसाथी' के नाम से आरबीआई ने डिजिटल भुगतान उपयोगकर्ताओं के लिए 24**x**7 हेल्पलाइन लॉन्च की है।

- टी. राजा कुमार होंगे एफएटीएफ के अगले अध्यक्ष।

- मेरकॉम इंडिया रिसर्च की रिपोर्ट के अनुसार भारत ने 2021 के दौरान रिकॉर्ड 10 गीगावाट **(GW)** सौर क्षमता स्थापित की है।

ब्रेन बूस्टर

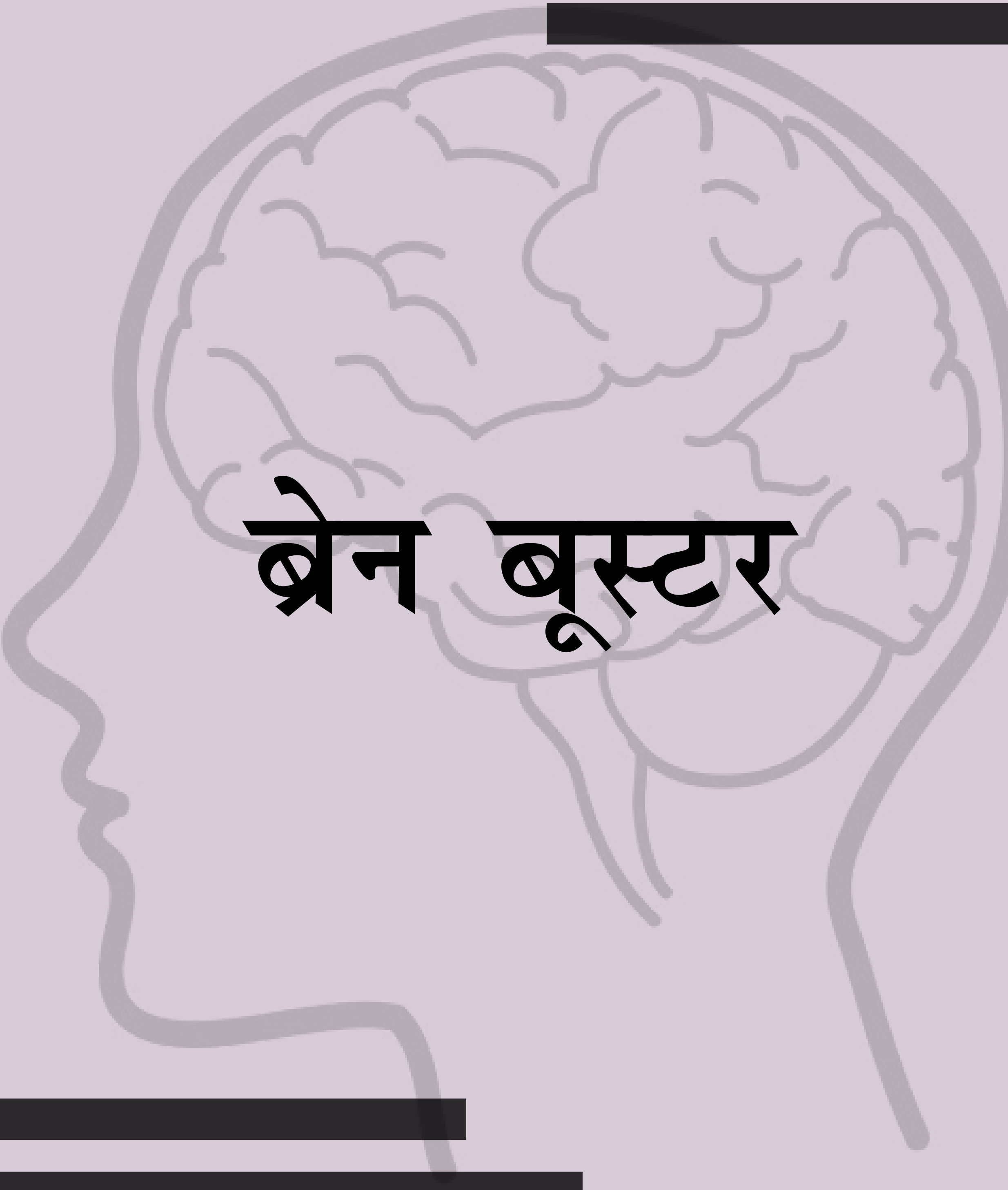

राष्ट्रीय भूमि मुद्रीकरण निगम

1. खबरों में क्यों:

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 9 मार्च को केंद्रीय सार्व. जनिक क्षेत्र उद्यमों (सीपीएसई) और अन्य सरकारी एजेंसियों की अधिशेष भूमि और भवन संपत्ति का मुद्रीकरण करने के लिए भारत सरकार की पूर्ण स्वामित्व वाली कंपनी के रूप में राष्ट्रीय भूमि मुद्रीकरण निगम (एनएलएमसी) की स्थापना को मंजूरी दी।

2. एनएलएमसी के बारे में

- राष्ट्रीय भूमि मुद्रीकरण निगम सरकार के पूर्ण स्वामित्व वाली एक फर्म होगी, जो अधिशेष, अप्रयुक्त या कम उपयोग की गई सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र की भूमि सम्पतियो का मुद्रीकरण करेगी।
- यह वित्त मंत्रालय के प्रशासनिक अधिकार क्षेत्र में आएगा और ₹5,000 करोड़ की प्रारं. भक अधिकृत शेयर पूंजी और ₹150 करोड़ की पूंजी के साथ स्थापित किया जाएगा।
- भूमि जोतों के मूल्य को अनलॉक करने के उद्देश्य से निगम उन सार्वजनिक उपक्रमों की संपत्तियों के मुद्रीकरण की सुविधा भी प्रदान करेगा, जिनका परिचालन बंद हो गया है या जो एक रणनीतिक विनिवेश के लिए उपलब्ध हैं।
- ऐसे उद्यमों की अधिशेष भूमि और भवन संपत्ति एनएलएमसी को हस्तांतरित किए जाने की उम्मीद है, जो तब उन्हें धारण, प्रबंधन और मुद्रीकृत करेगी।
- एनएलएमसी घाटे में चल रहे सीपीएसई को बंद करने में तेजी लाएगा और रणनीतिक विनिवेश प्रक्रिया को सुगम बनाएगा।
- एनएलएमसी एक सलाहकार निकाय के रूप में कार्य करेगा और अन्य सरकारी संस्थ. ाओं और सीपीएसई को उनकी अधिशेष गैर-प्रमुख संपत्तियों की पहचान करने और उन्हें कुशल और पेशेवर तरीके से मुद्रीकृत करने, मूल्य प्राप्ति के दायरे को अधिकतम करने में सहायता करेगा।

3. गैर-प्रमुख संपत्तियो के बारे में

- ऐसी संपत्तियां जो संस्थाओं के व्यावसा. यिक उद्देश्यों के लिए केंद्रीय हैं और जिनका उपयोग जनता/उपयोगकर्ताओं को बुनियादी ढांचा सेवाएं प्रदान करने के लिए किया जाता है, उन्हें मुख्य संपत्ति के रूप में माना जाता है।
- मुख्य परिसंपत्तियों में परिवहन (सड़क, रेल, बंदरगाह, हवाई अड्डे), बिजली उत्पादन, पारेषण नेटवर्क, पाइपलाइन, गोदाम आदि जैसे परिसंपत्ति वर्ग शामिल हैं।
- अन्य संपत्तियां, जिनमें आम तौर पर भूमि के टुकड़े और भवन शामिल हैं, को गैर-प्रमुख संपत्ति के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

4. मुद्रीकरण का अर्थ

- जब सरकार अपनी संपत्ति का मुद्रीकरण करती है, तो इसका अनिवार्य रूप से मतलब है कि वह एक निर्दिष्ट अवधि के लिए संपत्ति के राजस्व अधिकारों को एक निजी संस्था को हस्तांतरित कर रही है।
- इस तरह के लेन-देन में, सरकार को निजी संस्था से एक अग्रिम भुगतान, परिसंपत्ति से उत्पन्न राजस्व का नियमित हिस्सा, परिसंपत्ति में स्थिर निवेश का वादा, और मुद्रीकृत संपत्ति के शीर्षक अधिकार मिलते हैं।

5. एनएलएमसी की कार्यप्रणाली

- फर्म योग्यता आधारित दृष्टिकोण के साथ निजी क्षेत्र के पेशेवरों को नियुक्त करेगी।
- ऐसा इसलिए है क्योंकि अचल संपत्ति के परिसंपत्ति मुद्रीकरण के लिए संपत्ति के मूल्यांकन, बाजार अनुसंधान, निवेश बैंकिंग, भूमि प्रबंधन, कानूनी परिश्रम और अन्य संबंधित कौशलों में विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।
- एनएलएमसी एक एजेंसी के रूप में मुद्री. करण करेगा और भूमि मुद्रीकरण में सर्वोत्तम प्रथाओं की निर्देशिका के रूप में कार्य करने की उम्मीद है।

6. मुद्रीकरण के लिए उपलब्ध भूमि

- आर्थिक सर्वेक्षण 2021-2022 के अनुसार, अब तक, सीपीएसई ने संभावित मुद्रीकरण के लिए लगभग 3,400 एकड़ जमीन चिन्हित की है।
- उन्होंने इस जमीन की जानकारी को निवेश और लोक संपत्ति प्रबंधन विभाग को भेज दिया है।
- एमटीएनएल, बीएसएनएल, बीपीसीएल, बी एंड आर, बीईएमएल, एचएमटी लिमिटेड, इंस्ट्रुमेंटेशन लिमिटेड आदि जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम इसमें शामिल हैं।
- रेलवे और रक्षा मंत्रालयों के पास देश में सबसे अधिक सरकारी भूमि है।

7. एनएलएमसी के लिए चुनौतियां

- एनएलएमसी का प्रदर्शन और उत्पादकता उसके विनिवेश लक्ष्यों पर सरकार के प्रदर्शन पर भी निर्भर करेगी।
- वित्त वर्ष 2021-22 में, सरकार ₹78,000 करोड़ के लक्ष्य के मुकाबले ₹12,423.67 करोड़ जुटाने में सफल रही है, जिसे ₹ 1.75 लाख करोड़ से कम किया गया था।
- भारतीय जीवन बीमा निगम का आईपीओ रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण संकट में है।
- एयर इंडिया की बिकवाली में भी काफी समय लगा।
- मुद्रीकृत भूमि संपत्तियों के लिए लाभदायक राजस्व धाराओं की पहचान करना, निजी खिलाड़ी द्वारा पर्याप्त निवेश सुनिश्चित करना और विवाद समाधान तंत्र स्थापित करना भी महत्वपूर्ण कार्य हैं।
- एक और चुनौती सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) को मुद्रीकरण मॉडल के रूप में इस्तेमाल करना होगा।
- गंभीर बोलीदाताओं की कम उपस्थिति से अधिशेष सरकारी भूमि के संचालन में एकाधिकार या एकाधिकार की संभावना भी पैदा होगी।

कमोडिटीज और रूस-यूक्रेन युद्ध

1. खबरों में क्यों:

रूसी सेना द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण करने के बाद कमोडिटी की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि हुई है। ब्लूमबर्ग कमोडिटी इंडेक्स ने फरवरी, 2022 में 1960 के बाद से अपनी सबसे बड़ी साप्ताहिक वृद्धि दर्ज की।

2. कमोडिटी की कीमतों में वृद्धि के कारण

- रूस और यूक्रेन के बीच सैन्य संघर्ष के कारण वैश्विक कमोडिटी सप्लाई चेन में व्यवधान उत्पन्न हुआ है ।
- संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ रूसी बैंकों को स्विफ्ट भुगतान संदेश प्रणाली से काटकर और रूस के विदेशी भंडार को फ्रीज करके रूस की अर्थव्यवस्था को कमजोर करने के उपाय कर रहे हैं।
- यूक्रेन, वैश्विक गेहूं निर्यात का लगभग 12% और वैश्विक मक्का निर्यात का 13% आपूर्ति करता है।
- दुनिया के अन्य हिस्सों में आपूर्तिकर्ता रूस और यूक्रेन में उत्पादन के नुकसान की भरपाई के लिए अपने उत्पादन में वृद्धि करने में विफल रहे हैं।

3. कमोडिटी मुद्रास्फीति और रूस-यूक्रेन युद्ध

- 2021 के बाद से, जब सरकारों द्वारा लॉकडाउन को धीरे-धीरे हटा लिया गया और अर्थव्यवस्थाओं को खोलने की अनुमति दी गई, तब से कमोडिटी की कीमतों में काफी वृद्धि हुई है ।
- वैश्विक अर्थव्यवस्था में विभिन्न उतार-चढ़ावों के कारण, लॉकडाउन से बाधित आपूर्ति श्रृंखलाओं को सामान्य स्थिति में लौटने में कुछ समय लगा।
- माल की आपूर्ति सीमित थी और यह कमी उच्च कीमतों के रूप में परिलक्षित हुई ।
- एक विचार के रूप में, कई देश द्वारा जीवाश्म ईंधन को अक्षय ऊर्जा से बदलना, जिंसों की कीमतों में वृद्धि के पीछे संभावित कारण हो सकता हैं।
- अक्षय ऊर्जा पर जोर ने निवेशकों को पारंपरिक जीवाश्म ईंधन के उत्पादन में निवेश करने से हतोत्साहित किया है।
- महामारी के दौरान प्रमुख वैश्विक केंद्रीय बैंकों को अपनी अर्थव्यवस्थाओं में भारी मात्रा में धन आपूर्ती की, जिससे मांग-आपूर्ति अंतर पैदा हो गया है ।
- ब्लूमबर्ग कमोडिटी इंडेक्स द्वारा मापी गई वैश्विक कमोडिटी की कीमतों में 2021 की शुरुआत से 60% से अधिक की वृद्धि हुई है।

4. रूस की ऊर्जा और वस्तु निर्यात

- **कच्चा तेल**

अमेरिका और सऊदी अरब के बाद रूस दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल उत्पादक देश है। यह वैश्विक तेल उत्पादन के लगभग 12% के लिए जिम्मेदार है। रूस का लगभग 60% तेल निर्यात ओईसीडी यूरोप और 20% चीन को जाता है।

- **प्राकृतिक गैस**

रूस ने दुनिया की लगभग 16% प्राकृतिक गैस का उत्पादन किया। रूस यूरोपीय संघ की लगभग आधी गैस की आपूर्ति करता है। 2021 में, रूस, यूरोपीय संघ के गैस आयात का लगभग 45% और इसकी कुल गैस खपत का 40% का आपूर्तिकर्ता था ।

- **सोना**

ऑस्ट्रेलिया और चीन के बाद रूस दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सोने का उत्पादक है। इसने पिछले साल लगभग 350 टन कीमती धातु की आपूर्ति की थी।

- **कोयला**

रूस दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा कोयला उत्पादक देश है।

- **गेहूं**

रूस ने पिछले साल 75.5 टन गेहूं का उत्पादन किया, और यह वैश्विक निर्यात आपूर्ति का लगभग 17% के साथ सबसे बड़ा गेहूं निर्यातक देश है।

- **निकेल**

रूस वैश्विक निकल उत्पादन का लगभग 7% हिस्सा है और तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। निकेल इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए स्टेनलेस स्टील और बैटरी के उत्पादन में एक प्रमुख घटक है।

- **पैलेडियम**

पैलेडियम के दुनिया के सबसे बड़े उत्पादक के रूप में स्थिति के लिए रूस दक्षिण अफ्रीका के साथ प्रतिस्पर्धा में रहता है। ऑटोमोबाइल में उत्सर्जन को कम करने के लिए, उत्प्रेरक कन्वर्टर्स के उत्पादन में पैलेडियम का उपयोग किया जाता है।

- **तांबा**

रूस वैश्विक तांबे का लगभग 3.5% आपूर्ति करता है, जिसका उपयोग तारों और बिजली के तारों में किया जाता है।

- **एल्युमिनियम**

चीन के बाद रूस दुनिया का सबसे बड़ा एल्युमीनियम उत्पादक देश है। यह वैश्विक आपूर्ति का लगभग 6% है।

5. भविष्य की राह

- रूस-यूक्रेन युद्ध की प्रक्रिया, जो इस समय अप्रत्याशित है, स्वाभाविक रूप से आगे आने वाली वस्तुओं की कीमत को प्रभावित करेगी।
- यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि रूस की अर्थव्यवस्था को दुनिया के बाकी हिस्सों से काटने से न केवल रूस प्रभावित हो सकता है, बल्कि उन व्यवसायों और उपभोक्ताओं को भी प्रभावित कर सकता है जो रूसी अर्थव्यवस्था पर निर्भर हैं।
- युद्ध और प्रतिबंधों से केवल रूस ही नहीं बल्कि शेष विश्व भी पीड़ित होगा।
- चूंकि वैश्विक अर्थव्यवस्था महामारी से उबरने के लिए संघर्ष कर रही है जबकि कीमतें तेजी से बढ़ रही हैं, विश्लेषकों ने मुद्रास्फीतिजनित मंदी के जोखिम के बारे में चेतावनी दी है, जो उच्च मूल्य मुद्रास्फीति और कम विकास द्वारा चिह्नित है।

टक्कर रोधी प्रणाली 'कवच'

1. खबरों में क्यों

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने दक्षिण मध्य रेलवे के सिकंदराबाद मंडल के लिंगमपल्ली-विकाराबाद खंड के बीच स्वदेशी टक्कररोधी सुरक्षा प्रणाली 'कवच' के कार्यप्रणाली की समीक्षा की।

2. कवच के बारे में

- यह इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के साथ-साथ ट्रेन के इंजनों में सिग्नलिंग सिस्टम और रेल पटरियों में स्थापित रेडियो फ्रीक्वेंसी पहचान उपकरणों का एक सेट है, जो सिस्टम में प्रोग्राम किए गए तर्क के आधार पर, ट्रेन के ब्रेक को नियंत्रित करने के लिए अल्ट्रा हाई रेडियो फ्रीक्वेंसी का उपयोग करते हुए एक दूसरे से संपर्क करते हैं और ड्राइवरों को भी सचेत करते हैं।
- कवच की मुख्य विशेषताओं में से एक यह है कि ट्रेन की आवाजाही की जानकारी को लगातार अपडेट करके, जब एक लोको पायलट सिग्नल तोड़ता है तब यह ट्रिगर भेजने में सक्षम होता है, जिसे सिग्नल पास्ड एट डेंजर के रूप में जाना जाता है, जो एक गंभीर अपराध है जिससे टक्कर जैसी दुर्घटनाएं होती हैं।
- इसके अलावा, उपकरण लोको के आगे लगातार संकेतों को रिले करते हैं, जिससे यह कम दृश्यता खासकर घने कोहरे में लोकोमोटिव पायलटों के लिए उपयोगी हो जाता है ।
- कवच प्रणाली में यूरोपीय ट्रेन सुरक्षा और चेतावनी प्रणाली, साथ ही स्वदेशी एंटी कॉलिसन डिवाइस शामिल हैं।
- भविष्य में भी इसमें हाई-टेक यूरोपियन ट्रेन कंट्रोल सिस्टम (**ETCS**) लेवल-2 की विशेषताएं होंगी।
- कवच प्रणाली का वर्तमान स्वरूप सुरक्षा अखंडता स्तर 4 का पालन करता है जो सुरक्षा और विश्वसनीयता मानक का उच्चतम स्तर है।

3. ट्रेन सुरक्षा प्रणाली में संशोधन

- सरकार कवच को एक निर्यात योग्य प्रणाली के रूप में स्थापित करना चाहती है, जो यूरोपीय प्रणालियों के लिए एक सस्ता विकल्प होगा।
- वर्तमान में कवच अल्ट्रा हाई फ्रीक्वेंसी का उपयोग करता है, हालाँकि, सिस्टम को **4G** लॉन्ग टर्म इवोल्यूशन तकनीक के अनुकूल बनाने और इसे वैश्विक बाजारों के लिए बनाने पर काम चल रहा है ।
- कवच को इस तरह बनाने पर काम चल रहा है कि यह दुनिया भर में अन्य स्थापित सिस्टम के साथ संगत हो सके।
- लखनऊ में आरडीएसओ निजी वेंडरों के साथ मिलकर सिस्टम विकसित कर रहा है।
- एक बार शुरू होने के बाद, कवच दुनिया में सबसे सस्ती स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली हो सकती है, जिसकी रोलआउट लागत लगभग 30 लाख रुपये से 50 लाख रुपये प्रति किलोमीटर है, जो दुनिया भर में समकक्ष प्रणालियों की लागत का एक चौथाई है ।
- अगले चरण में कवच प्रणाली मार्ग में अस्थायी गति प्रतिबंधों के अनुसार पुनर्गणना करने में भी सक्षम होगी।

4. भारतीय रेलवे में कवच

- स्वदेश में विकसित ट्रेन टक्कर बचाव प्रणाली (टीसीएएस) कवच, दक्षिण मध्य रेलवे (एससीआर) क्षेत्र में इस वर्ष 2,000 किमी तक चालू होने के बाद, प्रत्येक वर्ष 4,000-5,000 किमी की दूरी तय करके देशव्यापी कार्यान्वयन के लिए तैयार है।
- दक्षिण मध्य रेलवे की चल रही परियोजनाओं में 1,098 किलोमीटर और 65 इंजनों पर कवच तैनात किया गया है।
- भविष्य में इसे दिल्ली-मुंबई और दिल्ली-हावड़ा कॉरिडोर के 3000 किमी पर लागू किया जाएगा जहां 160 किमी प्रति घंटे की शीर्ष गति की मेजबानी के लिए पटरियों और प्रणालियों को अपग्रेड किया जा रहा है।
- 250 किमी के परीक्षण खंड के अलावा, वर्तमान में कवच दक्षिण मध्य रेलवे के 1200 किमी, बीदर-परली वैनाथ-परभणी और मनमाड-परभणी-नांदेड़, सिकंदराबाद-गडवाल-धोने-गुंतकल खंडों पर लागू किया जा रहा है।
- इसके अलावा, उच्च घनत्व नेटवर्क (**HDN**) पर 34,000 किमी से अधिक और स्वर्णिम चतुर्भुज पर अत्यधिक उपयोग किए गए नेटवर्क (**HUN**) को इसकी स्वीकृत योजनाओं में शामिल किया गया है।
- चार साल पहले, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने रेलवे के पूरे नेटवर्क में **ETCS**-स्तर 2 प्रणाली को लागू करने की योजना को ठुकरा दिया था और रेलवे से भविष्य के उन्नयन के लिए स्वदेशी, सस्ता समाधान तलाशने के लिए कहा था।

5. भविष्य की राह

- 2022 के केंद्रीय बजट में आत्मनिर्भर भारत के एक भाग के रूप में घोषित, 2022-23 में सुरक्षा और क्षमता वृद्धि के लिए 2,000 किलोमीटर रेल नेटवर्क को स्वदेशी विश्व स्तरीय प्रौद्योगिकी 'कवच' के तहत लाने की योजना है।
- किफायती होने के कारण, इस प्रणाली में यूरोपीय और ऑस्ट्रेलियाई प्रणालियों का विकल्प बनने की पूरी क्षमता है।

उत्तर-पूर्व के लिए अंतर्देशीय-जल परिवहन प्रणाली

1. खबरों में क्यों

भारतीय खाद्य निगम (FCI) के लिए 200 मीट्रिक टन (MT) खाद्यान्न ले जाने वाला एक जहाज ने 6 मार्च को ब्रह्मपुत्र के दक्षिणी तट पर गुवाहाटी के पांडु बंदरगाह पर डॉक किया था।

2. परियोजना

- बांग्लादेश के रास्ते भारत में गंगा-बेल्ट से उत्तर-पूर्व (एनई) तक कार्गो की शिपिंग एफसीआई की पायलट परियोजना थी।
- 2018 में एक पायलट प्रयोग किया गया था जब 1,233 टन फ्लाई ऐश ले जाने वाले 1,000 टन के दो बार्ज ने बिहार के कहलगांव से पांडु तक एक महीने से अधिक समय तक 2,085 किमी की यात्रा की।
- **FCI** कार्गो से **NW1** (हल्दिया से प्रयागराज) और **NW2** (धुबरी से सदिया) के बीच नियमित सेवाएं शुरू होने की उम्मीद है, जो पूर्वोत्तर के लिए "अंतर्देशीय जल परिवहन के एक नए युग की शुरुआत" होगी ।

3. जलमार्ग के लाभ:

- तुलनात्मक लाभ: अंतर्देशीय जलमार्ग परिवहन के अन्य साधनों की तुलना में अत्यधिक सस्ता और पर्यावरण अनुकूल है, विशेष रूप से लंबी दूरी में।
- भीड़ में कमी : अंतर्देशीय जलमार्ग परिवहन भारत में भीड़भाड़ वाले रेल और सड़क नेटवर्क की भीड़भाड़ को कम करने में भी मदद करेगा।
- क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा: भारत और नेपाल ने व्यापार संधि में अंतर्देशीय जलमार्ग को शामिल करने के लिए सहमति व्यक्त की है। भूटान के पत्थर निर्यातकों ने परिवहन के वैकल्पिक साधन के रूप में अंतर्देशीय जलमार्गों को चिन्हित किया है।
- कुशल और प्रभावी ऊर्जा खपत: एक अश्वशक्ति पानी में 4000 किग्रा भार ले जा सकती है जबकि यह सड़क और रेल द्वारा क्रमशः 150 किग्रा और 500 किग्रा भार ढो सकती है।
- कम रखरखाव लागत: नहरों के निर्माण और रखरखाव की लागत बहुत कम है, इसके अलावा, अंतर्देशीय जल परिवहन के संचालन की लागत बहुत कम है।

4. भारत में अंतर्देशीय जलमार्ग की सीमाएं

- बाढ़ और सूखा: मानसून में नदियों में बाढ़ आ जाती है, जबकि शेष वर्ष में पानी की कमी रहती है।
- भारतीय दुविधा: सिंचाई के लिए पानी या परिवहन के लिए पानी।
- उत्तर पूर्व भारत की नदियाँ चट्टानी क्षेत्रों से होकर बहती हैं। इसलिए कई क्षेत्रों में झरने के कारण नाव चलाने के लिए उपयुक्त नहीं हैं।
- लास्ट माइल कनेक्टिविटी : नावों की तुलना में रेलवे के पास एंड टू एंड कनेक्टिविटी बेहतर है।

5. NW1 और NW2 का महत्व

- **महत्वपूर्ण टर्मिनलों को जोड़ना:**

i. यह भारत में भागलपुर, मनिहारी, साहिबगंज, फरक्का, त्रिवेणी, कोलकाता, हल्दिया, हेमनगर, बांग्लादेश में खुलना, नारायणगंज, सिराजगंज और चिलमारी और फिर भारत में धुबरी और जोगीघोपा से होते हुए 2,350 किलोमीटर की दूरी तय करता है।

- **कनेक्टिविटी और विकास:**

i. स्वतंत्रता के समय, असम की प्रति व्यक्ति आय देश में सबसे अधिक थी। इसका मुख्य कारण ब्रह्मपुत्र और बराक नदी (दक्षिणी असम) प्रणालियों के माध्यम से बंगाल की खाड़ी में स्थित बंदरगाहों तक पहुंच था।

ii. 1947 के बाद फेरी सेवाएं छिटपुट रूप से जारी रहीं लेकिन 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध के बाद बंद हो गईं, क्योंकि तब बांग्लादेश पूर्वी पाकिस्तान हुआ करता था।

iii. उत्तर पूर्व की स्थिति खराब हो गई क्योंकि नदी मार्ग काट दिए गए और षचिकन नेकष के माध्यम से रेल और सड़क परिवहन महंगे विकल्प थे।

iv. भारत-बांग्लादेश प्रोटोकॉल (आईबीपी) मार्ग के माध्यम से कार्गो आवाजाही की शुरुआत व्यापार के लिए एक व्यवहार्य, आर्थिक और पारिस्थितिक विकल्प प्रदान करने जा रही है।

vi. पूर्वोत्तर के विकास के लिए निर्बाध कार्गो परिवहन एक आवश्यकता रही है।

- **पूर्वोत्तर के विकास के लिए सरकारी सहायता:**

i. पीएम गति शक्ति पहल ने पूर्वोत्तर को धीरे-धीरे एक कनेक्टिविटी हब में बदलने और ब्रह्मपुत्र, जो बांग्लादेश में गंगा से मिलती है, पर कार्गो की आवाजाही को तेज करने की परिकल्पना की ।

ii. इन नदियों को बांग्लादेश में जमुना और पद्मा कहा जाता है। इनके माध्यम से बहु टर्मिनल विकास अन्य क्षेत्रों में सकारात्मक स्पिलओवर प्रभाव प्रदान करेगा।

6. निष्कर्ष

- एफसीआई के लिए 200 मीट्रिक टन खाद्यान्न ले जाने वाले मालवाहक पोत के डॉकिंग ने पूर्वोत्तर में अंतर्देशीय जल परिवहन प्रणाली के लिए आशा को फिर से जगा दिया है।
- पोत 2,350 किमी की दूरी तय करते हुए भारत और बांग्लादेश के महत्वपूर्ण शहरों से होकर गुजरा है।

डाटासेंटर एवं ऊष्मा

1. खबरों में क्यों:

माइक्रोसॉफ्ट ने फिनलैंड में घरों, ऑफिस और व्यवसायों को एक नए डेटासेंटर से स्थायी अपशिष्ट ऊष्मा के द्वारा गर्म करने के लिए फिनिश ऊर्जा कंपनी **Fortum** के साथ भागीदारी की है, जिसे माइक्रोसॉफ्ट ने फिनलैंड में हेलसिंकी महानगरीय क्षेत्र में बनाने की योजना बनाई है।

2. डाटासेंटर के बारे में

- डेटासेंटर एक भौतिक सुविधा है जिसका उपयोग संगठन अपने महत्वपूर्ण अनुप्रयोगों और डेटा को संग्रहीत करने, डेटा को संसाधित करने और उपयोगकर्ताओं को प्रसारित करने के लिए करते हैं।
- यह कंप्यूटिंग और भंडारण संसाधनों के एक नेटवर्क के आधार पर डिजाइन किया गया है जो साझा अनुप्रयोगों और डेटा के वितरण को सक्षम बनाता है।
- डाटासेंटर के प्रमुख घटक राउटर, स्विच, फायरवॉल, स्टोरेज सिस्टम, सर्वर और एप्लिकेशन डिलीवरी कंट्रोलर हैं।
- कई बड़े डेटा केंद्र समर्पित भवनों में स्थित हैं।
- छोटे डेटा केंद्र कई कार्यों को पूरा करने के लिए बनाए गए भवनों के भीतर विशेष रूप से डिजाइन किए गए कमरों में स्थित हो सकते हैं।

3. डेटा केंद्रों द्वारा उत्पन्न ऊष्मा

- लाइफलाइन डेटासेंटर के अनुसार, डेटासेंटर के गलियारों में दर्ज तापमान 80 और 115 डिग्री फारेनहाइट के बीच होता है।
- वैश्विक साइबर सुरक्षा फर्म कास्पर्सकी का अनुमान है कि डेटासेंटर की 75% से अधिक बिजली ऊष्मा के रूप में बेकार जाती है।
- यह नोट किया गया कि सर्दियों में, एक डाटासेंटर एक नए घर में हीट पंप की तुलना में बेहतर ऊर्जा दक्षता के साथ, गैस बॉयलर के समान 85°F तक हीटिंग प्रदान कर सकता है।

4. डाटासेंटर के कार्बन फुटप्रिंट्स

- वैश्विक स्तर पर, डेटासेंटर लगभग 200 टेरावाट घंटे (TWh) बिजली की खपत करते हैं, जो दुनिया की कुल बिजली का 1% से अधिक है।
- अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार, डेटा सेंटर, सभी वैश्विक CO_2 उत्सर्जन में 0.3% का योगदान करते हैं।
- आयरलैंड के ऊर्जा नियामक का कहना है कि डेटासेंटर 2027 तक देश की लगभग 30% बिजली का उपयोग कर सकते हैं, जिससे जलवायु लक्ष्यों को खतरा हो सकता है।

5. कार्बन उत्सर्जन में कटौती की माइक्रोसॉफ्ट की योजना

- माइक्रोसॉफ्ट के अनुसार, रीसाइकल्ड अपशिष्ट ऊष्मा, अन्य कार्बन कटौती उपायों के साथ, एस्पू शहर को उनके ब्व2 उत्सर्जन में कमी के लक्ष्य तक पहुंचने में मदद कर सकती है।
- यह शहर में फोर्टम की अंतिम कोयला आधारित ताप इकाई को बंद करने में भी मदद कर सकता है।
- फोर्टम के अनुमान के अनुसार, ऊष्मा पुनर्चक्रण प्रणाली हेलसिंकी में घरों, व्यवसायों और सार्वजनिक भवनों को स्वच्छ ऊष्मा प्रदान कर सकती है, और सालाना 4,00,000 टन CO_2 उत्सर्जन को कम कर सकती है।
- कंपनी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि एक बार नए डेटा सेंटर क्षेत्र के अपशिष्ट ऊष्मा कैप्चर के संचालन में होने के बाद, क्षेत्र के कुल ताप का लगभग 60% जलवायु के अनुकूल अपशिष्ट ऊष्मा से उत्पन्न होगा।

6. कार्यप्रणाली

- फोर्टम नए डेटासेंटर क्षेत्र द्वारा उत्पन्न अतिरिक्त ऊष्मा को पकड़ लेगा और सर्वर कूलिंग प्रक्रिया से स्वच्छ ऊष्मा को घरों, सेवाओं और व्यावसायिक परिसरों में स्थानांतरित कर देगा जो जिला हीटिंग सिस्टम से जुड़े हैं।
- डिस्ट्रिक्ट हीटिंग एक केंद्रीकृत स्थान में ऊष्मा को कैप्चर करके और फिर इसे आवासीय और वाणिज्यिक हीटिंग जरूरतों के लिए इमारतों में वितरित करके ऊष्मा पैदा करने की एक प्रणाली है।
- ऊष्मा को ग्राहकों को गर्म पानी के रूप में स्थानांतरित किया जाता है जिसे इंसुलेटेड भूमिगत पाइपों के माध्यम से पंप किया जाता है।
- जिला तापन की नई पीढ़ी जीवाश्म ईंधन के स्थान पर अक्षय बिजली, ताप पंप और अपशिष्ट ऊष्मा उपयोग जैसे लचीले समाधानों पर आधारित है।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पूरे सिस्टम के संचालन को अनुकूलित करने में मदद करेगा।

7. डेटा केंद्रों से ऊष्मा का पुनर्चक्रण करने वाले देश

- डिस्ट्रिक्ट हीटिंग नॉर्डिक और बाल्टिक देशों के साथ-साथ रूस और चीन में भी लोकप्रिय है, जहां सर्दियों के दौरान अत्यधिक ऊष्मा की मांग होती है।
- डाटासेंटर ठंडी जलवायु में फलते-फूलते हैं।
- ठंडी जलवायु में सर्वर रूम को ठंडा करने की आवश्यकता कम होती है।
- ठंड का मौसम भी एक संपत्ति है क्योंकि प्रौद्योगिकी कंपनियां अपनी ऊष्मा बेचने के लिए शिफ्ट हो जाती हैं, जिसकी गर्म मौसम में बहुत अधिक मांग नहीं होती है।

8. अन्य कंपनियों द्वारा पहल

- फेसबुक ओडेंस, डेनमार्क में आस-पास के 6,900 घरों को गर्म करके अपनी बेकार ऊष्मा का उपयोग कर रहा है।
- **Apple** डेनमार्क में एक डेटा केंद्र बना रहा है और इसे अक्षय ऊर्जा द्वारा चलाने की योजना है और आस-पास के कार्यालय भवनों को गर्म करने के लिए अपशिष्ट ऊष्मा का उपयोग करने की योजना है।
- स्विट्ज़रलैंड में एक आईबीएम डेटासेंटर पास के सामुदायिक पूल को गर्म कर रहा है।
- कनाडा में, संचार कंपनी क्यूबेकर एक स्थानीय समाचार पत्र के संपादकीय कार्यालय को अपनी ऊष्मा दान करती है।

आईआईटी रुड़की में परमगंगा

1. खबरों में क्यों

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) रुड़की द्वारा 7 मार्च, 2022 को आईआईटी रुड़की में मेड इन इंडिया पेटास्केल सुपर. कंप्यूटर "परम गंगा" स्थापित किया गया है। सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यू. टिंग (सी-डीएसी) द्वारा आईआईटी रुड़की में 1.66 पीएफएलओपीएस (पेटा फ्लोटिंग. -पॉइंट ऑपरेशंस प्रति सेकंड) सुपरकंप्यूटिंग की स्थापना राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (NSM) के तहत की गई है।

2. सुपर कंप्यूटर के बारे में

- सुपर कंप्यूटर एक सामान्य प्रयोजन के कंप्यूटर की तुलना में उच्च स्तर के प्रदर्शन वाला कंप्यूटर है।
- सुपरकंप्यूटर का प्रदर्शन **million instructions per second (MIPS)** के बजाय **floating-point operations per second (FLOPS)** में मापा जाता है।
- सुपरकंप्यूटर में हजारों प्रोसेसर होते हैं और यह प्रति सेकंड अरबों और खरबों गणना या संगणना कर सकते हैं।
- सुपरकंप्यूटर का उपयोग डेटा-गहन और गणना- वैज्ञानिक और इंजीनियरिंग उद्देश्यों जैसे क्वांटम यांत्रिकी, मौसम पूर्वानुमान, तेल और गैस की खोज, आणविक मॉड. लिंग, भौतिक सिमुलेशन, वायुगतिकी, परमाणु संलयन अनुसंधान और क्रिप्टैनालि. सिस के लिए किया जाता है।

3. एनएसएम के बारे में

- राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (NSM) को इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्र. ालय (MeiTY) और विज्ञान और प्रौद्यो. गिकी विभाग (DST) द्वारा संयुक्त रूप से संचालित किया गया है और सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस कंप्यूटिंग (C&-DAC) और इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ सा. इंस, बेंगलुरु द्वारा कार्यान्वित किया गया है।
- एनएसएम के चार प्रमुख स्तंभ
  - बुनियादी ढांचा
  - एप्लीकेशन
  - आर एंड डी
  - एचआरडी

4. सी-डीएसी की भूमिका

- बिल्ड अप्रोच के तहत, सी-डीएसी चरणबद्ध तरीके से एक स्वदेशी सुपरकंप्यूटिंग पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण कर रहा है, जो स्वदेशी रूप से डिजाइन और निर्मित सुपर कंप्यूटरों के लिए अग्रणी है।
- इसने एक कंप्यूट सर्वर ष्रुद्रष् और हाई-. स्पीड इंटरकनेक्ट ष्त्रिनेत्रष् को डिजाइन और विकसित किया है जो सुपर कंप्यूटर के लिए आवश्यक प्रमुख उप-असेंबली हैं।

- मिशन के निर्माण दृष्टिकोण के तहत सी-डीएसी को सुपरकंप्यूटिंग सिस्टम के डिजाइन, विकास, परिनियोजन और कमीशनिंग की जि. म्मेदारी सौंपी गई है।
- मिशन की 64 से अधिक पेटाफ्लॉप्स की संचयी गणना शक्ति के साथ 24 सुपर कंप्यूटर के निर्माण की योजना है।
- अब तक सी-डीएसी ने **IISc, IIT, IISER** पुणे, **JNCASR, NABI**-मोहाली और **C-DAC** में छैड चरण-1 और चरण -2 के तहत 20 से अधिक पेटाफ्लॉप्स की संचयी गणना शक्ति के साथ 11 प्रणालियों को क्रियान्वित किया है।
- एनएसएम सिस्टम पर अब तक देश भर में लगभग 3600 शोधकर्ताओं द्वारा कुल 36,00,000 कम्प्यूटेशनल क्रियाएं सफलता. पूर्वक पूरी की जा चुकी हैं।

5. एनएसएम.द्वारा विकसित अनुप्रयोग

- जीनोमिक्स और ड्रग डिस्कवरी के लिए एनएसएम प्लेटफॉर्म।
- शहरी मॉडलिंग: शहरी पर्यावरण मुद्दों (मौसम विज्ञान, जल विज्ञान, वायु गुणवत्ता) के समाधान के लिए विज्ञान आधारित निर्णय समर्थन ढांचा।
- भारत के नदी घाटियों के लिए बाढ़ पूर्व चेतावनी और भविष्यवाणी प्रणाली।
- तेल और गैस अन्वेषण में सहायता के लिए भू. कंपीय इमेजिंग के लिए एचपीसी सॉफ्टवेयर सूट।
- एमपीपीएलबी: टेलीकॉम नेटवर्क ऑप्टिमाइजेशन।

6. सुपरकंप्यूटिंग के क्षेत्र में भारत

- भारत राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (एनएसएम) के साथ उच्च शक्ति कंप्यूटिंग में एक अग्रणी के रूप में तेजी से उभर रहा है, जो इसे शिक्षा, शोधकर्ताओं, एमएसएमई और तेल की खोज, बाढ़ की भविष्यवाणी, जीनोमिक्स और दवा की खोज जैसे क्षेत्रों में स्टार्ट-अप की बढ़ती कम्प्यूटेशनल मांगों को पूरा करने के लिए बढ़ा रहा है।
- देश भर में विभिन्न संस्थानों में स्थापित सुपर कंप्यूटर बुनियादी ढांचे ने अनुसंधान एवं विकास समुदाय को वैज्ञानिक और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए प्रमुख मील के पत्थर, उद्देश्यों और उत्पादों को प्राप्त करने में मदद की है।

7. निष्कर्ष

- सुपरकंप्यूटिंग समस्या समाधान और डेटा विश्लेषण को सक्षम बनाता है जो मानक कंप्यूटरों के साथ असंभव, बहुत समय लेने वाला या महंगा होगा, उदाहरण के लिए, द्रव गतिकी गणना।
- आज, बिग डेटा एक सम्मोहक उपयोग का मामला प्रस्तुत करता है।
- एक सुपरकंप्यूटर अन्यथा अभेद्य जानकारी के विशाल भंडार में अंतर्दृष्टि की खोज कर सकता है।

- देश भर में विभिन्न संस्थानों में स्थापित सुपर कंप्यूटर बुनियादी ढांचे ने अनुसंधान एवं विकास समुदाय को वैज्ञानिक और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए प्रमुख लक्ष्यों , उद्देश्यों और उत्पादों को प्राप्त करने में मदद की है।

श्रीलंकाई आर्थिक संकट

1. खबरों में क्यों

कोविड -19 महामारी से उत्पन्न श्रीलंका की विकट आर्थिक स्थिति, भोजन की कमी, नागरिकों को भारतीय तटों पर भागने के लिए मजबूर कर रही है। 22 मार्च को, आठ बच्चों सहित 16 श्रीलंकाई नागरिक तमिलनाडु पहुंचे। पेपर की कमी के कारण अधिकारियों को छात्रों की स्कूल परीक्षा रद्द करनी पड़ी।

2. श्रीलंकाई अर्थव्यवस्था की स्थिति

- 2020 में, महामारी ने पर्यटन उद्योग को नष्ट कर दिया, जो श्रीलंका के मुख्य विदेशी मुद्रा अर्जक में से एक है। इससे द्वीपियदेश में डॉलर का संकट पैदा हो गया।
- सरकार के अचानक से जैविक खेती पर स्विच करने से समस्या और बढ़ गई।
- श्रीलंका पेट्रोलियम, भोजन, कागज, चीनी, दाल, दवाएं, और परिवहन उपकरण जैसी आवश्यक वस्तुओं के आयात पर बहुत अधिक निर्भर है।
- सेंट्रल बैंक ऑफ श्रीलंका के विदेशी मुद्रा भंडार के घटकर लगभग 2.3 बिलियन डॉलर हो जाने से आयात और विदेशी ऋण के भुगतान हेतु बड़ा संकट पैदा हो गया है।
- इस वर्ष श्रीलंका को डॉलर मूल्यवर्ग में $6 बिलियन से अधिक ऋण राशि, वापस करनी है, जिसमें जुलाई में परिपक्व होने वाला $1 बिलियन का सॉवरेन बांड भी शामिल है।
- प्रिंटिंग पेपर की भारी कमी के कारण सरकार को स्कूल परीक्षाओं को रद्द करना पड़ा है।
- इसकी एकमात्र ईंधन रिफाइनरी में नवंबर 2021 से कच्चे तेल की कमी हो गई है ।
- फरवरी में उपभोक्ता कीमतों में 15% की वृद्धि हुई है, जो 13 एशियाई अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेज है।

3. संतुलन स्थापित करने की चुनौती

- श्रीलंका का सार्वजनिक ऋण 2019 में 94% से बढ़कर 2021 में सकल घरेलू उत्पाद का 119% होने का अनुमान है।
- विश्लेषकों के अनुसार, देश को या तो कर्ज के पुनर्गठन की जरूरत है या राहत पैकेज के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के मदद की जरूरत है।
- आईएमएफ विकल्प को आगे बढ़ाने के बारे में सरकार में संशय की स्थिति थी। वित्त मंत्री ने कहा कि आईएमएफ राहत समेत सभी विकल्प तलाशे जा रहे हैं।
- परन्तु केंद्रीय बैंक के गवर्नर ने कहा कि श्रीलंका को आईएमएफ की मदद की जरूरत नहीं है क्योंकि उसके पास एक वैकल्पिक रणनीति है।

4. संकट से निपटने की चुतौती

- फरवरी में, केंद्रीय बैंक ने सभी आगामी ऋण दायित्वों का सम्मान करने के बारे में कहा और देश के डिफॉल्ट के कगार पर होने की खबरों का खंडन किया।
- देश निकट भविष्य में घरेलू परिस्थितियों को स्थिर करने को प्राथमिकता दे सकता है और एक गहरे आर्थिक संकट को टाल सकता है।
- श्रीलंकाई लोगों के लिए, देश का ऋण संकट, बढ़ती चिंता और हताशा का कारण बन गया है। लोग चिंतित हैं और सरकार पर काफी गुस्सा है।

5. सरकार का प्रतिरोध

- राष्ट्रपति राजपक्षे के खिलाफ नागरिक और राजनीतिक दल विरोध करने हेतु सड़कों पर उतर रहे हैं।
- कई मीडिया घराने सरकार की आलोचना कर रहे हैं, जबकि सोशल मीडिया के पेज राजपक्षे पर तीखी टिप्पणियों से भरे हुए हैं।

6. श्रीलंका के कदम

- श्रीलंका मदद के लिए चीन और भारत की ओर रुख कर रहा है।
- चीन कथित तौर पर श्रीलंका से 2.5 अरब डॉलर के ऋण अनुरोध पर विचार कर रहा है।
- इसके भीतर, ऋण $1 बिलियन का होगा और एक क्रेडिट लाइन $1.5 बिलियन का गठन करेगी।
- यह उस 2.8 बिलियन डॉलर की सहायता के अतिरिक्त है जिसे चीन ने महामारी के प्रकोप के बाद से श्रीलंका को दिया है।
- भारत ने भी अपने पड़ोसी की सहायता के लिए कदम बढ़ाया है।
- वित्त मंत्री बासिल राजपक्षे की नई दिल्ली यात्रा के दौरान भारतीय स्टेट बैंक और श्रील.ंका सरकार के बीच एक समझौता हुआ।
- भारत श्रीलंका सरकार को एक अरब डॉलर की ऋण सुविधा देने पर सहमत हुआ, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि वह लोगों के लिए भोजन, दवाएं और अन्य आवश्यक वस्तुओं की खरीद कर सके।
- श्रीलंका अंततः आईएमएफ से सहायता मांग रहा है। बासिल राजपक्षे संकट का समाधान निकालने पर चर्चा करने के लिए अगले महीने वाशिंगटन जाएंगे।
- राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे ने कहा कि उन्होंने कोलंबो की सहायता के लिए आईएमएफ कार्यक्रम को मंजूरी दे दी है।

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण से संबंधित प्रश्न

Q1. वायुमंडलीय ओजोन स्तर जो हमें अल्ट्रा वायलेट-बी और सी से सुरक्षित करता है, में छिद्र अधिकांशतया अधिकता से होता है-

(a) क्लोरोफ्लोरोकार्बन के
(b) कार्बन मोनोऑक्साइड के
(c) कार्बन डाइऑक्साइड के
(d) सल्फर डाइऑक्साइड के

Q2. निम्नांकित में से किस बायोम में अधिकतम विविधता पायी जाती है?

(a) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन
(b) उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन
(c) उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन
(d) टेम्परेट आर्द्र वन

Q3. निम्नांकित में से कौन सा जल जनित बीमारी है?

(a) चेचक
(b) मेनिनजाइटिस
(c) मलेरिया
(d) कालरा

Q4. एक जल निकाय के संदर्भ में 'मृत' शब्दावली इशारा करती है?

(a) एक जल निकाय की जलीय जीवन को बनाये रख पाने की अक्षमता।
(b) एक जल निकाय की जलीय जीवन को बनाये रख पाने की क्षमता।
(c) एक जल निकाय की प्रवाह की अक्षमता।
(d) एक जल निकाय का उष्णन अथवा शीतलन

Q5. निम्नांकित में से कौन सा एक सामान्यतया प्रदूषक नहीं है?

(a) कार्बन मोनोऑक्साइड
(b) कार्बन डाइऑक्साइड
(c) हाइड्रोकार्बन्स
(d) सल्फर डाइऑक्साइड

Q6. सूर्य के प्रकाश से आने वाली अल्ट्रावायलेट विकिरण प्रतिक्रिया करती है, जो उत्पन्न करता है?

(a) फ्लूओराइड्स
(b) ओजोन
(c) कार्बन मोनोऑक्साइड
(d) सल्फर डाइऑक्साइड

Q7. डीडीटी है-

(a) एक ग्रीन हाउस गैस
(b) निरंतरता वाला आर्गनिक प्रदूषक
(c) विघटनीय प्रदूषक
(d) इनमें से कोई नहीं

Q8. प्राकृतिक प्रक्रियाओं के अंतर्गत घरेलू अपशिष्टों का डीकंपोजीशन कहलाता है-

(a) औद्योगिक प्रदूषण
(b) तापीय प्रदूषण
(c) जैव विघटनीय प्रदूषण
(d) अजैवविघटनीय प्रदूषण

Q9. यूट्रोफिकेशन (पोषक तत्वों की अधिकता) सामान्यता देखी जाती है।

(a) पहाड़ों में
(b) रेगिस्तानों में
(c) ताजे जल के झीलों में
(d) महासागरों में

Q10. सीवेज द्वारा प्रदूषित जल में मछलियाँ मर जाती हैं-

(a) पैथोजेन्स के कारण
(b) ऑक्सीजन में कमी के कारण
(c) सिल्ट द्वारा गलफड़ों की क्लागिंग के कारण
(d) गंदे दुर्गन्ध के कारण

Q11. फ्लूराइड प्रदूषण मुख्यतया प्रभावित करता है?

(a) मस्तिष्क
(b) दाँत
(c) हृदय
(d) गुर्दा

Q12. भोपाल गैस दुर्घटना के दौरान रिसी गैस थी-

(a) इथाइल आइसोथायोसाइनेट
(b) सोडियम आइसोथयोसाइनेट
(c) पोटैसियम आइसोपायोसाइनेट
(d) मिथाइल आइसोसाइनेट

Q13. वनस्पति अपशिष्ट नष्ट करने का सर्वोत्तम मार्ग है-

(a) जलाना
(b) कम्पोस्टिंग
(c) एक जल निकाय में निक्षेपित करना

(d) विशेष कंटेनर में पूर्ण रूप में जलाना

Q14. निम्नांकित में से कौन सा एक प्रमुख प्रदूषक है जो अम्ल वर्षा को उत्पन्न करता है

(a) कार्बन डाइऑक्साइड

(b) सल्फर डाइऑक्साइड

(c) हाइड्रोजन पेराक्साइड

(d) कार्बन मोनोऑक्साइड

Q15. उच्च अक्षांशीय स्तरों में प्रदूषकों के संकेन्द्रण में वृद्धि जानी जाती है–

(a) बायोमैगनीफिकेशन के रूप में

(b) जैवनिम्नीकरण के रूप मे

(c) यूट्रोफिकेशन के रूप में

(d) पुर्नवक्रण

Q16. शुद्ध व सुरक्षित जल को प्राप्त करने का सर्वोत्तम घरेलू तरीका है–

(a) फिल्ट्रेशन

(b) उबालना

(c) रासायनिक उपचार

(d) किसी कंटेनर में रखना

Q17. वन्य जीवन (संरक्षण) अधिनियम, 1972 से संबंधित निम्नां. .कित कथनों पर विचार करें–

1. भारत सरकार ने इस देश के वन्य जीवन के प्रभावी ढंग से संरक्षण और वन्य जीवन और इसके व्युत्पन्नों में शिकार, तश्करी और अवैध व्यापार के नियंत्रण के उद्देश्य के साथ वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 को अधिनियमित किया था।

2. इस अधिनियम में जनवरी 2003 में संशोधन किया गया और अधिनियम के अंतर्गत अपराधों के लिए सजा व जुर्माना को अधिक कठोर बनाया गया।

3. पर्यावरण और वन मंत्रालय ने अधिक कठोर उपायों को लाने के जरिये अधिनियम को मजबूती देने के लिए आगे के संशोधनों (वन्य जीवन संरक्षण संशोधन विधेयक, 2010) हेतु प्रस्ताव किया है।

4. वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम, 2010 का उद्देश्य सूचीबद्ध संकटापन्न जन्तु व वनस्पति तथा पारिस्थितिकीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण संरक्षित क्षेत्रों को सुरक्षा उपलब्ध कराना है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1

(b) 1 और 2

(c) 3 और 4

(d) 1, 2, 3 और 4

Q18. एक मरणासन्न प्रजाति है:

(a) एक स्थल में अद्वितीय ढंग से पायी जाने वाली प्रजातियाँ

(b) एक महामारी की बीमारी को ले आने वाली प्रजातियाँ

(c) अपने किसी भी प्रारंभिक अवस्था वाले उद्विकास पर एक प्रजातियाँ

(d) एक वनस्पतिशास्त्री की गलतियाँ

Q19. सीवेज के साथ जल की अशुद्धता शिस्टों से प्रदर्शित होती है–

(a) इसचेरविआ

(b) इसचेरविआ कोली

(c) स्यूडोमोनास

(d) लीसमेनिया

Q20. राष्ट्रीय पर्यावरण प्राधिकरण के संदर्भ में निम्नांकित कथनों पर विचार करें–

1. 1999 में केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय पर्यावरण प्राधिकरण (राष्ट्रीय पर्यावरण प्राधिकरण अधिनियम, 1999 के माध्यम से) का गठन किया।

2. राष्ट्रीय पर्यावरण प्राधिकरण को जोखिम भरे पदार्थों के रखरखाव से उत्पन्न दुर्घटनाओं से हुई क्षतियों के लिए कठोर दायित्व उपलब्ध कराने हेतु गठित किया गया था।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 न ही 2

उत्तर

1.	(a)	13.	(b)
2.	(a)	14.	(b)
3.	(d)	15.	(b)
4.	(a)	16.	(b)
5.	(b)	17.	(d)
6.	(b)	18.	(a)
7.	(b)	19.	(b)
8.	(c)	20.	(b)
9.	(c)		
10.	(b)		
11.	(b)		
12.	(d)		

समसामायिक आधारित बहुविकल्पी प्रश्न

Q1. राष्ट्रीय जलमार्ग (NW) के संदर्भ में, निम्नलिखित जोड़े पर विचार करें:

राष्ट्रीय जलमार्ग	: नदी प्रणाली
1. NW–1	: गंगा-भागीरथी-हुगली
2. NW –2	: ब्रह्मपुत्र
3. NW–3	: कृष्णा और गोदावरी
4. NW–4	: पश्चिमी तट नहर, चम्पाकारा नहर, और उद्योगमंडल नहर

ऊपर दिए गए युग्मों में से कौन सा/से सही मिलान किया गया है/हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 1,2 और 4
c) 1, 2, 3 और 4
d) 1, 3 और 4

उत्तर- a

Q2. यूक्रेन से भारतीय नागरिकों को वापस लाने के लिए कौन सा ऑपरेशन लॉन्च किया गया ?

a) ऑपरेशन सेफ होमकमिंग
b) ऑपरेशन गंगा
c) ऑपरेशन संकट मोचन
d) ऑपरेशन राहत

उत्तर- b

Q3. अंतर्राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा सूचकांक में भारत को कौन सा स्थान प्राप्त हुआ ?

a) 42 b) 40
c) 43 d) 44

उत्तर- c

Q4. हाल ही में हुए अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी विश्व कप में भारत को पहला स्वर्ण पदक किसने दिलाया ?

a) सौरभ चौधरी
b) जीतू राय
c) गगन नारंग
d) विजय कुमार

उत्तर- a

Q5. कृषि विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय कोष, आई.एफ.ए.डी के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. आईएफएडी एक अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान है और यह संयुक्त राष्ट्र से संबंधित नहीं है।

2. यह 1977 में बनाया गया था, जो 1974 के विश्व खाद्य सम्मेलन का परिणाम है।

3. विश्व व्यापार संगठन के साथ अपने विवाद के कारण, भारत ने आई.एफ.ए.डी की सदस्यता का त्याग कर दिया है।

असत्य कथनों का चयन कीजिये :

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) सब सही हैं।

उत्तर- c

Q6. हंगरी फॉर कार्गो पहल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह विश्व बैंक और भारतीय रेलवे की एक संयुक्त पहल है जिसके तहत विश्व बैंक भारतीय रेलवे को 50:50 की हिस्सेदारी के साथ धन प्रदान करेगा।

2. इसका उद्देश्य नई वस्तुओं को लाकर, मौजूदा और नए क्षेत्रों में नए कार्गो अवसरों की पहचान करना है।

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिये।

a) केवल 1 b) केवल 2
c) 1 और 2 दोनों d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर- b

Q7. आचार्य जे.बी. कृपलानी के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. साल 1934-46 के दौरान आचार्य कृपलानी कांग्रेस के महासचिव रहे।

2. 'माई टाइम्स' (My Times) के शीर्षक से इनकी आत्मकथा प्रकाशित हुई।

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिये।

a) केवल 1 b) केवल 2
c) 1 और 2 दोनों d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर- c

Q8. हाल ही में भूमि अभिलेखों को डिजिटाइज करने के उद्देश्य से किस राज्य ने दिशांक एप्लीकेशन की शुरुआत की ?

a) कर्णाटक
b) असम
c) तमिलनाडु
d) उत्तर प्रदेश

उत्तर- a

Q9. भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा हाल ही में टचलेस टच सेंसर प्रौद्योगिकी का विकास किस बीमारी को रोकने में कारगर हो सकता है ?

a) अल्जाइमर

b) मंकी फीवर

c) कोरोनावायरस

d) इनमें से कोई नही

उत्तर- **c**

Q10. **Farming-as-a&service** के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. **FaaS** वैश्विक खाद्य की कमी की समस्याओं को हल करने के लिए टिकाऊ खाद्य उत्पादन में वृद्धि करने का वादा करता है।

2. **FaaS** मॉडल सभी पार्टियों, यानी, किसानों, कृषि उपकरण निर्माताओं, सहकारी और सरकार को एक ही मंच पर लाते हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

a) केवल 1

b) केवल 2

c) 1 और 2 दोनों

d) इनमें से कोई भी नहीं

उत्तर- **c**

Q11. **GOES-T** नाम का अगली पीढ़ी का मौसम उपग्रह किसने लॉन्च किया ?

a) नासा

b) इसरो

c) स्पेस-एक्स

d) .रोस्कोस्मोस

उत्तर- **a**

Q12. हाल ही में Satish Dhawan Centre For Space Sciences का उद्घाटन निम्नलिखित में से कहां पर हुआ है ?

a) तेलंगाना

b) भुवनेश्वर

c) जम्मू कश्मीर

d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- **c**

Q13. "नेशनल इनिशिएटिव फॉर डेवलपिंग एंड हार्नेसिंग इनोवेशन (निधि)" पहल का उद्देश्य है :

a) 'आत्मानिर्भर भारत पहल' के एक भाग के रूप में रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मानिर्भरता को बढ़ावा देना

b) सफल स्टार्टअप में विचारों और नवाचारों (ज्ञान-आधारित और प्रौद्योगिकी-संचालित) का पोषण करना।

c) संयुक्त उद्यमों में नई अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए विदेशी सहयोग को प्रोत्साहित करना।

d) पाठ्यक्रम में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों को सशक्त बनाना।

उत्तर- **b**

Q14. हाल ही में कभी-कभी समाचारों में उल्लिखित 'मालेगाम समिति' किससे संबंधित है?

a) डिजिटल उधार

b) सूक्ष्म वित्त

c) साइबर सुरक्षा

d) राजकोषीय घाटा

उत्तर- **b**

Q15. निम्नलिखित में से कौन समय-समय पर 'वैश्विक आर्थिक संभावना' रिपोर्ट जारी करता है?

a) एशियाई विकास बैंक

b) खाद्य और कृषि संगठन

c) विश्व आर्थिक मंच

d) विश्व बैंक

उत्तर- **c**

Q16. सड़क पर रहने वाले जानवरों के लिए भारत की पहली मोबाइल एम्बुलेंस कहाँ शुरू हुई ?

a) लखनऊ

b) दिल्ली

c) हैदराबाद

d) चेन्नई

उत्तर- **d**

Q17. राष्ट्रीय भूमि मुद्रीकरण निगम (एनएलएमसी) किस मंत्रालय के अंतर्गत आता है?

a) वित्त मंत्रालय

b) श्रम मंत्रालय

c) वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

d) कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय

उत्तर- a

Q18. कच्चे तेल का सर्वाधिक उत्पादन करने वाला देश कौन सा है?

a) सऊदी अरब

b) रूस

c) चीन

d) यूएसए

उत्तर-**d**

Paper IV केस स्टडी

आप आगरा के जिलाधिकारी हैं। पिछले कुछ सप्ताह में आपको विभिन्न पेट्रोल-पंपों में अनियमितताओं से संबंधित कई शिकायतें मिली हैं। जांच के दौरान आपको पता चलता है कि कई पेट्रोल पंप के मालिकों ने पेट्रोल मापने वाली मशीन में एक इंटीग्रेटेड चिप लगा दी है। इस चिप के कारण मशीन हर बार 5 प्रतिशत पेट्रोल कम भरती है, जबकि मीटर पूर्ण मात्रा दर्शाता है.

आपने शीघ्र ही ईमानदार अधिकारियों का एक दल बना करके, उन्हें औचक छापा मारने, दोषियों को गिरफ्तार करने और चिप वाली मशीनों को जब्त करने के लिए निर्देश दे दिये.

जनता ने भी आपके प्रयासों की प्रशंसा की, पर जब उन्हें पेट्रोल के लिए लम्बी कतारो में लगना पड़ा तो उनका उत्साह भंग हो गया।

शीघ्र ही पेट्रोल पंप मालिकों ने औचक छापों का विरोध करने के लिए एक संयुक्त मोर्चे का गठन कर लिया। उन्होंने पूर्ण हड़ताल की धमकी जारी कर दी। इससे जनता भी डर गई। पेट्रोल-पंप मालिकों के समर्थन में नेता भी आप पर दबाव डाल रहे हैं.

इस स्थिति से निपटने के विकल्पों में कुछ निम्नलिखित हो सकते है.

(a) पेट्रोल पंपों पर छापों की कार्यवाही रोक देंगे.

(b) विभिन्न तेल कंपनियों से सहयोग मांगेंगे.

(c) अपने अच्च अधिकारियों को स्थिति से अवगत कराएंगे, उनसे निर्देश मांगेगे और उसी अनुसार कार्य करेंगे.

-सभी विकल्पों का मूल्यांकन कीजिए और कारणों के साथ सबसे अच्छा सम्भव विकल्प सुझाइए.

उत्तर:

दिए गए मामला अध्ययन में मैं आगरा का जिलाधिकारी हूं जहां मुझे पेट्रोल-पंप मालिकों द्वारा किए जा रहे कदाचार को नियंत्रित करना है। इस मामले में ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, जिम्मेदारी, जनसेवा के लिए समर्पण एवं न्याय जैसे : मूल्य निहित हैं.

विकल्प :

(a) **गुण :** इससे संघर्ष समाप्त हो जाएगा। जनता को राहत मिलेगी. पेट्रोल-पंप मालिक मुझे परस्कृत कर सकते हैं.

दोष : इससे पेट्रोल-पंप मालिक और ज्यादा धोखधड़ी करने के लिए
प्रोत्साहित होंगे। मीडिया मेरी निंदा करेगी. न्यायालय भी स्पष्टीकरण माग सकता है.

(b) **गुण :** इससे मुझे सहायता मिलेगी। तेल कंपनियां तकनीकी सहायता दे सकती हैं. इससे पेट्रोल-पंप मालिकों पर सहयोग करने के लिए दबाव बढ़ेगा.

दोष : तेल कंपनियों के कुछ कर्मचारी इस भ्रष्टाचार में शामिल हो सकते है। इससे हमारी रणनीति की गोपनीयता प्रभावित हो सकती है.

(c) **गुण :** उच्च अधिकारियों को सूचित करना अच्छा कदम है. जरूरत पड़ने पर वो आवश्यक सहायता उपलब्ध करा सकते हैं. कोई अन्य व्यक्ति उन्हें गलत सूचना देकर भ्रमित नहीं कर पाएगा.

दोष : मुझे अपने कार्य का ज्ञान है, अत: उच्च-अधिकारियों से निर्देश मांगने एवं उन्हें परेशान करने का की आवश्यक्ता नहीं है. यदि उच्च अधिकारी स्वत: निर्देश देते हैं तो इसके गुणों के आधार पर पालन करूंगा।

मेरी कार्यवाही :

मैं तुरंत 'आवश्यक सेवा अनुरक्षण कानून' (ESMA) लागू कर दूंगा और पेट्रोल-पंप मालिकों को हड़ताल न करने की चेतावनी दूँगा। तत्पश्चात मैं पेट्रोल पंप मालिकों के साथ एक मीटिंग आयोजित करूंगा, उन्हें संबंधित कानूनों की जानकारी दूँगा और निरीक्षण के दौरान सहयोग करने के लिए निर्देश दूँगा. इसके उपरान्त मैं तेल कंपनियों के प्रबंधन से बात करके उन्हें जब्त की गई मशीनों को शीघ्र विस्थापित करने के लिए सहमत करूंगा जिससे जनता को परेशानी न हो। तत्पश्चात में उच्च अधिकारियों से मिलकर उन्हें स्थिति से अवगत कराऊंगा और आश्वस्त करूंगा. सार्वजनिक पेट्रोल-पंपों का 24 घंटे संचालन सुनिश्चित करूंगा। पेट्रोल-पंप निरीक्षण के लिए अतिरिक्त दलों का गठन करके उन्हें सुरक्षा प्रदान करूंगा और जनता को सहयोग के लिए उत्साहित करूंगा। मैं इस निरीक्षण प्रक्रिया को व्यक्तिगत रूप से निर्देशित करूंगा। एक सप्ताह के अंदर सभी पेट्रोल पंप का निरीक्षण पूर्ण करके, दोषयुक्त पेट्रोल पंप के संचालन के लिए जिम्मेदार कर्मचारियों/मालिकों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करके सामान्य स्थिति बहाल कर दूंगा.

व्यक्ति विशेष : आचार्य जे. बी. कृपलानी

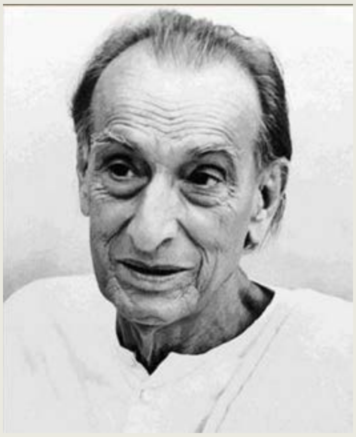

भारत की आजादी की लड़ाई में कई महान स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनमें से कुछ ने गांधी जी के अहिंसा वाला रास्ता अपनाया तो कुछ ने भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों वाला रास्ता अपनाया। गांधीजी के अहिंसक रास्ते को अपनाने वाले स्वतंत्रता सेनानियों में आचार्य जे.बी. कृपलानी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। हालांकि कुछ मुद्दों पर यह गांधीजी से अलग राय भी रखते थे।

आचार्य जे.बी. कृपलानी एक स्वतंत्रता सेनानी, भारतीय राजनीतिज्ञ और शिक्षाविद् थे। इनका पूरा नाम जीवतराम भगवानदास कृपलानी था। इनका जन्म 11 नवम्बर 1888 को सिंध के हैदराबाद यानी मौजूदा पाकिस्तान में हुआ था। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद वे मुजफ्फरपुर में प्रोफेसर के रूप में नियुक्त हुए। स्वतंत्रता आंदोलन में पूरी तरह से शामिल होने से पहले 1912 से 1927 तक इन्होंने कई शिक्षण संस्थानों में अध्यापन कार्य किया। इस दौरान इन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और गुजरात विद्यापीठ में भी पढ़ाने का काम किया था।

शिक्षण कार्य के दौरान ही इनकी मुलाकात महात्मा गांधी से हुई और शिक्षक होने के नाते इसी दौरान इन्हें 'आचार्य' उपनाम प्राप्त हुआ। गांधीजी से प्रभावित होकर धीरे-धीरे इनका झुकाव स्वतंत्रता संग्राम की तरफ होने लगा। वे असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के हिस्सा रहे थे। गौरतलब है कि इन्होंने चंपारण सत्याग्रह में गांधीजी के निकट सहयोगी के रूप में काम किया था। गांधी जी के आश्रम में ही आचार्य जे.बी. कृपलानी की मुलाकात सुचेता कृपलानी से हुई और 1936 में दोनों परिणय सूत्र में बंध गए। बता दें कि यही सुचेता आगे चलकर भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री बनी थीं।

साल 1934-46 के दौरान आचार्य कृपलानी कांग्रेस के महासचिव रहे। साल 1946-47 में ये कांग्रेस के 57वें अध्यक्ष बने, लेकिन नीतिगत मतभेद होने के कारण नवंबर 1947 में इस्तीफा दे दिया। साल 1950 में ये एक बार फिर से कांग्रेस अध्यक्ष का चुनाव लड़े, लेकिन हार गए। 1950 में ही आचार्य जे.बी. ने 'विजिल' पत्रिका का संपादन प्रारंभ किया। गौरतलब है कि इन्होंने भारत की अंतरिम सरकार (1946-1947) और भारत की संविधान सभा में भी योगदान दिया था।

आजादी के बाद इन्होंने कॉन्ग्रेस छोड़ दिया और एक 'किसान मजदूर प्रजा पार्टी' की स्थापना की, लेकिन कुछ समय बाद ही समाजवादी पार्टी में शामिल होते हुए उन्होंने एक दूसरी नयी पार्टी बनाई जिसका नाम 'प्रजा समाजवादी पार्टी' रखा गया। इसे पार्टी से वे चार बार लोकसभा सदस्य रहे और इसी दौरान भारत-चीन युद्ध के बाद इन्होंने पहली बार 1963 में सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पेश किया। वे नेहरू की नीतियों और इंदिरा गांधी के शासन के आलोचक थे। जब 1971 के लोकसभा चुनाव में वे हार गए तो उन्होंने राजनीति छोड़ अध्यात्म और पर्यावरण संरक्षण की ओर रुख कर लिया। कृपलानी जी विनोबा भावे के साथ 1970 के दशक में पर्यावरण के संरक्षण एवं बचाव गतिविधियों में शामिल थे। गौरतलब है कि इन्होंने इंदिरा गांधी द्वारा घोषित आपातकाल की कड़ी आलोचना की थी, जिसके बाद इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। 19 मार्च 1982 को साबरमती आश्रम में आचार्य कृपलानी का निधन हो गया। उनकी मृत्यु के बाद साल 2004 में 'माई टाइम्स' (**My Times**) के शीर्षक से इनकी आत्मकथा प्रकाशित हुई थी।

NOTES

मध्यकालीन इतिहास की प्रमुख शब्दावलियां

अंसार :- इसका शाब्दिक अर्थ होता है मददगार

अखुर बेक :- घोड़ों की देखभाल करने वाला

अल्तमगा-ए- सुल्तानी :- शाही तमगा या प्रतीक चिन्ह

अल्प खान :- एक किताब या पदवी जिसका अर्थ है पहला या वरिष्ठ खान

अमीर :- दिल्ली सल्तनत का तीसरा सबसे बड़ा राजकीय पद

अमीर-ए-दाद :- न्याय विभाग का प्रभारी अधिकारी और सरकारी अभियोजक

अमीर-ए-आखुर :- अश्वसेना का सेनानायक एवं शाही अस्तबल का प्रभारी अधिकारी

अमीर-ए-हाजिब :- शाही न्यायालय का प्रभारी अधिकारी, जिसे तुर्कों में बारबेक भी कहा जाता था

अमीर-ए-कोही :- कृषि विभाग का प्रभारी अधिकारी

अमीर-ए-तरब :- शाही मनोरंजन व्यवस्था का शाही अधिकारी

अमीर-ए-मुमिनिन/मोमिन :- मुसलमानों का कमांडर या खलीफा

असालिब :- कानून को क्रियान्वित करने वाला

आरिज :- सैनिकों की हाजिरी, उनके सैनिक उपकरणों तथा घोड़ों के साज सामान का प्रभारी अधिकारी

आमिल :- राजस्व अधिकारी

आरिज-ए-ममालिक :- समूचे देश की सेना या सैनिक मंत्रालय का प्रभारी

इहतिसाब :- गणना, संगणना और हिसाब किताब का लेखा जोखा

इल्म-ए-मुहासिब वा हिन्दुस :- लेखा और अंकों का ज्ञान

इक्ता-ए-इस्तिग्ल :- छोटी अवधि के लिए गवर्नर पद पर नियुक्त या राज्याध्यक्ष सदिच्छा पर गवर्नर के पद पर नियुक्त। आमतौर पर यह संबोधन प्रांतीय आकर की इक्ता धारकों के लिए प्रयोग होता था।

इक्ता-ए-तमलिक :- वंशानुगत इक्ता

इरादस :- एक प्रकार का छोटा बालिस्त या पत्थर का प्रक्षेपास्त्र फेंकने वाला यंत्र

इशरफ :- कुलीन समाज

उलेमा :- इस्लामी कानून के ज्ञाता

उलूलअम्र :- संचालन करने वाला व्यक्ति

उमरा :- अमीर का बहुवचन

उम्माल :- राजस्व या वित्त अधिकारी

उस्र :- उपज का दसवां हिस्सा जो लगान के रूप मरीं वसूल किया जाता था

ऊसर :- बंजर भूमि

कदा-खुदा :- ग्राम प्रधान

कहम :- कहार, पालकी उठाने वाला या उसके वंश के लोग

कादरिन :- किसी कार्य विशेष का प्रभारी कर्मचारी या अधिकारी

कारखाना :- कारखाना, शाही कारखाने जो दो श्रेणियों में बँटे थे-रातबी अर्थात् पशुओं की देखभाल करने वाले कारखाने और गैर-रातबी अर्थात् राज्य की जरूरत की विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन करने वाले कारखाने।

कारकुन :- कामगार या अधिकारी (कार्यकर्ता)।

कार-ए-दौलत- सल्तनत के मामले या कामकाज

करोह :- दो मील दूरी की भूमि का माप

कोटला :- आवासीय किला।

कोतवाल :- किसी शहर या किले का प्रभारी अधिकारी।

कोतवाली :- कोतवाल का दफ्तर

ध्येयIAS® most trusted since 2003

DHYEYA IAS® most trusted since 2003

ANNUAL SUBSCRIPTION OF PERFECT 7 CURRENT AFFAIRS MAGAZINE (FORTNIGHTLY)

About Perfect 7:

The role of Current Affairs in Civil Services has tremendously increased, in all the subjects of General Studies like Economy, Polity, Science and Technology, International Relations, Environment, etc.

Need: Knowledge of Current Affairs

Inadequate Solution: Monthly Magazines available in the Market.

Why Inadequate?

- All magazines are monthly: This means that you get to know about the event after more than one month and students are unable to match the pace with newspaper and other media.
- Not suitable for Civil Services: Events are not analyzed as these magazines also cater to the one day exams and hence they provide only factual information's.
- Too much to read in one go: A student is suddenly burdened to cover too many events in a short time which leads to stress.

Solution to all the above three issues is PERFECT 7 Magazine by Dhyeya IAS.

- Released Fortnightly: A student is abreast with the current events of the month, near real time.
- Detailed Analysis of every event: Civil Services demands a deeper understanding of events, concepts and its analyses and not just know the event and its date.
- Easy to study: Since the magazine is fortnightly, a student is saved from Information overload and can relate with the newspaper, TV and other media coverages with a profound understanding of the current happenings.

Features of PERFECT 7

Important conditions for an IAS/PCS centered magazine		PERFECT 7	OTHERS
• Fortnightly	Hindi	✓	×
	English	✓	×
• Civil Services Exam centered	Hindi	✓	*
	English	✓	*
• Micro-Analysis of current issues & not a mere compilation of facts	Hindi	✓	*
	English	✓	*
• Brain boosters for important issues	Hindi	✓	×
	English	✓	×
• Multiple choice questions & their solution based on brain boosters	Hindi	✓	×
	English	✓	×
• Case studies with model answers for Ethics	Hindi	✓	×
	English	✓	×
• Explanation of important theories through pictures & graphics.	Hindi	✓	×
	English	✓	×

(* some institutes)

Annual Subscription Fee along with Courier Charges:

Cost of the Magazine:	40 x 24 = Rs 960
Price After 25% Discount	Rs 720
Courier Charges:	30 X 24 = Rs. 720
Total Charges:	**Rs 1440**

Annual Subscription Fee for Student Collecting Magazine form Mukherjee Nagar Centre:

Cost of the Magazine:	40 x 24 = Rs 960
Price After 25% Discount	Rs 720
Total Charges:	**Rs 720**

BANK ACCOUNT DETAILS

Account Holder:-	**Trueword Publication Private Limited**
Bank A/C -	**50200032675602**
IFSC:-	**HDFC0000609**

Terms and Condition:

1. Fee submitted one will not be refunded or adjusted in any condition.
2. Dhyeya IAS ensures no damage or delay during transit however some unavoidable circumstances are beyond our control. responsibility for the delay in delivery,
3. W put best efforts to make the Magazine reach to the subscribers by 10th & 25th of every month.
4. If due to COVID-19 Pandemic or any unforeseen natural disaster or by an act of God, Dhyeya IAS is not able to print the Magazine then the duration of subscription will be increased to compensate for the same.

Click Here for WhatsApp

dhyeyaias.com

AN INTRODUCTION

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

DhyeyaIAS, one and half decade old institution, was founded by Mr.Vinay Singh and Mr. Q. H. Khan. Ever since its emergence it has unparallel track record of success. Today, it stands tall among the reputed institutes providing coaching for Civil Services Examination (CSE). The institute has been very successful in making potential aspirants realize their dreams which is evident from the success stories of the previous years.

As the nation progresses, the young generations become more conscious and aware about their career options. There is plethora of jobs and one among them is civil services, the most prestigious service in the country, which needs no introduction. It attracts many young minds hailing from almost all spectra of academic disciplines. The popular belief that the examination for this service is only meant for the brilliant lots has become a taboo as it also attracts the hardworking, sincere and disciplined minds. The saying- "In the end passion and hard work can substitute natural talent" holds true. It gives immense power and opportunity for young folks to bring about the positive changes in the society which would bring harmony and development. It inculcates values, moral, ethos and feeling of national integrity.

Quite a large number of students desirous of building a career for themselves are absolutely less equipped for the fairly tough competitive tests they have to appear in. Several others, who have a brilliant academic career, do not know that competitive exams are vastly different from academic examination and call for a systematic and scientifically planned guidance by a team of experts. Here one single move may invariably put one ahead of many others who lag behind. Dhyeya IAS is manned with qualified & experienced faculties besides especially designed study material that helps the students in achieving the desired goal.

Civil Services Exam requires knowledge base of specified subjects. These subjects though taught in schools and colleges are not necessarily oriented towards the exam approach. Classes at Dhyeya IAS are different from classes conducted in schools and colleges with respect to their orientation. Classes are targeted towards the particular exam. Classroom guidance at Dhyeya IAS is about improving the individuals' capacity to focus, learn and innovate as we are comfortably aware of the fact that you can't teach a person anything, you can only help him find it within himself.

We feel that despite brilliance and diligence, most of the students are lacking proper guidance and aptitude needed to clear Civil Services Examination. This is why, we at Dhyeya IAS amalgamated the traditional as well as modern approach of teaching by incorporating best educators of the industry ably supported by Academic Associates, Class Notes and printed Study Material, routine as well as surprise Tests. Due to its arduous efforts, Dhyeya IAS is able to carve a niche among all the civil services coaching institutes in India. Access to an institution is as important as the quality of Institution. Our faith in this philosophy made us grow. With 12 Face to Face Centers located in different parts in India, Distance Learning Program , Live Streaming Centers and Residential Academy, we have made truly pan India presence. Ever since the foundation the institute has produced a heavy pool of bureaucrats both at central and state level. Dhyeya IAS not only aims at imparting the content of civil services in best way but also nurturing the aspirants as leaders of tomorrow who have a responsibility of fulfilling the dreams of around 1.4 billion Indians. Dhyeya IAS has guided over 50,000 aspirants with more than 4000 selections in civil services. Our journey is a small contribution for the development of the society and nation by nurturing the potential civil services aspirants.

Considering the toughness of Civil Services Exam, where success rate is a meager 0.1 percent, Dhyeya IAS has continuously produced phenomenal results over the years. Year after Year Dhyeya IAS is being recognized for imparting guidance to civil services aspirants using benchmarked quality practices. On the basis of scalability, innovation, achievements, impact potential our efforts and contribution have been acknowledged and rewarded with Education Excellence Awards by ET NOW, Brands Academy, Times of India, etc. This has enhanced motivation, pride and self-esteem of entire Dhyeya family.

₹ 40

dhyeyaias.com

Face to Face Centres

North Delhi : A 12, 13, Ansal Building, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi - 110009, Ph: 9205274741/42/44 | **Laxmi Nagar :** 1/53, 2nd floor, Lalita Park, Near Gurudwara, Opposite Pillar no.23, Laxmi Nagar, Delhi -110092, Ph: 9205212500/9205962002 | **Greater Noida :** 4th Floor Veera Tower, Alpha 1 Commercial Belt., Greater Noida, UP - 201310, Ph: 9205336037/38 | **Prayagraj :** II & III Floor, Shri Ram Tower, 17C, Sardar Patel Marg, Civil Lines, Prayagraj, UP - 211001, Ph: 0532-2260189/8853467068 | **Lucknow (Aliganj) :** A-12, Sector-J, Aliganj, Lucknow, UP- 226024, Ph: 0522-4025825/9506256789 | **Lucknow (Gomti Nagar) :** CP-1, Jeewan Plaza, Viram Khand-5, Near Husariya Chauraha, Gomti Nagar, Lucknow , UP - 226010, Ph: 7234000501/ 7234000502 | **Kanpur :** 113/154 Swaroop Nagar, Near HDFC Bank, Kanpur, UP - 208002, Ph: 7887003962/7897003962 | **Gorakhpur :** Narain Tower, 2nd floor, Gandhi Gali, Golghar, Gorakhpur, Uttar Pradesh 273001, Ph: 7080847474 | **Bhubaneswar :** OEU Tower, Third Floor, KIIT Road, Patia, Bhubaneswar, Odisha - 751024, Ph: 9818244644/7656949029

Dhyeya IAS Now on Telegram

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.com/hindi

ध्येयIAS
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 9205274741, 9205274742, 9205274744

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter
(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्स्क्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारेईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |**

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से Subscribe करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

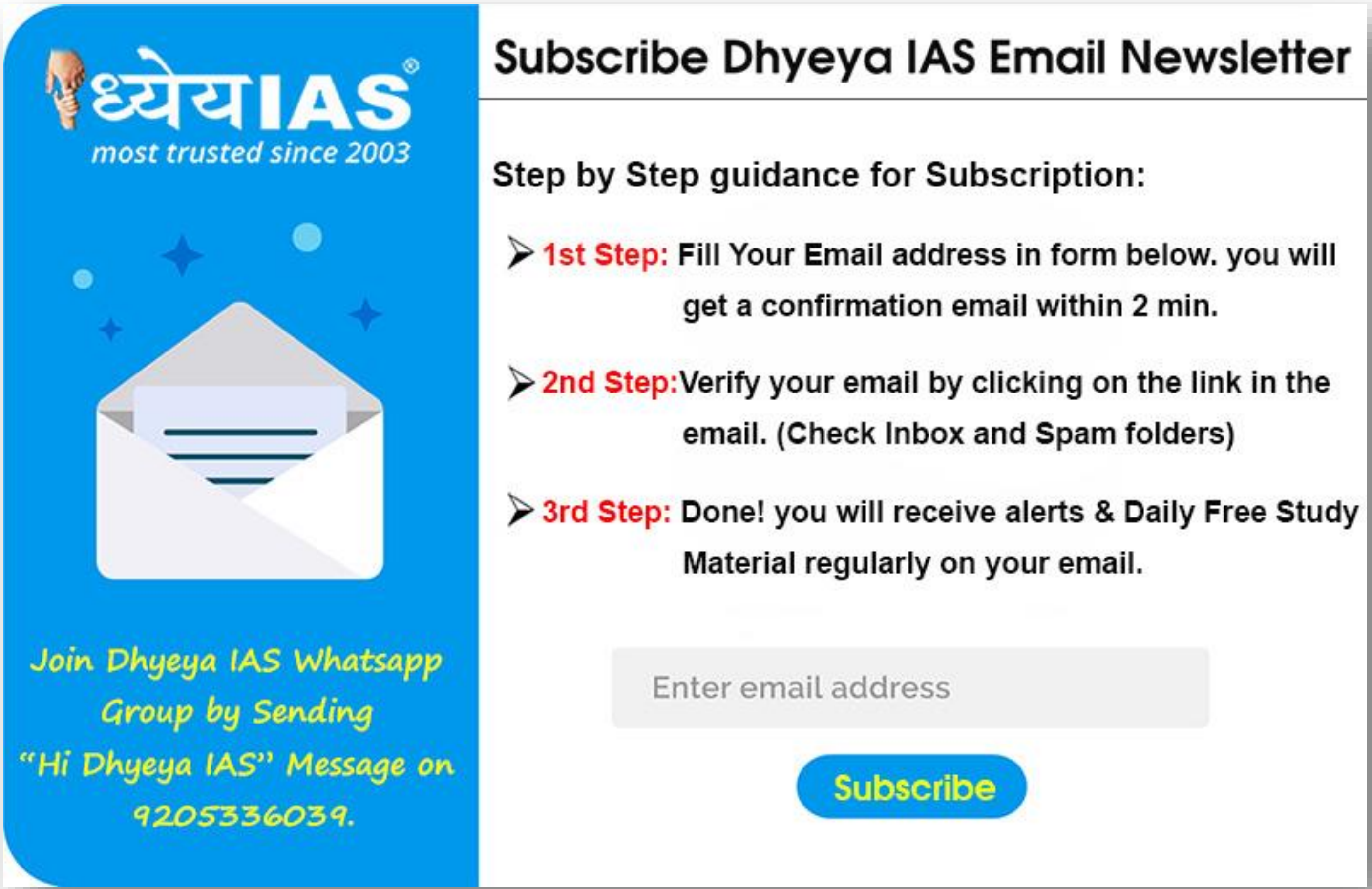

ध्येयIAS®
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 9205274741, 9205274742, 9205274744